Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

18th April 2017

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान द्वारा

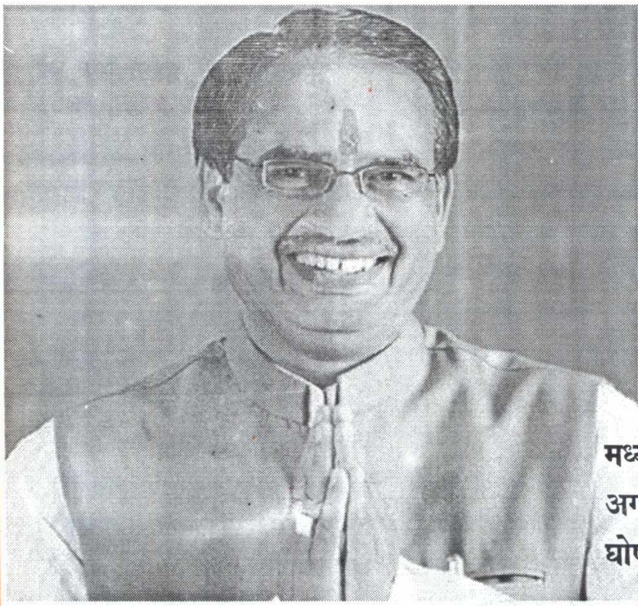

पूर्ण शराब बंदी की घोषणा का आर्य समाज स्वागत करता है

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह जी चौहान द्वारा अगले साल तक विभिन्न चरणों में पूर्ण शराब बंदी की घोषणा का आर्य समाज स्वागत करता है ।

बिहार के मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमारजी द्वारा दहेज के खिलाफ सख्ती से पेश आने का भी आर्य समाज स्वागत करता है

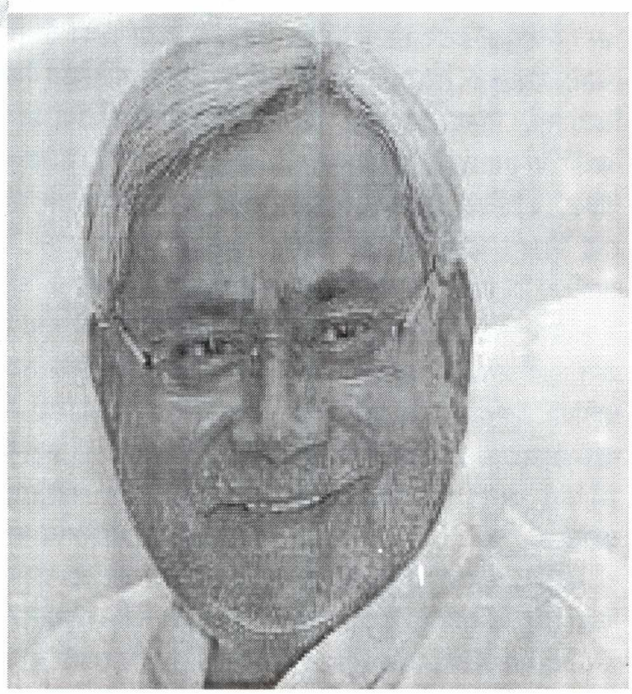

महर्षि दयानन्द जी और अन्य मत-मतान्तर

-कामता प्रसाद मिश्र

वेदोद्धारक, युगदृष्टा तथा महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक कुरीतियों, बुराइयों तथा विकृतियों से जूझ रहा था । समाज में अंधविश्वास, छुआछूत, ऊँच नीच के भेदभाव, अशिक्षा, अज्ञानता जैसी बुराइयाँ समाज को खोखला बना रही तीं । वहीं धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, आडम्बर, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, चेला चेली मूड़ना, मठों की स्थापना कर असत्य को सत्य, अज्ञान को ज्ञान, अपने को ईश्वर का अवतार बताना, तो कुछ लोग ईश्वर का भेजा दूत अपने को सिद्ध करने में लगे हुए थे । दसरी ओर भारत अंग्रेजी शासन की क्रूर, निर्मम अत्याचार, अन्याय, उत्पीड़न देशभक्त निर्दोषों को कठोर दण्ड या कारावास देने की घोर पराधीनता का शिकार हो गया था । आर्थिक रूप से भारतीय समाज निर्धतना, गरीबी, मुखमरी तथा विपन्नता का भयंकर असहनीय दुःख भोग रहा था । ऐसे समय में महर्षि दयानन्द जी ने देश की इन समस्याओं को निकट से देखा, भलीभाँति समझा तथा गहन अध्ययन किया । उनकी आत्मा तथा मस्तिष्क को भारी आघात लगा । उन्होंने इन सम्पूर्ण समस्याओं को भारत से समूल नष्ट करने का संकल्प लिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वैदिक सिद्धानतों, मान्यताओं तथा विचारों के आधार पर भारत को एत सम्पन्न, शिक्षित, वैदिक, वैज्ञानिक, एवं शक्तिसम्पन्न स्वस्थ राष्ट्र निर्माण करने का व्रत लिया । वह जानते थे कि भारत वर्ष जब तक पराधीनता के भीषण कुचक्र से मुक्त होकर 'स्वराज्य' प्राप्त नहीं करता तब तक इसका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजैनैतिक उद्धार नहीं हो सकता । महर्षि ने पराधीनता को इसीलिए नरक तथा स्वतंत्रता को स्वर्ग बताया ।

महर्षि दयानन्द जी ने सम्पूर्ण अवैदिक सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा विचारों को भारतीय समाज के लिए अभिशाप बताया । उन्होंने नारा दिया 'वेद की ओर लौटो' तभी सर्वागीण उन्नति सम्भव है । तभी हम ईसाइयों तथा इस्लाम के धर्मांतरण जैसे षड्यंत्र को असफल कर सकेंगे । उन्होंने ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम'' वेद सन्देश को आधार बनाकर विश्व के सम्पूर्ण मानव को श्रेष्ठ, सदाचारी विद्वान तथा मनीषी बनने की प्रेरणा दी । महर्षि महान क्रान्तिकारी विचारक दर्शनिक तथा राष्ट्र भक्त थे इसी कारण उन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति की ज्वाला जलायी जिससे उनके समाज सुधार, धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों से समग्र क्षेत्रों में फैली विकृतियाँ भस्मीभूत होती चली गई । महर्षि ने यह सिद्ध कर दिखाया कि वैदिक धर्म ही सत्य सिद्धान्तों पर आधारित है । वैदिक धर्म ही विश्व का सबसे प्राचीनतम् धर्म है 'इसी से ही अन्य मतमतान्तरों के निर्माताओं ने सत्य विचारों को अपने मत में सम्मिलित किया है । विश्व के इतिहास अवलोकन से ज्ञात होता है कि महाभारत काल तक केवल एक ही धर्म था और वह था 'वैदिक धर्म' ।

महर्षि दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य प्राचीन ऋषियों यास्काचार्य आदि को आधार मान कर वैज्ञानिक एवं युक्ति संगत भाष्य किया । वेद के गौरव को विश्व पटल पर पुनः प्रतिष्ठित किया । वेदों के विषय में फैली भ्राँतियों को समूल नष्ट किया । वेदों को जहाँ पाश्चात्य वेदभाष्यकार गड़रियों का गीत बताते वहीं भारतीय वेद भाष्यकार कर्मकाण्ड और जादू-टोना का ग्रंथ कहते थे । महर्षि ने सभी प्रकार का भ्रमोच्छेदन कर निरुक्त तथा निघन्टु के आधार पर वेद का वैज्ञानिक तथा तर्कपूर्ण भाष्य करके सिद्ध कर दिया कि वेद ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है । उन्होंने घोषणा की कि ए संसार के लोगो यदि तुम अपने जीवन को सुखी और शान्तिमय बनाना चाहते हो तो केवल वेदों को अपनाओ क्योंकि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हैं । अन्य मतमतान्तरों की साम्प्रयादिक पुस्तकें स्वार्थी लोगों ने बनायी हैं वे ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकतीं । आज संसार में जितने भी मतमतान्तर हैं वह महाभारत काल के पश्चात् जन्मे और फैले । विश्व के जानेमाने विद्वानों ने यह स्वीकार कर लिया है कि 'ऋग्वेदादि' ही सबसे प्राचीनतम् ग्रंथ हैं । यह स्वतः है कि वैदिक धर्म तथा वेदज्ञान पृथ्वी पर सृष्टि के आरम्भ से हैं ।

वैदिक धर्म के पश्चात् जो मतमतान्तर पैदा हुए अब हम उनका मुख्य-मुख्य मतों का संक्षेप में, कि कौन मत कब चला किसने चलाया और क्यों चला पर प्रकाश डालते हैं ।

सर्वप्रथम हम 'पारसी मत' को देखते हैं । इस मत को चले लगभग साढ़े चार हजार वर्ष हुए, इस मत के संस्थापक 'श्री जरथुस्त्र' महोदय थे जिन्होंने ''जिन्दावेश्ता'' नामक धर्म ग्रंथ की रचना की ।

महाभारत काल के पश्चात् दूसरा यहूदी मत चला जिसे चले लगभग चार हजार वर्ष हुए 'हजरत इब्राहीम' जिनकी कथा बाइबिल में दी गई है, इस मत के संस्थापक हुए । परन्तु उनकी विचार धाराओं को लेकर 'हजरत मूसा' ने यहूदी मत को विस्तार दिया, 'बाइबिल' की पुरानी पुस्तक ही उनका धर्म ग्रंथ है ।

लगभग ढाई हजार वर्ष हुए बौद्धमत तथा जैनमत चला । इसके संस्थापक क्रमशः महात्मा बुद्ध तथा महावीर स्वामी थे । इस मत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'धम्मपद' तथा जातक नाम से जाने जाते हैं । यह अनीश्वरवादी मत हैं । 'कन्फ्यूशियस' तथा 'ताओ' मत भी इन्हीं मतों के समकालीन हैं ।

लगभग दो हजार वर्ष हुए 'ईसाई मत' का पादुर्भाव हुआ । इस मत के चलाने वाले 'ईशा मसीह' थे । इनका धर्मग्रंथ 'बाइबिल' नाम से प्रसिद्ध है । हजरत ईसामसीह फिलिस्तीन नामक देश में जेरुसलम नगर में उत्पन्न हुए थे । इसीलिए जेरुसलम ईसाइयों का धर्म स्थान या तीर्थ कहा जाता है । ईस्वी सन् जो आज प्चलित है उन्हीं के नाम पर उनके समर्थकों ने चलाया ।

आज से लगभग साढ़े चौदह सौ वर्ष हुए इस्लाम मत की स्थापना हजरत मोहम्मद साहब ने की। उनका जन्म अरब देश में हुआ और अरब में ही इस मत की स्थापना कर अरबी भाषा में ''कुरान शरीफ'' नामक धर्म ग्रंथ की रचना की। जो आज भी इस्लाम मतावलम्बियों का पवित्र दर्मग्रंथ है।

लगभग पाँच सौ वर्ष व्यतीत हुए गुरु नानक देव ने सिक्ख मत की स्थापना की। यह मत यद्यापि वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) के रक्षार्थ स्थापित किया गया क्योंकि हिन्दू धर्म पर चारों तरफ से हमले हो रहे थे परन्तु आज सिक्ख मत भी साम्प्रदायकि मत का रूप धारण कर लिया है। इस मत का 'गुरुग्रंथ साहव' धर्म ग्रंथ वन गया। जिससें कबीर, गुरुनानक, आदि संतों के भजन संग्रहीत हैं।

उपर्युक्त मतों के पश्चात् और भी अनेक मत मतान्तरों का जन्म होता जा रहा है जो अवैदिक विचार धाराओं को अपने स्वार्थ और ख्याति में जन्म देते जा रहे हैं जैसे- पौराणिक मत, ब्रह्मसमाज, प्रार्थना-समाज, राधास्वामी मत, देव समाज, मुनि समाज, हंसामत, ब्रह्मकुमारी मत, गायत्रीपरिवार, आसाराम मत, रामपाल, निर्भल बाबा जैसे आदि-आदि मत मतान्तर कुकुरमुत्ते के समान फैलते जा रहे हैं। इन मतों के चले दो सौ वर्ष के अन्दर ही हुए हैं जो पूर्ण रूपेण वेद विरुद्ध हैं तथा तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। यह समाज में अंधविश्वास, पाखण्ड, आडम्बर तथा अज्ञानता फैला कर मान समाज को अज्ञानता के अंधकार में ढकेल रहे हैं। समाज के लोगों का शोषण करना तथा अँधविश्वास फैलाना ही इनका प्रमुख कार्य है।

वैदिक धर्म सृष्टि के आरम्भ से ही चला आ रहा है। उसे एक अरब छियान्नवे करोड़ आठ लाख तिरपन हजार एक सौ सोलह वर्ष व्यतीत हो गये हैं। वैदिक धर्म इन मतमतान्तरों से सबसे प्राचीन है जो वैज्ञानिक, युक्तिसंगत, बुद्धि संगत तथा मानवता का पूर्ण रूपेण कल्याण करने वाला है। वैदिक धर्म के धर्म ग्रंथ 'वेद' हैं जो ईश्वर की वाणी है, ईश्वर नित्य है उसकी वाणी वेद भी नित्य है। वेद ज्ञान परमेश्वर का आदेश, उपदेश तथा संदेश है, वेद सम्पूर्ण विश्व के मानव के लिए है, उसे सभी को पढ़ने का अधिकार है। वेद ज्ञान ही आज के जीवन और जगत को विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व एवं मानवता की शिक्षा तथा प्रेरणा दे सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने घोषणा की कि ''वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है''। इस सत्य को स्थापित करने के कारण महर्षि सदा-सदा के लिए अमर रहेंगे।

महर्षि की दृष्टि दूरगामी थी। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए 'आर्य समाज' की स्थापना की। कि आर्य समाज संस्था वेद एवं वेदानुकूल सिद्धान्तों तथा मान्यताओं का प्रचार प्रसार करे तथा अवैदिक एवं अवैज्ञानिक सिद्धान्तों, विचारों तथा मान्यताओं को जड़ से अखाड़ फेंके। महर्षि ने सत्यासत्य के बोध कराने के लिए ''सथ्यार्थप्रकाश'' तथा वेदों के यथार्थ स्वरूप को जानने तथा समझने के लिए ''ऋावेदादिभाष्य भूमिका'' ग्रथों की रचना की। जो वेद के गंम्भीर वज्ञानिक एवं दार्शनिक रहस्य उलझे हुए थे उक्त ग्रंथों के अध्ययन से सब का सरलता से समाधान होता है। वेदकाल से जिसे हम भारत कहते हैं इसका नाम एंव पहचान 'आर्यावर्त' नाम से था। यहाँ को निवासी आर्य तथा उनकी भाषा आर्य भाषा थी। जिसे हम देववाणी या गीर्वाणवाणी कहते हैं वह आर्यावर्त की सर्वसाधारण लोगों की भाषा थी।

वैदिक धर्म सब मतमतान्तरों का आदि स्रोत है। जो भी अच्छाइयाँ सब मतमतान्तरों में पाई जाती हैं वे सब वैदिक धर्म से ही गृहीत हैं। पारसी मत में अग्निपूजन, गौभक्ति और पवित्र सूत्र धारण की प्रथा वैदिक धर्म से लिया गया है। यहूदी मत की जो भी अच्छी विचारधाराएं हैं वे वैदिक धर्म की ही हैं। जैनों के अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, संतोष तप और स्वाध्याय ये नौ सिद्धान्त वैदिक धर्म से ही लिए गये हैं। बौद्धों का पंचशील सिद्धान्त वैदिक धर्म की देन है। ईसाई मत के कई सिद्धान्त बौद्धों से लिए गये हैं। इस्लाम का एकेश्वरवाद तो वैदिक धर्म की ही देन है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सभी मत वैदिक धर्म के आंशिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि वैदिक धर्म सृष्टि क्रम के अनुकूल है। यह चमत्कार तथा जगत मिथ्यावाद में विश्वास नहीं करता। वेद सम्पूर्ण मानवमात्र के लिए हैं तथा वेदों में जो शिक्षा दी गई है वह सार्वकालिक, सार्वदेशिक तथा सार्वत्रिक है। वह देश और काल से परे है। वैदिक धर्म समन्वय प्रधान धर्म है समन्वय वहाँ होता है जहाँ अतिवादिता न हो। वैदिक धर्म आस्तिक धर्म है यह ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास रखता है। इसमें ईश्वर की सर्वव्यापकता, सार्वज्ञता, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी और दयालुता सम्बंधी धारणाएँ अन्य मतों से भिन्न हैं। वैदिक धर्म की मान्यता है कि ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग योगाभ्यास है। आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार का कोई अन्य मार्ग नहीं है। यह जीवों को ईश्वर का अंश नहीं स्वीकार करता। महर्षि वैदिक धर्म की मान्यताओं के आधार पर जीवात्मा को कर्म करने में स्वतंतत्र और फलभोग में परतंत्र मानते हैं तथा आत्मा के आवागमन के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं परन्तु अन्य मत आत्मा को नित्य मान कर भी आवागमन को स्वीकार नहीं करते। वैदिक धर्म की मान्यता यह है कि ईश्वरीय आनन्द की प्राप्ति का नाम मोक्ष है। महर्षि ने वेद के आधार पर यह सिद्ध किया है कि जीव मोक्ष के पश्चात् पुनः जन्म को प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर वताया कि परमात्मा, आत्मा तथा प्रकृति तीन अनादि सत्तायें हैं। परमात्मा सृष्टि का रचयिता है वह आत्माओं को कर्म करने के लिए संसार का निर्माण करता है और प्रकृति से सृष्टि भी रचना करता है। इस भाँति महर्षि दयानन्द जी ने समस्त जीवों के कल्याणार्थ वेद विचारों को श्रेष्ठ बताया।

आध्यात्मिक जीवन के तत्त्व

-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

मनुष्य जीवन के एक ऐसे समक्षेत्र पर रहता है। जिस के दो स्तर या दो परदे हैं। यह कोई नई और आश्चर्य की बात नहीं। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि वह भौतिक और आध्यात्मिक जीवन रखता है। वैज्ञानिक लोग एक को विषयश्रित जीवन (Objective) और दूसरे को आन्तरिक जीवन (Subjective) का नाम देते हैं। प्रकृति के सच्चे कवि और धार्मिक पुरुष इस विषय में सहमत हैं कि हे मनुष्य ! तुझ में पशु और देवता दोनों हैं। प्राचीन संस्कृत के वेदान्तियों ने जीवन की इन दो अवस्थाओं का नाम बहिष्करण-जीवन और अन्तःकरण जीवन अर्थात् इन्द्रियों का बाह्य जीवन और बुद्धि का आन्तरिक जीवन रखा है। पर दो प्रकार के जीवन का नियम यहीं तक ही परिमित नहीं। यह एक व्यापक नियम है। इसका उपयोग सारे ब्रह्माण्ड पर होता है। प्रकृति बाह्यजीवन की सत्ता है और परमेश्वर आन्तरिक जीवन का मूल है। परमात्मा, प्रकृति और ध्यान करनेवाली आत्माओं की त्रिमूर्ति के अन्दर सारे विश्व के पदार्थ आ जाते हैं। इस प्रकार सारे संसार में दो प्रकार का जीवन है अर्थात् बाह्य और आन्तरिक।

जीवन के बाह्य पृष्ठ का थोड़ा बहुत सबको ज्ञान है। पर आन्तरिक वा आध्यात्मिक जीवन बहुतों के लिये एक कठिन समस्या है। आन्तरिक जीवन आध्यात्मिक होने के कारण मानो पद्य है, को काल्पनिक विचारों का व्यर्थ प्रकाशही समझा करते हैं। इसीलिए उनकी समझ में प्रकृति और उसके असंख्य नश्वर विशेषण ही अकेले तत्त्व और वास्तविक परमात्मा हैं।

"संसार की शक्तियाँ और माण्डलिक राज्य, बहुत से मनुष्यों को कविता और सनातन नियमों की संगति से पृथक् कर देते हैं। प्रकृति एक प्रबल और शासक परमेश्वर है। हम में से लाखों के लिये जो मनुष्यत्व का दम भरते है वह अन्धकार की रानी है।" प्रकृति मनुष्य के आन्तरिक जीवन के साथ चिमट कर जम जाती है। मनुष्य हिण्डोले से लेकर श्मशान भूमि तक अपनी संकटजनक समुद्र यात्रा में निर्जीव प्रकृति के बोझ को उठाता है। मनुष्यों के प्रकृति के मन्दिर में पूजा करने की आवश्यकता होती है। वे इसे पूर्ण प्रयत्न और आध्यात्मिक चिन्तन का मुख्योपद्देश्य बना लेते हैं। सहस्त्रों लोग प्रकृति की अविरत रीति से पूजा करते हैं। वे इसकी वेदी के सामने प्रणाम करते हैं। उसके आगे बहुत सी भेंट चढ़ाते हैं, और प्रत्येक पदार्थ से जिसके देने की शक्ति मनुष्य में है-वैज्ञानिक कलाओं से, प्रतिभा के कामों से श्रेष्ठ क्षमतों के विकास से, प्रत्येक वस्तु यहां तक कि जीवन से-उसके मन्दिर को ढक देते हैं।

लक्ष्मी प्रकृति की सेविका मात्र है। प्रकृति मन की केवल दासी है और मन आत्मा का नौकर मात्र है। पर इस दुनिया में यह अवस्था है कि आत्मा, मन और प्रकृति तीनों लक्ष्मी के चरण सेवक है। कोई मानुषी आत्मा अपनी भौतिक परिस्थितियों से स्वतन्त्र नहीं है। हमारा जीवन प्रकृति की वास्तविक दासता है। प्रकृति मन का बंदिपाल (जेलर) है। आवश्यकता दारोगा की है जो कैदी को चाबुक मार कर उससे दैनिक काम कराता है।

यह है प्रकृति की आज्ञा जिसके पालन में अर्थात् पदार्थों के देखने, फलों के चखने, सुगन्धियों के सूँघने, अनुभवों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने और शब्दों के सुनने में मन सांसारिक काल का ९।१० भाग व्यय कर देता है। इस प्रकार आत्मा अपने जेल खाने की सलाखदार खिड़कियों में होकर देखता और जीवन व्यतीत करता है।

जब यह अवस्था है तो फिर इन्द्रियों के जीवन में डूबा हुआ मनुष्य आध्यात्मिक जीवन के आन्तरिक तत्त्वों के कैसे जान सकता है ? प्रकृति मृत्यु आत्म ाका जन्म है। प्रकाश और अन्धकार एक साथ नहीं रह सकते।

अन्य देवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्वि च चक्षिरे ॥१॥

यह यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का दसवाँ मंत्र है। इस का अर्थ यह है "इन्द्रियों का जीवन (अविद्या) एक परिणाम पैदा करता हैं और आत्मा का जीवन (विद्या) उसके सर्वथा विपरीत परिणाम पैदा करता है।"

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।

"इन्द्रियों का जीवन आध्यात्मिक मृत्यु है। आत्मा का जीवन नया जन्म अर्थात् अमर जीवन है।"

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितंमुखं ।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्म्माय दृष्टये ॥१५॥

इसी अध्याय का यह पन्द्रहवाँ मंत्र है। इसका अर्थ यह है :-

"सच्चाई का समुज्जवलमुख लक्ष्मी के चमकदार आवरण से ढका हुआ है"- "हिरण्मयेन पात्रेण अपिहित" हे विश्व के रक्षक ! इस आवरण को हटा दें, जिससे हम अनश्वर सत्य का दर्शन कर सकें। हाँ, दिव्य प्रकाश का दर्शन करने के लिये यह आवश्यक है कि पहले आवरण को दूर कर दिया जाय और मनुष्य के पशुभावों के कुचल डाला जाय।

यह विश्व ब्रह्माण्ड, इसके सौन्दर्य व्यवस्था, और स्वरसंवाद एक प्रकृति के पिंजरे में बन्द मूढ़ मनुष्य के लिये कुछ नहीं। समुज्ज्वल आकाश और उसके संख्यातीत और जगत् और तारा जगत् भौतिक आवश्यकताओं के आयाम के कारण झुकी हुई आत्मा के लिए तुच्छ है। व्योम के भारी गोले तत्त्वदर्शी के उन्नत मन को इतना आकर्षित करते हैं किन्तु उस व्यक्ति के लिये कुछ भी नहीं जिसने लाभ को ही परमदेव मान रखा है। प्रकृति और लक्ष्मी उसे दोनों ओर से घेर लेती हैं। वह अपनी परिस्थितियों के अन्दर चक्कर लगाती है और वे उसके अन्दर चक्कर लगाते हैं। इस प्रकार उसका दैनिक जीवन नियत समय की अन्तिम सीमा तक पहुँच जाता है।

स्वर्गीय सत्य का सुन्दर आकाश, संसारी मनुष्य को कदापि नहीं ढाँपता। ऐसी अवस्थाओं में विश्वास असम्भव है। संश्य, हाँ संशय ही एक ऐसा प्रधान कर्मचारी है जो जीवित रहता और बढ़ता फूलता है। ऐसी अनस्थाओं में और क्या सम्भव है ? ऐसी अवस्था में मन का आत्मा को शान्ति देने वाले तत्वज्ञान की तलाश करना निष्फल है। क्योंकि प्रकृति का संसार अर्थात् विरोध का चक्र ही दृष्टिगोचर होता है। विश्वव्यापी की सब कहीं सर्वज्ञ बुद्धि (परमेश्वर) का कहीं पता नहीं मिलता। संश्य रूपी राज कर्मचारी की काना-फूसियाँ बहुत निर्विकल्प हैं। क्या यह नहीं कहा गया है कि ढूँढ़ने से परमेश्वर को कोई नहीं पा सकता है ?" और यह बात सत्य नहीं है कि परमेश्वर के अतीव दृढ़ विश्वासी भी यह

मानते हैं कि उनका यह केवल विश्वास ही विश्वास है। वास्तव में ये इस विषय में कुछ नहीं जानते। ये सब संश्य की काना-फूसियाँ हैं। परन्तु यह जीवन का प्रधानमंत्री, यह संशयात्मक कर्मचारी अपने अन्वेषणों को यहीं पर समाप्त नहीं कर देता। वह सम्पूर्ण है। वह भौतिक जगत् के अन्दर प्रवेश करता है। विद्यार्थी से पूछता है कि क्या वे रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं ? उसकी जिज्ञासा का परिणाम यह है-

भूगर्भविद्या पृथिवी का, और कोयले, पत्थर, और सारे खनिज पदार्थों के भिन्न-भिन्न स्तरों की रचना का वर्णन करती है। वह चिरकाल के नष्ट हुए जन्तुओं के चिह्नों और ठटरियों को प्रकट करती है, पर हमको कोई ऐसा सूत्र नहीं बताती जिस से हम परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध कर सकें।''

''जीवविद्या हमें प्रायः पशु-जगत् का, और भिन्न-भिन्न सेन्द्रिय-जीव-जन्तुओं विविध जातियों की शक्तियों और रचनाओं का ज्ञान प्रदान करती है।''

''शरीर-धर्म-विद्या मनुष्य प्रकृति की मनुष्य की सत्ता को सुप्रबन्ध में रखने वाले नियमों की, प्राणभूत इन्द्रियों के व्यापारों की और उन स्थितियों की जिन पर ही कि जीवन और स्वास्थ्य का दारोमदार है, शिक्षा देती है।''

''मस्तिष्क-विद्या मन सम्बन्धी नियमों, मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न भागों, स्वभाव और इन्द्रियों का वर्णन करती है। वह यह भी बताती है कि एक अच्छी सुस्थ अवस्था प्राप्त करने के लिये किस प्रकार किस इन्द्रिय को उन्नत करना और किस को दमन करना चाहिए। यद्यपि सारे पशु प्रबन्ध में मस्तिष्क एक ऐसा सूक्ष्म जगत् समझा जाता है जिसमें कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के साथ सम्बन्ध या सादृश्य का पता चल सकता है, परन्तु इस में भी कोई विन्दु ऐसा नहीं मिलता जो परमेश्वर के अस्तित्व को प्रकट करता हो।''

''गणित सारी शुद्ध विद्याओं की नींव को प्रतिष्ठित करता है। यह संख्याओं को जोड़ना, दूरियों का अन्दाजा लगाना और उन को मापना सिखाता है। यह बताता है कि पर्वतों के तोल और समुद्र की गहराइयों के माप सम्बन्धी प्रश्नों को कैसे हल करना चाहिये। पर हमें ऐसी कोई विधि नहीं बताता जिससे ईश्वरीय सत्ता की जाँच हो सके।''

''यदि आप प्रकृति की बडी प्रयोगशाला-रसायन विद्या में प्रवेश करें तो वह आप को विवधि प्रकार के मूल द्रव्यों और उन गैसों (वायु) के संयोग और उपयोग का हाल बतायेगी जो नित्य विकसित और भिन्न-भिन्न प्रमाणों में संयुक्त होकर नानारूप वस्तुएँ और हमें दिखाई देने वाले मनोरञ्जक और प्रयोजनीय दृश्य-चमत्कार उत्पन्न करती है। यह द्रव्य के अकरत्व और उसके अन्तर्निरूढ़ गुण गति को प्रमाणित करती है। पर उसके निखिल कार्यों में कोई भी उपपादनीय वस्तु ऐसी नहीं मिलती जो जगदीश्वर के अस्तित्व को बतलाती हो।''

''नक्षत्र-विद्या हमें सौर जगत् के चमत्कारों का सदा घूमने वाले लोकों उनकी गतियों के वेग और नियमों, एक तारे से दूसरे तारे तक और एक लोक से दूसरे लोक तक अन्तर का हाल बताती है। यह आश्चर्यजनक और विस्मयोत्पादक यथार्थता के साथ ग्रहणों के दृश्य-चमत्कारों और हमारी पृथ्वी पर पुच्छल तारों के दिखाई देने के पहले से ही बता देती है। यह गुरुत्वाकर्षण के अविकार्य नियम को सिद्ध करती है। पर परमात्मा के अस्तित्व के विषय में वह सर्वथा चुप है।''

अन्ततः आप पृथ्वी के पेट में घुस जाइये। वह आपको ज्ञात हो जायेगा। सागर की गहराइयों में डुबकी लगाइए। वहाँ आप को सागर निवासी मिलेंगे। पर आप को उसके अस्तित्व का ज्ञान न ही ऊपर पृथ्वी पर और न ही नीचे सागर में प्राप्त हो सकता है। ऊपर आकाश में चढ़िये और आकाश गंगा में प्रवेश कीजिये। एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक दूर से दूर तारे में जाइए। सदा घूमने वाली प्रणालियों से पूछिए कि परमेश्वर कहाँ हैं ? प्रतिध्वनि उत्तर देती है-कहाँ ?''

''प्रकृति का विश्वब्रह्माण्ड उसके इस्तत्व का कोई निशान नहीं देता। तो फिर हम उसे कहाँ ढूँढे। क्या मानसिक जगत् में उसकी खोज करें ? लाखों पुस्तकें जो इस विषय पर लिखी जा चुकी हैं, उन को पढ़ जाइए। सारे विमर्शों प्रतिज्ञाओं, प्रमेयों, कल्पनाओं और मनों में मनुष्य ने प्रत्येक पृष्ठ पर अपनी बुद्धि का अमिट अंक अंकित कर दिया है। मानव-लेख अधिक से अधिक, मनुज चरित्र के आलेख्य, मानवीय मान के रूप और मनुष्य के अस्तित्व की तस्वीरें हैं। पर ईश्वर कहाँ है ?

''अपने चारों ओर ध्यानपूर्वक देख लो, और मान लो कि चेतना, कल्पना)सुष्टि का प्रबन्ध) और फलतः परिकल्पक के विषय में कोई साक्षी नहीं मिलती। चेतना क्या है ? यह स्वयं कोई वस्तु कोई पिण्ड या कोई सत्ता नहीं। यह केवल प्रकृति का एक विशेष गुण है जो अपने आपको सेन्द्रिय जीव-जन्तुओं के द्वारा प्रकट करता है।''

अच्छा तो ये सन्देह के इशारे और अविश्वास की काना-फूंसियाँ हैं। ये इन्द्रियों के जीवन, प्रकृति में निवास, लक्ष्मी की पूजा और सर्वशक्तिमान परमाणुओं में श्रद्धा यथार्थ कार्य हैं।

इस प्रकार परमात्मा कैसे जाना जा सकता है। भूगर्भ-विद्या, शरीर धर्मविद्या, शरीरव्यवच्छेद-विद्या, मस्तिष्क-विद्या, गणित, रसायन और नक्षत्र विद्या सब की सब केवल स्थूल विकास और बाहर का गूदा है। उन का सम्बन्ध केवल उन्हीं पदार्थों से है जो छूए जा सकते हैं, जो देखे जा सकते हैं, जो सुने जा सकते हैं, जो चखे जा सकते हैं और जिनका कण्ठ से उच्चारण हो सकता है। परन्तु सर्वान्तरात्मा परमेश्वर इन्द्रियगोचर पदार्थों से परे 'नैनद्देवा आप्नुवन् तद्धावतो न्यानत्येति' और इन्द्रयों के नश्वर, जंगल और परिवर्तनशील दृश्य-चमत्कारों से बहुत दूर है। क्या आप पृथ्वी के भीतर उतरते हैं, आकाश पर चढ़ते हैं, और विश्वात्मा का स्थान ढूँढ़ने के लिए विश्व ब्रह्माण्ड को छान मारते हैं ?

तद्दूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः॥ य०अ० ४०, म० ५॥

वह दूर से भी दूर है क्योंकि भौतिक इन्द्रियाँ उसका अनुभव नहीं कर सकतीं। वह निकट से भी निकट है क्योंकि वह सबसे अधिक भीतर है। परन्तु बाह्य पूजकों से वह छिपा रहता है।

आत्मा के अन्दर परमात्मा के प्रकाश का नियम एक आन्तरिक एकतानता है। प्रकृति की आँधी भीतर की व्यवस्था में बाधा देती है।

एकाग्रता, ध्यान, मानसिक शान्ति और प्रत्याहार ही केवल ऐसे साधन हैं जिनसे ईश्वर सिद्धि हो सकती है।

जब अपनी महान् अजय दसा पर गर्व करने वाला आप ही सबसे अधिक मेद्य है, जब अपनी वीरता पर अभिमान करने वाला आप ही सब से अधिक कायर है, जब दूसरों को सत्य का उपदेश देने वाला आप ही सबसे अधिक झूठा है; जब अपने आपको किसी दल

का नेता बनाने वाला आप ही पथभ्रष्ट है, जब अपने आपको किसी दल का नेता बनाने वाला आप ही पथभ्रष्ट है, जब अपने को निष्कपट नागरिक कहने वाला हताश मनुष्यों की दैनिक मजूरी में से उड़ाए हुए भारी लाभों पर जीता है, जब अपने व्यवसाय को मान्य बताने वाला दूसरों के कूटकरण, अन्याय और व्यावहारिक सूक्ष्मता की लेन देन से अपनी जेबों को भरता है, जब अपने आपको संभ्रान्त वैद्य, शरीर का परोपकारी चिकित्सक प्रकट करनेवाला अपने रोगियों की धन दिलाने वाला तन्दुरुस्ती में ही दिलचस्पी लेता है, जब वेदी पर उपदेश देते समय आत्मा को शान्ति प्रदान करने मत के शत्रुओं को कोसते समय अपवित्र हो जाता है, जब विचार की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता पर बातें करने वाला राज्य लोकमत, या धार्मिक सम्प्रदाय को आज्ञा देता है कि वे उस व्यक्ति के मुँह को बन्द कर दें जिसकी आत्मा स्वभाव से ही स्वतन्त्र है, जब अपने सिद्धान्त, अपनी नीति या अपनी दानशीलता की प्रतियोगिता के लिए संसार को ललकारने वाला, स्वयं एकान्त में किसी विशेष प्रश्न के प्रकाश, कर्म के किसी विशेष भाग की रक्षा, या किसी विशेषदान के देने में संकोच करता है तो क्या वह अन्तरात्मा के साथ कोई मेल या एकतानता रखता या रख सकता है ? तब फिर कैसे आशा करते हो कि वह भद्र, पवित्र, निर्मल और देवत्व के देवज्ञान से भरा पूरा हो सकता है ।

जब तक "जिसकी लाठी उसकी भैंस" का सिद्धान्त समझा जाता है, पशु बल से प्रेम का काम कराया जाता है, मूर्खता बुद्धिमत्ता के भावों की प्रतिनिधि बनाई जाती है, दम्भ निर्दोप साधुता की अपेक्षा अधिक प्रचलित है, धनवान् पाप की निर्धन पुण्य से अधिक अभिलाषा की जाती है और उसे अधिक सहन किया जाता है । तब तक रोगों, अपराधों और विपत्तियों का नाश कैसे हो सकता है, या शान्ति, उन्नति और सुख कैसे फैल सकते हैं ? इसी कारण मनुष्य अनन्त अविद्या में दुष्प्राप्य पाण्डित्य रखने का अभिमान करता है । वह विज्ञान की तिरछी किरणों में एक न उदय हुए सूर्य की सम्पूर्ण सत्य की पूर्ण प्रभा की नाईं प्रशंसा करता है ।

आन्तरिक विन के इन दुःखों ने विचारकों के ध्यान को अपनी ओर खींचा है, धार्मिक गम्भीर लोगों ने इन लोगों को बताया है और जैसा कि शारीरिक विरोधों और भौतिक लोगों की दशा में विरोध है, ऐसी पेटेन्ट (सर्वविदित) औषधियाँ निकाली गई हैं, जिनके विषय में यह माना हुआ है कि वे लोगों की शान्ति, समाज के सुधार और व्यक्तियों का शोषण करेंगी । ऐसी पेटेन्ट औषधियाँ बेचनेवालों का एक सम्प्रदाय ऐसे रोगों के लिए "प्रार्थना" को सब से अच्छा और जल्दी असर करने वाला विरेचक बताता है और मनुष्यों और व्यक्ति को प्रार्थना रूपी औषध की बड़ी-२ मात्रा रात दिन सेवन करने का उपदेश करता है । इस प्रकार विकृत घटना उत्पन्न स्थिर और प्रोत्साहित की जा रही है और नश्वर आध्यात्मिक शक्ति के दुर्बल और मूर्छित कर देने वाले प्रभाव को भूल से प्रार्थना का शुद्ध करने वाला परिणाम समझा जा रहा है, सबसे प्रथम विरोध रोग और क्लेश स्पष्ट पाप है । "प्रार्थना" की उन्नति के साथ-साथ प्रार्थना करने वाली आत्मा उनको सहन करना सिखाती है, इसके उपरान्त वह इनको अपने आत्मा-निग्रह में यात्रा की धूलि के सदृश ख्याल करती है । अन्ततः वह इन सबसे दबकर मूर्छित हो जाता है । इसको वह अपने मन की शान्ति मान लेती है । इसे वह आनन्द, मुक्ति और आत्मा में परमात्मा की विद्यमानता ख्याल करती है । इसके साथ प्राणभूत शक्ति क्षीण होने लगती है । इसे वह अपने भीतर की पशुवृत्ति की मृत्यु समझता है । यह पेटेन्ट औषध केवल आवेगों की अग्नि, अपरितुष्ट कामनाओं की चिंगारी, अप्राप्त प्रयोजनों का सुलगा हुआ कोयला, मतभेद की गरमी, और झण्डे के जोश और उधार है मन की स्थिरता, और उसके पीछे होने वाली मूर्च्छा बुद्धि मृत्यु है, जिसकी राख पर लालसा, शोक, वेदना, आनन्दोन्माद और अन्य अनियमों की भाप उबलती खौलती है । पर ईश्वरीय प्रकाश का सच्चा आगमन बुद्धि के विस्तार और जीवन शक्ति की वृद्धि के साथ होता है । उसके उपरान्त प्रकृत सहजज्ञान का उदय होता है । हमें बाह्य चिन्हों को भूल से आन्तरिक चिह्न न समझ लेना चाहिये । प्रत्येक चमकने वाली वस्तु स्वर्ण नहीं होती । वास्तव में, बाह्य रूप धोखा देने वाला होता है, अदृश्य ही यथार्थ है । अदृश्य की खोज परमेश्वर की सच्ची खोज है, उनकी उपलब्धि और उसको अपनाना जीवन की उत्पत्ति और आत्मा की अमरता है अतएव निश्चय ही, मैं अदृश्य को दृश्य से अच्छा समझता हूँ ।

मेरे आशय को अधिक स्पष्टता से समझने के लिये इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि शरीर एक रूप है, अनित्य है, अपरिवर्तनशील है । पर आन्तरिक परिवर्तनशील नहीं । मनुष्य आन्तरिक है, आकार या कार्य बाह्य हैं । आत्मा पर क्रिया नहीं की जाती, पर आत्मा शरीर पर क्रिया करती है जो आन्तरिक है वही तत्त्व है, जिस पर यह क्रिया करती है वह दृश्य और अनित्य है । सभी बाह्यरूप इसी नश्वर (इस परिभाषा के परिमित अर्थ में नश्वर) उपादान से बने हैं ।

अब इस बात के स्पष्ट हो जाने के कारण कि दृश्य वास्तविक नहीं, पर अदृश्य ही सनातन है, यह परिणाम निकलता है कि हम परीक्षा करें कि सच्चाई एक अतीन्द्रिय परन्तु अपरिवर्तनीय और सनातन नियम में है । यहाँ तक मानकर तुम इस योग्य हो गए हो कि सम्भव सम्भावनाओं के अनुसन्धान के एक पग आगे बढ़ सको । कार्यों को देख कर उनका एक आसान कारण ढूँढा गया है । यह बात एक कठिन और सूक्ष्म व्यवच्छेद द्वारा प्रमाणित हुई है । अमुक कारण अमुख कार्य उत्पन्न करता है, इससे यह विदित होता है कि कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता । यह कार्य एक, और कार्य, और फिर यह वह आगे एक और कार्य पैदा करता है, इस प्रकार उपमित से तुम देख सकते हो कि कार्यों का, और कार्यों के कारणों की संख्या अगणित और अनन्त है । कारणों से कार्यों का, और कार्यों से कारणों का पता लगाना विचार की शुद्ध रीति है । यह विचार तुम अपनी कल्पना में आगे से आगे करते जाते हो । यहाँ तक कि तुम अस्तित्व की भूतप्रलय तक पहुँच जाते हो । जब तुम प्राणहीन होकर ठहर जाते हो और पूछने लगते हो कि आदि कारण का कारण क्या था ? तुह्रहें ये पदचिह्न शून्य परिभ्रमण कदापि न करने पड़ते । यदि तुम इन सब रूपों और बाह्य पदार्थों के विषय में यह समझ लेते कि ये कारण नहीं प्रत्युत कार्य हैं । हम इसको उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं ।

कल्पना कीजिये कि इस कठिन पृथ्वी तल के नीचे एक बीज छिपा हुआ है । मान लीजिये तुम उसके अस्तित्व को भूल गये हो । कुछ वर्ष बीत जाते हैं, तुम उस स्थान पर दृष्टिपात करते हो जहाँ कि वह बीज छिपा हुआ था ।

अब तुम एक उच्च और सुन्दर पेड़ के अपनी प्रकृति की सारी विभूति और प्रभाव के साथ कढ़ा देखते हो । क्या उस अस्तित्व से इन्कार करना ऐसा ही सम्भव और असंगत न होगा जैसा कि थोड़ी देर के लिये उस बीज से इन्कार करना जिससे कि यह अस्तित्व उत्पन्न हुआ है ? पेड़ खड़ा है और अन्तिम परिणाम के रूप में प्रकट है । मनुष्य खड़ा है और वह भी अन्तिम कार्य है । पेड़ के बीज के अस्तित्व का तुम्हें ज्ञान था, पर ब्रह्माण्ड के बीज का तुम्हें पता नहीं । परन्तु क्या यह बात प्रत्यक्ष नहीं कि पिछली बात कम से कम सम्भव है । क्योंकि पहली ज्ञात और प्रमाणित हो चुकी है ? केवल इस सम्भावना को मान लेने से हम इस अनुसन्धान में एक और पग अधिक सावधान होकर उठाने के लिये उद्यत हो जाते हैं ।

जो दूसरा पग उठाना है उसको हम एक और उदाहरण से स्पष्ट करते हैं । मान लीजिए कि एक मनुष्य रोग ग्रस्त है । वैद्य लोग रोग के शरीर धर्मविद्या सम्बन्धी चिह्नों और वेदनाओं से जो कि रोग से पैदा होती हैं और जिन को वे बाह्य अवलोकन की किसी भी रीति से इन्द्रियगोचर नहीं कर सकते, रोगी की व्याधि की जाँच करते हैं । रोगी अपने दु:खों का वर्णन करता है । वैद्य रोगी के बयान के मानकर उस बयान तथा बाह्य चिह्नों के अनुसार रोग के नाम का निश्चय करते हैं । प्रत्येक वैद्य अपनी इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त हुई साक्षी के कारण व्याधि के रूप के विषय में दूसरों से भिन्न सम्मति प्रकट करता है । क्या आपको यहाँ इस बात का प्रमाण नहीं मिलता कि जो बाह्य जो प्रकट है वह कार्य है और उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता । परन्तु कारण गुप्त है और तुम्हारे पास ऐसा कोई साधन नहीं जिससे उसके कारण का अनुसन्धान हो सके ?

और लीजिये, एक मनुष्य का एक दाँत सड़ा हुआ है । वह कहता है कि मेरे असह्य पीड़ा हो रही है, परन्तु आप उसके कथन में संदेह करते हैं और प्रमाण माँगते हैं । वह तुम्हें दाँत की ओर संकेत करता है । यह दांत एक स्पर्शनीय वस्तु है । परन्तु क्या वह साक्षी, जिसको आपकी इन्द्रियाँ स्वीकार करती हैं, आपको विश्वास दिलाती है कि उसके पीड़ा हो रही है ?

एक और उदाहरण लीजिये । संसार की सारी मनुष्यजाति अपनी संयुक्त साक्षियाँ दे सकती है कि वह सुनिश्चित और पूर्ण रीति से सूर्य को पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होते देखती है । क्या इस बात की कोई आन्तरिक साक्षी नहीं कि इसका बाह्य और प्रकट निश्चय झूठा है ? सच्चाई की अन्तवर्ती खोज ने इस दृश्य चमत्कार का कारण प्रतिष्ठित कर दिया है और प्रमाणित कर दिया है कि सूर्य नहीं घूमता । परन्तु तुम्हें दृश्य और बाह्य से ही धोखा हाआ है, आन्तरिक से नहीं जो कि सच्चाई है ।

अतएव प्रकृति का सच्चा विद्यार्थी दृश्य का ध्यान करता है और मानव अस्तित्व के इस रंगमंच को पैदा करनेवाले कारण का प्रकृति की पीठ पर चुपचाप चिन्तन करता है और उन सच्चाइयों का, जो कि उसके अन्दर मौजूद हैं भारी आदर करता हुआ कार्यशक्ति और जीवन के आदि कारण के साथ संयुक्त हो जाता है । उसकी आकांक्षाओं का रूप बिल्कुल आध्यात्मिक या नैतिक हो जाते है । वह इस बात का अनुभव कर लेता है कि सारा का सारा ब्रह्माण्ड उस प्रभु का है । विश्व का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं जो उस प्रभु का न हो ।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।

-यजु०अ०४०मं०१॥

उसकी निर्मल बुद्धि के लिए जो कि विकार और घृणा से रहित हो गई है । भक्ति और ध्यान, विश्वास और मन की स्थिरता रास्ता खोल देती है । वहाँ से ज्ञान की किरणें मन्द-मन्द प्रवेश करती हुई उसकी बुद्धि तथा भावों पर स्निग्ध और रुचिर प्रभाव डालती हैं । उसने उस सच्चे मुक्तिदाता, अदृश्य स्वामी को पा लिया है जिसमें कि सारे विषय की स्थिति है । उसके निकट आन्तरिक ही प्रकृत है । उसकी विस्तृत बुद्धि कपड़ों से गुजर कर उस तक पहुँचती है जो कि मूल है । वह शरीर के भीतर आत्मा तक, नियम में जीवन तक, वस्तु के अन्दर विज्ञान तक पहुँचता है ।

ऊपर के लेख का सारांश यह है कि विस्तृत बुद्धि ही ईश्वरीय तत्त्व की सिद्धि के लिए आत्मा को ऊँचा उठा सकती है, प्रार्थना यह काम नहीं कर सकती, अपने आपको उन प्रत्यादेशों के पात्र बनाने के लिए, जो कि सारे ज्ञान के मूल स्त्रोत से बुद्धि में आते हैं, धार्मिक आयास ही हमारी सबसे अधिक मर्मस्पर्शी प्रार्थना है ।

अपने विचारों के इस अधूरे आलेख्य से जो शीघ्रता में आपके सामने उपस्थित किया गया है मेरा उद्देश्य यह है कि यह तीन सिद्धान्त प्रतिष्ठित और स्पष्ट मिल जाएँ ।

१. आध्यात्मिक जीवन ही प्रकृत जीवन है । संसार के संक्षोभों के प्रतिबन्धनों में फँसा हुआ मनुष्य सार्वत्रिक सच्चाई को पूरी तरह से देख और समझ नहीं सकता ।

२. इस सार्वत्रिक सच्चाई को, जो कि विस्तृत बुद्धि या निर्मल विवेक के द्वारा जानी जाती है, जानने में असमर्थ होने के कारण ही प्रार्थना की पेटण्ट धार्मिक चिकित्सा और अश्रुपूर्ण मस्तिष्क-उपशम निकाले गये हैं ।

३. ब्रह्माण्ड का प्रकृत रचयिता एक अदृश्य, प्रतापी, व्यापक और इस आध्यात्मिक जगत् का सर्वशासक तत्त्व है ।

సూక్తి సుధ

రచన - సంగమేశ్వర్ "సంగమ్" కవి

ఆ॥ కూటిలోని యిసుక గూడ
చూడని నాడు ఏటి లోని దాని నేమి
గనును ? స్వంత దోషములను కొంత
దూరమొనర్వ మొదట యత్న మున్న
మేలు మిన్న.
కాళ్ళు వేడిగాను కడుపు మెత్తగాను
మెదడు చల్లగాను ముదముగున్న
అవసరంబు లేదు అసలు డాక్టర్లతో,
మొదట యాచరింప తుదకు మేలు !
వగలు వుదయమరటి వండు
బంగారము తీరు మేలు జేయు తినగ
వలెను, రాత్రిపూట తినిన రాయిగా
కీడిడు కనక రాసులిడిన, తినగ వలదు
త్రోవలోన అరటి తొక్కలు పడియున్న
తీసి వేసి నంత వాసి పోదు, పెను
ప్రమాదములను ఘనముగా తగ్గించు
పుణ్యమబ్బగలదు పుడమిలోన.
ద్వి॥ నరుడు తనదు కంటి మురికిని
గనక
పరుల కన్నల వూసుపరికింపనేల ?
చిరుచిరు మేలులు చేసిన చాలు
ధరలోన జీవితం ధన్యత గాంచు
కం॥ ఆడది లేనిది మిల్లా ?
గాడిద కొట్టమ్ము కన్నకడుహీనంబౌ !
జాడను గని సుజనులు తమ
జోడును నమకూర్చు కుంద్రుం
చూడుము "సంగమ్"

दरगाह दीवान की देश में गोवंश वध पर रोक की मांग

राजस्थान में अजमेर के सूफी संत हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के वंशज सज्जादानशीन एवं आध्यात्मिक प्रमुख दरगाह दीवान सैयद जैनुल आबेदीन अली खान ने कहा कि बीफ को लेकर देश में दो समुदायों के बीच पनप रहे वैमनस्य को खत्म करने के लिए केन्द्र सरकार को देशभर में गोवंश की सभी प्रजातियों के वध करने एवं इनका मांस बेचने पर पतिबंध लगाना चाहिए तथा मुस्लमानों को भी इनके वध से खुद को दूर रहकर इसके मांस के सेवन को त्यागने की पहल करनी चाहिए। दरगाह दीवान आबेदीन ने आज अजमेर शरीफ से एक बयान जारी किया। उन्होंने यह बयान ऐसे समय जारी किया जब अजमेर में ख्वाजा साहब का ८०५वां सालाना उर्स चल रहा है और इसमें लाखों मुस्लिम अकीदतमंदों के अलावा अन्य धर्मो के लोग भी शिरकत कर रहे है। देश दुनिया से आए मुस्लिम संप्रदाय के लोगों के बीच यह बयान महत्वपूर्ण है।

उन्होंने अपने बयान में कहा मुस्लिम धर्मगुरू का भी यह मत है कि एक समय में तीन तलाक के उच्चारण को शरीयत ने नापसंद किया है। मुसलमान इस प्रक्रिया में शरीयत की नाफरमानी से बचें। सालाना उर्स के समापन की पूर्व संध्या पर खानकाह शरीफ में परम्परागत रूप से आयोजित होने वाली महफिल के बाद वार्षिक सभा में देश की विभिन्न दरगाहों के सज्जादगान, सूफियों, एवं धर्म प्रमुखों, को संबोधित करते हुए अन्होंने कहा कि गोवंश की प्रजातियों के मांस को लेकर मुल्क में सैंकड़ों साल से जिस गंगा जमुनी तहजीब से हिन्दु और मुस्लमानों के मध्य मोहब्बत और भाईचारे का माहौल स्थापित था उसे ठेस पहुंची है। उन्होंने कहा कि उसी सदभावना की विरासत के पुनःस्थापन की जरूरत है। इसके लिये मुसलमानों को विवाद की ज़ को ही खत्म करने की पहल करते हुए गोवंश (बीफ) के मांस के सेवन को त्याग देना। चाहिये। उन्होने सरकार से अपील की कि मुल्क के इत्तेहाद और दो प्रमुख समुदायों के बीच टकराव और वैमनस्य का कारण बन रहे बीफ और गोवंश की सभी प्रजातियों के वध और इनके मांस की बिक्री को प्रतिबंधित कर देना चाहिये। जिससे इस मुल्क की मजहबी रवादारी मोहब्बत और सदभावना फिर से उसी तरह कायम हो सके जैसी सैंकडों सालों से चली आ रही है। उन्होने कहा कि उनके पूर्वज ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती ने इस देश की संस्कृति को इस्लाम के नियमों के साथ अपना कर मुल्क में अमन शान्ति और मानव सेवा के लिये जीवन समार्पित किया था।

उसी तहजीब को बचाने के लिये गरीब नवाज के ८०५ उर्स के मौके पर मैं और मेरा परिवार बीफ के सेवन को त्यागने की घोषणा करता हूं, और हिन्दोस्तान के मुसलमानों से यह अपील करता हूं कि देश में सदभावना के पुनःस्थापन के लिये वह भी इस त्याग को अपना कर मिशाल पेश करें। दरगाह दीवान ने गुजरात सरकार के उस फैसले की सराहना करते हुए कहा कि गुजरात विधानसभा में पशु संरक्षण (सशोधन) अधिनियम २०११ को पास किया है इस कानून के मुताबिक, किसी भी आदमी को बीफ ले जाने पर उम्रकैद की सजा होगी।

केन्द्र सरकार को पूरे देश में गौवंश की सभी प्रजातियों के संरक्षण के लिये इनकी हत्या पर पाबंदी लगाकर गो हत्या करने वालों को उम्रकैद की सजा का प्रावधान करना चाहिए और गाय को राष्ट्रीय पशु भी घोषित कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि उद्देश्य सिर्फ गाय और इसके वंश को बचाना है क्योंकि वो हिंदुओं की आस्था का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ सरकार का नहीं बल्कि हर धर्म को मानने वाले का कर्तव्य है कि वो अपने धर्म के बताए रास्ते पर चलकर इनकी रक्षा करे। उन्होने नियम में समानता लाने की बात करते हुए कहा कि सिर्फ एक राज्य में नहीं बल्कि पूरे देश में ही जानवरों की हत्या पर रोक लगा देनी चाहिए। इस विरोध को खत्म किया जाए ताकि बैमनस्य नही फेले। उन्होने कहा कि मैं यह अपील करना चाहता हूं कि किसी भी तरह का जानवर नहीं काटा जाना चाहिए।

देश के सभी राज्यों में तो ऐसा होना ही चाहिए क्योंकि हिन्दुस्तान के कई राज्यों में गायों को कानून के मुताबिक काटा जाता है जो सरासर गलत है। दीवान ने इस्लामी शरीयत के हवाले से कहा कि इस्लाम में शादी दो व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक करार माना गया है। इस करार की साफ-साफ शर्तें निकाहनामा में दर्ज होनी चाहिए। कुरान में तलाक को अति अवांछनीय बताया गया है। उस संवेदनशील मसले पर उनका तर्क है कि एक बार में तीन तलाक का तरीका आज के समय में अप्रासंगिक ही नहीं, खुद पवित्र कुरान की भावनाओं के विपरीत भी है। क्षणिक भावादेश से बचने के लिए तीन तलाक के बीच समय का थोडा-थोडा अंतराल जरूर होना चाहिए। यह भी देखना होगा कि जब निकाह लडके और लडकी दोनों की रजामंदी से होता है, तो तलाक मामले में कम से कम स्त्री के साथ विस्तृत संवाद भी निश्चित तौर पर शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि निकाह जब दोनों के परिवारों की उपस्थिति में होता है तो तलाक एकांत में क्यों होता है।

उन्होने कहा कि पैगंबर हजरत मुहम्मद ने कहा था कि अल्लाह क़ो तलाक सख्त नापसंद है। कुरान की आयतों में साफ दर्शाया गया है कि अगर तलाक होना ही हो तो उसका तरीका हमेशा न्यायिक एवं शरअी हो। कुरान की आयतों में कहा गया है कि अगर पति-पत्नी में क्लेश हो तो उसे बातचीत के द्वारा सुलझाने की कोशिश करें। जरूरत पडने पर समाधान के लिए दोनों परिवारों से एक-एक मध्यस्थ भी नियुक्त करें। समाधान की यह कोशिश कम से कम ९० दिनों तक होनी चाहिए। दरगाह दीवान ने कहा कि कुरान ने समाज में स्त्रियों की गरिमा, सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत सारे प्रावधान किए हैं। तलाक के मामले में भी इतनी बंदिशें लगाई गई हैं कि अपनी बीवी को तलाक देने के पहले मर्दो को सौ बार सोचना पडे।

कुरान में तलाक को न करने लायक काम बताते हुए इसकी प्रक्रिया को कठिन

बनाया गया है, जिसमें रिश्ते को बचाने की आखिरी दम तक कोशिश, पति-पत्नी के बीच संवाद, दोनों के परिवारों के बीच बातचीत और सुलह की कोशिशें और तलाक की इस पूरी प्रक्रिया को एक समय-सीमा में बांधना शामिल हैं। उन्होने कहा कि इस विषय पर कुरान के शुरा में एक पूरे अध्याय का जिक्र है जिसे अल तलाक कहते हैं जिसमें १२ छंद हैं इन छंदों में तलाक के लिए कुरान एक प्रक्रिया पालन करने की बात कहता है। कुरान कहता है कि तीनों तलाक कहने के लिए एक एक महीने का वक्त लिया जाना चाहिए। कुरान एक बार में तीन तलाक कहने की परंपरा को जायज नहीं मानता है। हर देशवासी की तरह आम मुस्लमान भी शिक्षा, रोजगार, तरक्की एवं खुशहाली चाहता है। मुस्लिम लडकियां पडना और आगे बडना चाहती हैं।

मुस्लिम महिलाएं भी सिर उठाकर स्वाभिमान के साथ अपने घर और समाज में जीना चाहती हैं वे अपने कुरान एवं संविधान सम्मत दोनों ही अधिकार चाहती है। गैर शरआी तलाक प्रक्रिया महिलाओं के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने वाला कृत है।

इस पारंपरिक आयोजन में देश के प्रमुख चिश्ती दरगाहों के सज्जादगान एवं धर्म प्रमुखों में शाह हसनी मियां नियाजी ब्रेली शरीफ, मोहम्मद शब्बीरूल हसन गुलबर्गा शरीफ कर्नाटक, अहमद निजामी दिल्ली, सैयद तुराब अली हलकट्टा शरीफ आघ्रप्रदेश, सैयद जियाउद्दीन अमेटा शरीफ गुजरात, बादशाह मियां जियाई जयपुर, सैयद बदरूद्दीन दरबारे बारिया चटगांव बंगलादेश, सहित भागलपुर बिहार, फुलवारी शरीफ यू.पी. उत्तराखंड से गंगोह शरीफ दरबाह साबिर पाक कलियर के अलीशाह मियां, गुलबर्गा शरीफ में स्थित रव्वाजा बंदा नवाज गेसू दराज की दरगाह के सज्जदानशीन सैयद शाह खुसरो हुसैनी, नायब सज्जादानशीन सैयद यद्दुलाह हसैनी, दरगाह सूफी कमालुद्दीन चिश्ती के सज्जानशीन गुलाम नजमी कारूकी, नागौर शरीफ के पीर अब्दुल बाकी, दिल्ली स्थित दरगाह हजरत निजामुद्दीन के सैयद मोहम्मद निजामी, सहित देशभर के सज्जादगान मौजूद थे।

जाधव को सजा-ए-मौत क्यों ?

-डा. वेद प्रताप वैदिक

पाकिस्तान की फौजी अदालत ने यदि कुलभूषण जाधव को फांसी पर लटका दिया तो भारत-पाक संबंधों को इतना गहरा झटका लगेगा कि दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की यह शेष अवधि बांझ साबित हो जाएगी। भारत की जनता नरेंद्र मोदी को किसी भी हालत में पाकिस्तान से संबंध सामान्य नहीं करने देगी। अभी तो भारत सरकार ने इतनी ही प्रतिक्रिया की है कि वह जिन ११ पाकिस्तानी कैदियों को रिहा करने वाली थी, उन्हें अभी छोड़ा नहीं है और पाकिस्तानी उच्चायुक्त अब्दुल बासित को बुलाकर हमारे विदेश सचिव जयशंकर ने अपनी नाराजगी जाहिर की है।

यदि जाधव को पाकिस्तान की फौजी अदालत ने अपील का मौका दे दिया तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों सरकारें कुछ लेन-देन करके समझौता करना चाहेंगी। जाधव पर आरोप यह है कि वह भारतीय गुप्तचर संस्था 'रा' का एजेंट है और वह बलूचिस्तान में रह कर न सिर्फ जासूसी कर रहा था बल्कि वहां बगावत भी भड़का रहा था। पाकिस्तानी फौज का कहना है कि जाधव को बलूचिस्तान के अंदर से पकड़ा गया है लेकिन पाकिस्तान में रहे जर्मन राजदूत मुलेन का कहना है कि तालिबान ने उसे ईरान में पकड़ा और फिर पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी को बेच दिया।

वास्तव में जाधव भारतीय नौसेना के सेवा-निवृत्त अफसर हैं और वे ईरान के चाहबहार में बैठकर अपना निजी काम-धंधा चला रहे थे। लेकिन पाकिस्तानी फौज का कहना है कि जाधव ने खुद कुबूल किया है कि वह 'रा' का एजेंट है। इसी आधार पर फौज ने उन्हें कोर्ट मार्शल किया और मौत की सजा दे दी।

आश्चर्य की बात है कि जाधव से भारतीय उच्चायुक्त को बिल्कुल भी संपर्क नहीं करने दिया गया। उच्चायुक्त ने १३ चिट्ठियां लिखीं लेकिन पाक-सरकार ने कोई जवाब नहीं दिया। जाधव का मुकदमा बंद कमरे में चला। यह किसी को पता नहीं कि फौज ने उनके खिलाफ कौन-कौन से सबूत जुटाए। जाधव यदि उन पर लगे आरोपों को कुबूल नहीं करते तो हिरासत में ही उन्हें मार डाला जा सकता था। पाकिस्तान के लगभग विदेश मंत्री सरताज अजीज का सीनेट में बयान है कि जाधव के खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं मिल सके हैं। फिर भी फौजी अदालत ने इतना सख्त फैसला आखिर क्यों किया है?

इसका कारण तो यह बताया जा रहा है कि नेपाल से गायब हुए पाकिस्तानी जनरल मु. हबीब जाहिर का बदला जाधव से लिया जा रहा है। यह दोनों देशों के जासूसी संगठनों की मुठभेड़ है। ऐसे में प्रधानमंत्री नवाज शरीफ क्या कर सकते हैं। यों भी 'पनामा पेपर्स' के भांडाफोड़ के कारण शरीफ की दाल पतली हो रही है। सिर्फ जाधव के बयानों के आधार पर उनको फांसी दी जा रही है, यह अंतरराष्ट्रीय कानून का सरासर उल्लंघन है। खुद पाकिस्तान में इस मुद्दे को लेकर विवाद छिड़ा हुआ है। पीपुल्स पार्टी के नेता बिलावल भुट्टो ने भी जाधव की फांसी का विरोध किया है, क्योंकि वे सिद्धांततः सजा-ए-मौत के विरुद्ध है। मुझे विश्वास है कि पाकिस्तानी फौज अपने फैसले पर पुनर्विचार जरुर करेगी, क्योंकि इस फैसले से पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि भी मलिन होगी।

अंधविश्वास एवं मानवाधिकार

२१वीं सदी में प्रवेश कर चुका मानव समाज जहां एक ओर स्वयं को अति आधुनिक मानता है, वहीं दूसरी ओर समाज में आदि काल से तरह-तरह के अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियां जड़ जमाये हुए है, जो मानव सभ्यता के आरंभिक चरण में मनुष्य को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं जैसे - सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प मनुष्य व पशुओं को होने वाली महामारियों के संबंध में कोई वास्तविक जानकारी नहीं थी और न इन आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने, महामारियों से बचाव व नियंत्रण के साधन ज्ञात नहीं थे, इसलिए उन्हें दैवी शक्तियों का प्रकोप माना जाता रहा, जिन्हें शांत करने के लिये विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान बनाये गये।

इसी से जादू-टोने की अवधारणा भी बनी जिसमें सभी परेशानियों व बीमारियों का कारण जादू-टोना माना गया, जादू - टोने के आरोप में कितनी ही निर्दोष महिलाएं डायनध्टोनही के संदेह में प्रताड़ित होती रही। चमत्कारित शक्तियों की मान्यता बन जाने के कारण सम्पत्ति पाने, सिद्धि प्राप्त करने, संतान प्राप्ति के लोभ में दैवीय शक्ति को प्रसन्न करने के लिए मानव बलि की घटनाएं भी सामने आयी। भूत-प्रेत की मान्यता के कारण, बीमारियों को भी प्रेत बाधा मानकर झाड़ फूंक कर, पिटाई कर भूत भगाने के प्रयास के भी अनेक मामले जानकारी में आये। इस प्रकार अंधविश्वास व कुरीतियां भी मानव अधिकारों के हनन का कारण बनती रहती है।

आजादी के पहले देश में शिक्षा व चिकित्सा सुविधा का प्रसार बहुत कम था। गाँवों, कस्बों में रहने वाले विद्यार्थियों को स्कूल व कालेजों में पढ़ाई करने के लिये मीलों पैदल चल कर जाना पड़ता था, वहीं ग्रामीण अंचल में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध न होने से उन्हें मजबूरीवश, झाड़ फूंक करने वाले बैगा, गुनिया के भरोसे रहना पड़ता था। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का स्तर भी अपेक्षाकृत कम था। आजादी के बाद इन वर्षों में स्थिति सुधरी जरूर है पर अब भी पुरानी मान्यताओं के चलते गांव में किसी बच्चे के बुखार आने, उसके लगातार रोने, पेट में दर्द होने, खाना न खाने, नींद न आने जैसी सामान्य बीमारियों को नजर लगने, जादू-टोना से जोड़कर देखा जाता है, और तो और ग्रामीण अपने पालतू पशुओं की सामान्य बीमारियों, दूध न देने जैसी मामलों में भी अंधविश्वास में पड़ जाते है तथा स्वयं के व अपने पालतू पशुओं के उपचार के लिए झाड़ फूंक, ताबीज बांधने के फेर में समय व धन दोनों नष्ट करते है।

जब गांव में बैगा अपनी झाड़ फूंक से ग्रामीणों की बीमारी या परेशानी दूर नहीं कर पाता है तब वह समस्या का कारण किसी व्यक्ति द्वारा किये गये जादू-टोने, तंत्र, मंत्र, पर डाल देता है तथा किसी मासूम को दोषी बना दिया जाता है। उसके विरोध में अनेक किस्से कहानियां गढ़ दी जाती है व उसके बाद तरह-तरह की प्रताड़ना का दौर शुरू हो जाता है?

अंधविश्वास के कारण प्रताड़ित होने वाली महिलाएं अधिकांश मामलों में गरीब घर की प्रौढ़, विधवा, परित्यक्ता, निःसंतान होती है, जिनके घर पर या तो पारिवारिक सदस्य कम होते है अथवा निर्धन व अकेले होने के कारण वे सामूहिक व सुनियोजित षडयंत्र का प्रतिकार करने में अक्षम होते है। जिसके परिणामस्वरूप किसी निर्दोष महिला को दुर्व्यहार, मारपीट, गाली गलौज, सामाजिक बहिष्कार, गांव से निकलने के दंड का सामना करना पड़ता है। अनेक मामलों में तो प्रताड़ना इतनी क्रूर होती है कि उसकी मृत्यु तक हो जाती है तथा गांव में उसके समान रूप से जीने देने के अधिकार की बात तक नहीं उठती।

अंधविश्वास के चक्रव्यूह में फंसकर व्यक्ति इतना स्व-केन्द्रित व स्वार्थी हो जाता है कि उसे दूसरे व्यक्ति की तकलीफ, पीड़ा महसूस नहीं होती। उसके लिए उसका स्वार्थ सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी कारण मानव बलि, पशु बलि की घटनाएं सुनाई पड़ती है। कुछ समय पहले भिलाई के पास रूआबांधा में तांत्रिक सिद्धि प्राप्त करने के लिए दो वर्षीय बच्चे की बलि की घटना की याद अब भी लोगों के मन में ताजी है।

बलि देकर अपनी मंजिल प्राप्त करने के लोभ में पड़ा व्यक्ति संघर्ष करके सफलता प्राप्त करने की बजाय, सरल रास्ता अपनाने का प्रयास करता है पर वह यह भूल जाता है कि किसी निर्दोष प्राणी की जानलेकर सम्पत्ति, सिद्धि, सन्तान नहीं मिलती सिर्फ सजा मिलती है। बलि देकर खजाने, तांत्रिक, सिद्धि व संतान प्राप्त होने के सपने देखने वाले क्रूर हत्या के गुनाहगार बनकर कठोर सजा भुगतते हैं वहीं वे किसी मानव के मौलिक अधिकार का निर्ममता से हनन कर देते है।

अंधविश्वास के कारण किसी व्यक्ति के सामान्य अधिकार का हनन होने के एक महत्वपूर्ण उदाहरण हमें मनो रोगियों के मामले में स्पष्ट दिखायी देते है। जिसमें मानसिक रूप से बीमार व्यक्तियों को भूत-प्रेत बाधाग्रस्त मानकर उन्हें (किसी मानसिक चिकित्सालय में उपचार करने की बजाय) जंजीरों से जकड़कर किसी झाड़ फूंक करने वाले केन्द्र में डाल दिया जाता है तथा उन्हें प्रेत बाधा उतारने के नाम पर डंडे, चाबुक, से मारा पीटा जाता है, मिर्च की धूनी दी जाती है। कभी जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हो जाते है, जबकि उनका सही मानसिक उपचार कराया जावे तो वे स्वस्थ होकर समाज हेतु उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

हमारे पास अनेक ऐसे भी मामले आते रहे हैं जिसमें कथित तांत्रिकों ने तंत्र-मंत्र से उपचार के बहाने अनेक युवतियों का शारीरिक, मानसिक शोषण किया। आश्चर्य तो यह भी थी अंधविश्वास में फंसे उन पीड़ितों के पालको ने भी कोई आपत्ति न की। जब शोषण हद से बाहर हो गया तब शिकायते हुई व मामलों का पर्दाफाश हुआ। सामाजिक कुरीतियो, जातिभेद की बुराईयों, बाल विवाह, अस्पृश्यता,

सतीप्रथा के मामलों में भी बहुत सारे व्यक्तियों के मानव अधिकारों का हनन होता है पर अधिकांश खबरें बाहर नहीं आ पाती, जातिप्रथा के कारण हुए प्रताड़ना अनेक मामलों में हमने देखा है कि अंर्तजातीय विवाह के कारण कुछ दम्पत्तियों को तो अपने गांव में आजीवन दिक्कतें उठानी पड़ी, उन्हें भेदभाव, बहिष्कार का सामना करना पड़ा, यहां तक पति या पत्नि में से किसी एक की मृत्यु होने के बाद भी उन्हें सामाजिक पंचायतों ने गांव में अंतिम, संस्कार तक की अनुमति नहीं दी।

समझाईश के बाद भी जब सामाजिक पंचायतें राजी नहीं हुई तो हमें परिजन की इच्छानुसार दूसरे गांव में अंतिम संस्कार करोना पड़ा। इज्जत के नाम पर हो रहे ऑनर किलिंग के मामलें तो आज जग जाहिर है जिसमें किसी वयस्क व्यक्ति के मनपसंद विवाह करने पर पंचायतें को अपनी नाक इतनी नीची लगने लगी कि उन्होंने अपने कथित सम्मान की रक्षा के लिए ऑनर किलिंग का रास्ता अपनाया व नव दंपत्तियों की हत्या कर दी, जबकि यही पंचायतें समाज में फैली बुराईयों जैसे - दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, जातिभेद, दलित प्रताड़ना के मामले का मुंह नहीं खोलती थी। निर्दोषो के मानव अधिकारों की रक्षा करने के लिए कभी आगे नहीं आती।

पिछले पन्द्रह वर्षो से हम ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न अंधविश्वासो, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान चलाने के लिए गांवों में सभाएं लेते हैं। जन जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित करते है। जादू-टोने के संदेह में होने वाली महिला प्रताड़ना के विरोध में ''कोई नारी टोनही नहीं अभियान'' चला रहे है। जिन स्थानों पर टोनहीध्डायन के संदेह में प्रताड़ना की घटनाएं होती हे वहां जाकर उन महिलाओं, उनके परिजनों से मिलते है उन्हें सांत्वना देते है, उनसे चर्चा करते है आवश्यक उपचार का प्रबंध करते है। हजार से अधिक गांवों में सभाएं लेने के दौरान अनेक प्रताड़ित महिलाओं व उनके परिजनों से मेरी चर्चा हुई, उनके दुख सुने कि कैसे अनेक बरसो से उस मांव में सबके साथ रहने व सुख-दुख में भागीदार बनकर जिंदगी गुजारने के बाद कैसे वे कुछ संदेहों व बैगाओं के कारण पूरे गांव के लिए मनहूस घोषित कर दी गई, उन्हें तरह-तरह से प्रताडित किया गया जब उन्होंने चिल्लाकर अपने बेगुनाह होने की दुहाई दी तब भी उनकी बात नहीं सुनी गई। समाज में उनके समान रूप से जीने के अधिकारों का केसा हनन हुआ कैसे बर्ताव हुए बताते हुए उनकी आंखें डबडबा जाती है, गला भर जाता है, आवाज रूंध जाती है, उनके आंसू उनकी निर्दोषिता बयान करते हैं प्रदेश में अनेक मामलों को लेकर मैं मानव अधिकार आयोग के पास पहुंचा, लिखित जानकारी दी, कार्यवाहियां भी हुई है।

अंधविश्वास व कुरीतियों, सामाजिक विषमताओं के कारण हनन होने वाले मानव अधिकारों के सूची में और भी बहुत सारे मामले हैं पर आवश्यकता है आम लोगों को उनके अधिकारों के संबंध में बताने की, उनको जागरूक करने, उनके अधिकारों के संरक्षण के लिए माहौल बनाने की ताकि किसी भी व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का हनन न हो। सभी व्यक्ति मानव होने के नाते अपनी सभी अधिकारों का उपयोग कर समानता का जीवन जी सके।

- डा. दिनेश मिश्र

कोठी में पंडित नरेन्द्र की जयंती मनाई गई

हैदराबाद, 5 अप्रैल-(मिलाप ब्यूरो) आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में हैदराबाद के लौहपुरुष पंडित नरेन्द्र की 110वीं जयंती उत्साह के साथ मनायी गयी।

कोठी चौराहे पर आयोजित जयंती कार्यक्रम में डॉ. वसुधा अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ आरंभ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पूर्व विधायक प्रेम सिंह राठौड़ ने पं. नरेन्द्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। पूर्व पार्षद शंकर यादव ने प्रतिमा पर फूलमाला अर्पित की। सभा के प्रधान लक्ष्मण सिंह ने अपने सम्बोधन में पं. नरेन्द्र के जीवन से जुड़े प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि पं. नरेन्द्र के संघर्ष के फलस्वरूप हैदराबाद का मुक्ति संग्राम सफल हुआ। वे अत्यंत साहसी और सत्य के अनुयायी थे। प्रेम सिंह राठौड़ ने कहा कि बचपन से ही हमने पं. नरेन्द्र के प्रभाव में जीवन का सफर शुरू किया। उनका जीवन सदैव संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। सभा के मंत्री विट्ठल राव आर्य ने कहा कि हैदराबाद राज्य को मुक्ति दिलाने में सबसे पहले आर्य समाज ने पहल की। देश भर से आर्यबंधु हैदराबाद आकर सत्याग्रह में शामिल हुए। पं. नरेन्द्र के नेतृत्व में सत्याग्रह सफल हुआ और निजाम को घुटना टेकना पड़ा। उन्होंने यह भी कहा का धर्म का स्वरूप नहीं पहचानने के कारण ही वर्तमान समय में प्राकृतिक आपदा को झेलना पड़ रहा है। पशुओं और वृक्षों का संरक्षण करना मानव का प्रथम धर्म है। कार्यक्रम में आर्य समाज, सुल्तान बाजार, सैदाबाद, ईदी बाजार, शाहअलीबंडा, ओमनगर, चंगीचेर्ला, सिकन्दराबाद, नार्थ लालागुड़ा, बलकमपेट, धूलपेट, दयालबावली, उम्दा बाजार, मण्डापेटा आदि के आर्यबंधुओं सहित अन्य लोगों ने हिस्सा लिया।

क्या विनियोग अनादि है ?

-आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, पोरबंदर

विनियोग के बिना वेदमंत्रों द्वारा कोई भी यज्ञ-याग संपन्न नहीं होता । वेदमंत्रों का कर्मकाण्ड में प्रयोग करना ही विनियोग है । किस मंत्र से क्या कार्य, किस यज्ञ या कर्म में किया जाए-यह ही वस्तुतः विनियोग है । यह विषय चिारणीय है, क्योंकि सारे कर्मकाण्डों की आधारभित्ति इस पर आधारित है । इसके ठीक-ठीक समन्वय न होने कर, मंत्रों द्वारा किये जाने वाले कर्मों की वही स्थिति होती है, जो बढ़ई द्वारा बनाई गयी उस वस्तु की होती है, जिसके चूल पर चूल न बैठे हों । यज्ञ के लिए वैदिक साहित्य में प्रयुक्त 'अध्वर' इसका नाम इसलिए है कि इसमें हिंसा नहीं की जाती, 'ध्वर' का अर्थ हिंसा है । निरुक्त के अनुसार ध्वतिहिंसाकर्मा हिंसार्थक है । जिसमें 'ध्वर' अर्थात् हिंसा न हो, वह अध्वर है । दूसरा शब्द 'मख' है । 'मख' में 'ख' नाम छिद्र का है । अर्थात् दोष ही छिद्र हैं, और उन्हें 'ख' कहा गया है । 'म' शब्द का अर्थ प्रतिषेध है । अर्थात् जिसमें कोई छिद्र एवं दोष न हों, ऐसे कर्म-यज्ञ को मख कहते हैं । गोपथब्राह्मण उत्तरार्थ २१५ में लिखा है कि - मख **इत्येतद्यज्ञनामधेयं छिद्रप्रतिषेध-सामर्थ्यात्, छिद्रं खमित्युक्तं तस्य सेति प्रतिषेधः ॥**

अर्थात् 'मख' यज्ञ का नाम है, और उसमें 'ख' छिद्र का वाचक है, तथा 'म' उसका प्रतिषेधार्थक है । 'इंद्र' चूँकि यज्ञ का महान् देवता है, इसीलिए उसे 'मधवान' कहते हैं । 'मधवान्' शब्द पर शतपथ १४।१।१।१३ में लिखा है कि 'मख' नाम विष्णु एवं यज्ञ का है । यज्ञ वाला अर्थात् यज्ञ का प्रधान देव हेने से इंद्र 'मखवान्' है । इस 'मखवान्' को ही लोग परोक्ष में 'मधवान्' कहते हैं । इससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि 'मख' जो यज्ञ है, उसमें किसी प्रकार का छिद्र नहीं रहना चाहिए । ये छिद्र देवता, छन्दः, उच्चारण, दक्षिणा, विद्वानों आदि क अभाव तथा कर्म और हवि आदि तथा विनियोग में किसी प्रकार का दोष रह जाने से पैदा होते हैं । इनका सर्वथा निवारण करना ही यज्ञ को ठीक-ठीक करना है । यज्ञ के मुख्य देवता का प्रश्न उठा कर गोपथ ३०, ३।२३ पर यों कहा गया है कि- **तदाहुः किन्देवत्यो यज्ञ इति । ऐन्द्र इति ब्रूयात्**

अर्थात् किस देवतावाला यज्ञ है ? इंद्र देवतावाला-ऐसा कहना चाहिए । यज्ञ में छिद्र न होने पाए, इसी भाव को लेकर शतपथ ब्राह्मण १।८।१।२८ में लिखा है कि यज्ञ की रक्षा तब होती है, जब विद्वान् वेदज्ञ ब्राह्मण इसे करते-कराते हैं । इस पर पुनः शतपथ ? ।७।३।२८ में एक आख्यान मिलता कि-यज्ञ ने कहा कि में नगनता से डरता हूँ । फिर तेरी अनग्नता क्या है-अर्थात् मुझे चारों तरफ़ से घेरना चाहिए । इसलिए चारों तरफड से इसे अग्नि से घेरा जाता है । यज्ञ ने कहा, मैं तृष्णा से डरता हूँ । फिर किस प्रकार की तृप्ति तुम्हारी होगी-अर्थात् विद्वानों की तृप्ति से मेरी तृप्ति होगी । अतः यज्ञ में विद्वान् की तृप्ति होने से यज्ञ की तृप्ति होती है । यह एक उपलक्षण मात्र से उदाहरण है । वस्तुतः यज्ञ के सभी अङ्गों के पूर्ण होने मे यज्ञ की पूर्णता है । इसलिए विनियोग ऐसा होना चाहिए कि कोई दोष यज्ञ में न आने पाए । इसी भाव से यजुः सर्वानुक्रम में कहा गया है कि गायत्री आदि छन्दों और देवता आदिकों के ज्ञान के बिना जो यज्ञ आदि इन मंत्रों से करता-कराता है, उसको सफलता इन कार्यों में नहीं प्राप्त होती है । **सर्वानुक्रमणी के वचन ये है- गायत्र्यादीनि एतान्यविदित्वा यो२धीते२नुब्रूते जपति जुहोति, यज्ञते याजयते-तस्य ब्रह्म निर्वीपमं** । इस प्रकार भाव यह स्पष्टतया निकला कि विनियोग पर बुहुत-कुछ आधाति है, और वह ठीक-ठीक होना चाहिए ।

यज्ञ और उसका उदगम

विनियोग पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के लिए यह उपयोगी है कि यज्ञों के उद्भव पर विचार कर लिया जाए । वेदमंत्रों के अर्थ आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधियाज्ञिक भेद से तीन प्रकार के हैं, यह सुधीवर्ग को विदित्त ही है । इनमें प्रथम दो ज्ञान-सम्बन्धी हैं, और तीसरा प्रयोग-सम्बन्धी है । ज्ञान बिना प्रयोग के पूरा नहीं होता है । अतः यहाँ दोनों अर्थों की महत्ता और आवश्यकता है, वहाँ इस तीसरे अज्ञार्थ की महत्ता और आवश्यकता भी है । ऋग्वेद १०।७१।५- **"वाचं शुश्रुवान् अफलामपुष्पाम्"** - इस मंत्र में इन तीनों पक्षों का बीज मिलता है । यास्क ने निरुक्त १।१८ पर लिखा है कि वेदवाणी का पुष्प और फल-यज्ञ और दैवत अथवा दैवत और अध्यात्म हैं । इस वचन से यज्ञार्थ भी वेदमंत्रों का है, यह सुतराम स्पष्ट बात है । फिर यह भी यहाँ मानना ही पडेगा कि यज्ञ भी वेदों से ही निकले । मंत्रों के अर्थ की संगति के लिए आचार्यों ने चार प्रकरण माने हैं-यज्ञ, दैवत, अध्यात्म और नित्येतिहास । इनमें भी यज्ञ एक प्रकरण है, और उसका भी उद्भव वेदमंत्रों में से ही है । इसके अतिरिक्त विशेष ध्यान देने की बात यह है कि वैदिक सृष्टि-विज्ञान और सुष्टि की उत्पत्ति का क्रम यज्ञ पर आधारित है । प्रकृति से महत्तत्व और उसके तन्मात्राओं तक के कार्य जब उत्पन्न हो जाते हैं, तब पीछे देवों के यज्ञ द्वारा सृष्टि का विकास चलता है ।

यज्ञेन यज्ञ यजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।

ऋ०, २।३।२३

यह मंत्र इसी भाव की व्यक्त करता है ।

देवा यद्यज्ञंतन्वाना अवध्नन् पुरुष पशुम् ।

यजु०, ३१।१५

यह मंत्र भी उसी भाव पर प्रकाश डालता है वेदों में विराट् की उत्पत्ति का वर्णन इस महान् यज्ञ के रहस्य का प्रतिपादक है । विश्व में 'देवी' शक्तियों का महान् यज्ञ हो कर सृष्टि का उत्पादन होता है । संसार की कारणभूत सभी दैवी शक्तियाँ इस यज्ञ का संपादन करती हैं, और वह यज्ञ बराबर चल रहा है । वैदिक छन्दः भी उसमें वेपनों के रूप में विद्यमान हैं । इस महान् सृष्टियज्ञ को मनुष्य कर नहीं सकता, वह तो उसकी प्रतिकृति के रूप में अपने यज्ञों का विस्तार करते हैं । यज्ञ तो परमेश्वर का संसार में चल रहा है । वही इस यज्ञ का कर्ता है । हम मानव-यज्ञ करते नहीं, अपितु उस यज्ञ को देख कर अपने इन छोटे यज्ञों को उसमें मिलाने के लिए उनका विस्तार करते हैं । ऋग्वेद १० मंडल का १३० सूक्त इस संसार-यज्ञ का बहुत विशद वर्णन करता है । उसका प्रथम मंत्र इस विस्तृत यज्ञ पर स्पष्टता से प्रकाश डालता है । मंत्र इस प्रकार है-

यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत एकशतं देवकर्मेभिरायत ।

इमे वयन्ति पितरो य आययुः प्रवयाप वयेत्यासते तते ॥

इस विराट्रूपी महान् यज्ञ को ३४ देवता फैला रहे हैं - इसका वर्णन यजुर्वेद ८।६१ में मिलता है मंत्र इस प्रकार है - चतुर्स्त्रिशत् तन्तवो ये वितत्रिरे य इमं यज्ञं स्वधया ददन्ते ॥

अगले ६२ वें मंत्र मे बतलाया गया है कि यज्ञ का ही दोह-रस या शक्ति चारों ओर फैलीं है । वही अष्टधा दिशाओं और तद्गत पदार्थों को विस्तारित करता है - **यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा सो अष्टधा दिवमन्वाततान**-इत्यादि । इस चलते हुए महान् यज्ञ से संसार के सब पदार्थ उत्पन्न होते हैं । वेदों का प्रसिद्ध पुरुषसूक्त इस यज्ञ के रहस्य पर विशेष प्रकाश डालता है । इस दवों के यज्ञ द्वारा होने वाली सृष्टि का वर्णन में पृथक् लेख में लिख रहा हूँ, जो समय पर प्रकाशित होगा । यह वैज्ञानिक रहस्य को खोलने वाला है । यास्क ने - **यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवाः** - इस मंत्र पर लिखा है कि **द्युस्थानो देवगण इति नैरुक्ताः - पूर्व देवयुगमित्यार-व्यानम्** । अर्थात्, द्युलोक में रहने वाले देवगण हो यहाँ पर निरुक्तकारों को देव शब्द से अभिप्रेत है । कल्पित इतिहास की दृष्टि सृष्टि का प्राक्कालिक देवयुग है । इस देवयुग का वैज्ञानेक वर्णन-**देवानां पूर्वे युगे असतः सदजायत** - इस ऋग्वेदीय १०।७२।२ मंत्र तथा इस पूरे सूक्त से मिलता है । अदिति-प्रकृति से किस प्रकार देवों-दिक्शक्तियों की उत्पत्ति हुई, और पुनः इन्होंने इस संसार के महान् सत्र को कैसे चालू किया, इसका मनोज्ञ वर्णन वेदों में मिलता है ।

इस महान् यज्ञ की नकल करते हुए हम अपने यज्ञों का विस्तार करते हैं । हम यज्ञ करते नहीं, यज्ञ करता तो परमेश्वर है, हम केवल विस्तार करते हैं । यही कारण है कि यज्ञ के साथ 'कृञ्' का प्रयोग नहीं मिलेगा । सर्वत्र वेदों में 'तनु' धातु का ही प्रयोग मिलेगा । येन यज्ञस्तायते (यजुर्वेद ३४।४) **देवा यद्यज्ञंतन्वानाः** (यजु०, ३१।१५,) **य एष यज्ञस्तायते** (श० ५।२।२।१८), **यज्ञमेवैतत् वितनोति** (श० १।१।१।१२), **तस्मै त्वया यज्ञं चितन्वते** (ऐ० १।१।४), **देवा वै यज्ञमतन्वत** (ऐतरेय ६।२।१) इत्यादि स्थलों में सर्वत्र विस्तार करने की ही बात लिखी है ।

ये यज्ञ मनुष्यों द्वारा विस्तारित किये जाते हैं, उस महान् यज्ञ में बैठाने के लिए । यदि इनमें कोई कमी रह जाए, तो फिर ये उसमें अच्छी तरह बैठ नहीं सकते । मनुष्य इन यज्ञों का विस्तार किस प्रकार करता हैं, इसकी धारणा वेद इस प्रकार देता है :

यज्ञे यज्ञे स मर्त्यो देवान् त्सपर्यति । यः सुम्नैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासत्येनान् ।। ऋ०, १०।९३।२

अर्थात्, जो मनुष्य ज्ञान से श्रोत्रिय हो जाता है, वह यज्ञों में इन देवों का संगतिकरण करता है, अथवा इन्हें तुष्ट करता है । इस मंत्र से देवों को यज्ञ-देवता बना कर प्रयोग करने और यज्ञ को करने की भावना मिलती है । विष्णु यज्ञ का महान् देव है, और महान् शक्तियों की प्राप्ति के लिए उसके निमित्त यज्ञ का विस्तार किया जाता है । इस उद्देश्य को अथर्ववेद १७।१।१८ में इस प्रकार दिखलाया गया है :

त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्व लोकस्त्वं प्रजापतिः । तुभ्य यज्ञा वितायते तुभ्यं जुह्वाति जुह्वस्तवेद्विष्णो बहुधा वीर्याणि । त्वं नः पृणीहि पशुभिविश्वरूपंः सुधायाम् मा धेहि परमे व्योमन् ।।

हे विष्णु ! तू ही इन्द्र आदि है । तेरे लिए ही यज्ञ का विस्तार होता है । तुम्हारे निमित्त यज्ञ करने वाले विविध शक्तियों को प्राप्त करते हैं । इस मंत्र से प्रेरणा मिलती है कि विष्णु देवता के निमित्त यज्ञ करना चाहिए, कही हुई सफलताओं की प्राप्ति के लिए । यज्ञ में देवताओं को निश्चित करके यज्ञ करना चाहिए । बिना देवता के यज्ञ नहीं हो सकता । यह दृष्टि अथर्ववेद १९।५७।६ में लिखे इस मंत्र से मिलती है - **यो देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्योहव्यं क्रियते भागधेयम् । इमं यज्ञं सहपत्नी भिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम्** ।। अथर्व वेद १९।१।१-२ में पुनः यह भाव दीखता मिलता है कि इस यज्ञ को वाणी को बढ़ाते हुए अर्थात् मंत्रोच्चार के साथ हवि से हम पूर्ण करें । इससे मंत्र बोल कर हवि से यज्ञ करने का विधान व्यक्त होता है । मंत्र इस प्रकार है - **यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि** ।। अथर्ववेद १५।६।१४-१५ में आहवनीय, गार्हपत्य, दक्षिणाग्नि, यज्ञ, यजमान, आदि का वर्णन आया है । वहीं पर ९वें मंत्र मे ऋचाएँ, यजु०, साम० और ब्रह्म का भी वर्णन मिलता है । पुनः अथर्ववेद के उच्छिष्टसूक्त ११।७।५-१२ मंत्रों में - यज्ञाङ्ग, राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टीम, अर्क, अश्वमेध, अग्न्याधेय, दीक्षा, उत्सन्न यज्ञ, सत्र, अग्निहोत्र, दक्षिणा, इष्ट, पूर्त, एकरात्र, द्विरात्र, चतूरात्र, पञ्चरात्र, षड्रात्र, पोडशी, विश्वजित्, साह्वातिरात्र, प्रतीहार, अभिजित् तथा द्वादशाह आदि यज्ञ, यज्ञाङ्गों का वर्णन मिलता है । इसके बाद फिर अथर्व ७।५४।१ में ऋच् और साम से कर्मों को करने का वर्णन मिलता है । यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि मंत्रों मे ही यज्ञों को करना चाहिए । उदाहरण के लिए, मंत्र इस प्रकार हैं -

ऋच साम यजामहे यभ्यां कर्माणि कुर्वते । एते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु यच्छतः ।। **इमे त इंद्र ते वयं पुरुटुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभुवसो०** ।। (अथर्ववेद २०।१५।४) में यह बतलाया गया है कि हम अपने सभी शुभ कार्यों को परमेश्वर के नाम के साथ प्रारंभ करें । यही मंत्र संस्कार आदि शुभ कर्मों में ईश्वरस्तुति आदि करने का ज्ञापक मालूम पड़ता है । **यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्त्तो अग्नये । यो नमसा स्वघ्वरः** (ऋग्वेद ८।१९।५) में बतलाया गया है कि जो मनुष्य समिधा से, आहुति से और वेद से अग्नि को यज्ञ करता है, वह आगे बतलाये छठे मंत्र के अनुसार अश्व, यश आदि को प्राप्त करता है, और उसके इन्द्रियजन्य तथा शरीरजन्य अयुश और बुराइयाँ नहीं होतीं । इस मंत्र का अर्थ संग्रहात्मक करने से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि वेदमंत्रों, आहुति और समिधा से, यज्ञ का संपादन करने से महान् फल होता है । कृष्ण का गीता में यह कहना भी सार्थक ही है कि यज्ञ के साथ परमेश्वर ने प्रजा को सर्जन कर कहा कि इसको वह करके अपनी शुभ-कामनाओं की पूर्ति करे । **समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहातन** ।। अर्थात् समिधा से अग्नि को जलाओ, घृत से प्रतिबोधित करो, और पुनः इसमें सामग्री डालो । यह मंत्र भी यज्ञ करने के प्रकार को बतलाता है । ऋग्वेद १०।१२८।७ में लिखा है कि इस यज्ञ की अश्विनी, बृहस्पति, आदि देवगण रक्षा करें तथा यजमान की भी रक्षा करें । मंत्र इस प्रकार है - **इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात्०** ।। ऋग्वेद २।११।२१ में **बृहद्वदेम विदथे सुवीराः** ।। वाक्य आया है । इसका अर्थ यह है - हे इन्द्र ! यज्ञ में अपने सन्तान वाले हम तेरा गुणगान करें । इस प्रकार इन पूर्वोक्त प्रमाणों के साथ विचार करने पर विषय का परिणाम यह निकलता है कि यज्ञों का उद्भव वेदों से हुआ । हम संसारी यज्ञ का ही विस्तार करते है, और वह हमारा वेदोद्भूत यज्ञ वेदमंत्रों द्वारा ही होता है ।

विनियोग का प्रारंभ कैसे हुआ ?

वेदों में यज्ञों का विधान है, वे वेदमंत्रों से करने चाहिए, और उनमें देवताओं का ठीक-ठीक सन्निवेश होना चाहिए, तभी वे करने वाले के चाहे फलों को सफल कर सकेंगे, इत्यादि बातों का परिज्ञान हो जाने पर इस यज्ञों, यज्ञाङ्गों और कर्मों में किस प्रकार मंत्रों का सम्बन्ध जोड़ा जाए-यह विचारधारा उठी । वेदज्ञ ऋषियों ने मंत्रों का सम्बन्ध यज्ञ-कर्मों और उनकी भिन्न-भिन्न क्रियाओं के साथ

जोड़ा। वे ही आज विनियोग कहे जाते हैं। यज्ञ की प्रक्रिया को सिद्ध करने के लिए याज्ञिक विद्वानों ने तीन प्रकार के यज्ञ-विज्ञानों का वेदों से अनुसंधान किया। वे हैं-मंत्र, कल्प और ब्राह्मण। इनमें से कल्प वेद के षडङ्ग-विज्ञानों में भी आता है। जैसे ज्योतिष आदि विज्ञान है, वैसे ही ये कल्प भी विज्ञान हैं। इस विज्ञान का कार्य है मंत्र और उसके अर्थ का सम्बन्ध देख कर कर्म में उसके उद्देश्यानुसार विनियुक्त करना। मंत्र में तात्पर्य संहिता-मंत्रों से है। वे जब तक संहितारूप में है, तब तक पदवाक्य, छन्दः आदि का स्पष्टीकरण न होने से यज्ञ में प्रयुक्त नहीं हो सकते। छन्दः आदि की दृष्टि से मंत्रों का वह विभाग मंत्र है, जो यज्ञ में अपने तात्पर्य को बतालाने में समर्थ हो-अर्थात् वेदमंत्र। कल्प वह विज्ञान है जिससे मंत्रों का कर्मों में विनियोग किया जाता है। ब्राह्मण वह विज्ञान है, जिससे यज्ञ के रूप की समृद्धि, उसके उद्देश्य की सिद्धि, और उसकी प्रशंसा द्वारा उनके प्रति लोगों में श्रद्धा-उत्पादन का कार्य होता है। प्रायः अर्थवाद इसी उद्देश्य को पूरा करते हैं। चतुर्थी व्यावहारिकी वाणी को इनके साथ मिला कर याज्ञिक लोग **चत्वारि वाक् परिमिता पदानि-** का अर्थ इन्हीं को लेते थे। निरुक्त दैवतकाण्ड में इस मंत्र पर याज्ञिक मत को देखने पर यही धारणा बनती है। **मंत्रः, कल्पो, ब्राह्मणं-चतुर्थी व्यावहारिकीति याज्ञिकाः-**ये यास्क के शब्द हैं। यहाँ यह सन्देह होगा कि ब्राह्मण आदि को भी वेद में होना इससे तो सिद्ध होगा। इसका समाधान यह है कि ये विधाएँ हैं-प्रसिद्ध ब्राह्मण और कल्प आदि ग्रंथ नहीं। जैसे ज्योतिष का अर्थ ज्योतिष की पुस्तक नहीं, ज्योतिष-विज्ञान है, और उसका वर्णन वेदों में मिलने से ज्योतिष-ग्रंथों का वर्णन नहीं माना जाता, वैसे ही कल्प का वर्णन होने से कल्पविज्ञान का वर्णन होगा, न कि कल्पसूत्रों का। यह वह विज्ञान है, जिसके आधार पर कल्पशास्त्र की रचना हुई है। अथर्व० १५।६।११ में इतिहास, पुराण, गाथा, नाराशंसी आदि का वर्णन मिलता है, इससे इन प्रचलित इतिहासों का ग्रहण नहीं। इतिहास से तात्पर्य, देवों से सृष्टि किस प्रकार पैदा होती है सिका विज्ञान। पुराण के अर्थ सृष्टि-विज्ञान के हैं। गाथा वे ऋचाएँ हैं, जो संवाद के रूप में मालूम पड़ती हैं, और व्यक्तिविशेष से सम्बन्ध नहीं रखतीं। नाराशंसी वे मंत्र हैं, जिनमें मानव-संबंधी बातें कही गयी हैं। ये भी व्यक्ति विशेष से सम्बन्ध रखने वाले नहीं। नाराशंस नाम यज्ञ का भी है। ऐसे सभी नाराशंसी कहलाएँगे। ऐसे ही पूर्वोक्त कल्प और ब्राह्मण के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए। इस विषय में संशय न रहे, इसलिए पुराण का अर्थ उदाहरणतः मैं अथर्ववेद से ही देता हूँ। अथर्व० ११।८ का ७ मंत्र इस प्रकार है - **येतआसीद्भूमिः पूर्वा यामद्धातय इद्विदुः। यो वै तांविद्यान्नामथासमन्येत पुराणवित्**॥ पुनः अथर्ववेद ११।७।२४ में **पुराणं यजुषा सह** पाठ आया है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुराण से सृष्टिविद्या अभिप्रेत है। यजुर्वेद का ३१-३२ वाँ अध्याय पुराण-विज्ञान है। इससे यह समझना चाहिए कि **पूर्वोक्त ये कल्प और ब्राह्मण एक प्रकार के विज्ञान हैं। यज्ञ में इन विज्ञानों का तात्पर्य है।**

कल्प और ब्राह्मण-विज्ञानों को जानने वाले ऋषियों ने कल्पशास्त्र और ब्राह्मणग्रंथों का प्रणयन किया। इनमें यज्ञ के समृद्ध करने के सभी प्रकारों को उन्होंने बताया। साथ-ही-साथ मंत्रों का विनियोग निर्धारित किया। यास्क कहता है कि **पुरुष विद्यानित्यत्वात कर्म संपत्तिर्मंत्रो वेदे-** अर्थात् पुरुष की विद्या अनित्य होने से कर्म की सिद्धि करने वाले मंत्र वेद में है। अतः इन मंत्रों से कर्म की सिद्धि कल्पकारों ने की। उवट कहीं का प्रमाण उद्धृत करता है - **तत एत परमेष्ठा प्रजापत्यो यज्ञमपश्यद्यदर्शपौर्णमासौ -** अर्थात् परमेष्ठी प्राजापत्य ने जो यज्ञ देखे, वे ही दर्शपौर्णमास हैं। फिर वह दूसरा प्रमाण देता है - **प्रजापतिः प्रथमां चितिमपश्यत्-**अर्थात् प्रजापति ने प्रथम चिति का आक्षात् किया। इससे यह ज्ञात होता है कि ऋषियों ने मंत्रों में यज्ञों का अनुसंधान कर मंत्रो के विनियोग निर्धारित किये। यजुर्वेद के प्रथम तथा द्वितीय अध्याय दर्शपौर्णमास के हैं, यह विनियोग से भी मिलता है। मुण्डकोपनिषद् में ठीक ही लिखा है - **मंत्रपु यानि कर्माणि कबयो२पश्यन् तानि त्रेतायाम् बहुधा सन्ततानि-** अर्थात् वेदमंत्रों में कान्तदर्शियों ने जिन कर्मों का साक्षात् किया, वे वेता में विस्तारित किये गये। इस प्रकार विनियोग मंत्रों मे देख गये कर्मों के साथ किये गये। इन मंत्रों की भी संज्ञा चार प्रकार की याज्ञिकों ने बांधी है, जो श्रौतकर्ण में बोले जाते है, वे है- **करणमंत्र, क्रियमाणानुवादिमंत्र, अनुमंत्रणमंत्र,** औ **जपमंत्र**। कल्पकारों के द्वारा इस प्रकार की मर्यादा खड़ी की जाने पर याज्ञिक विनियोगों का अत्यधिक प्रचार हुआ। प्रातिशारव्य, व्याकरण और मीमांसा आदि को याज्ञिकों के इस नियम को स्वीकार करना पड़ा है। प्रकृतिस्वर, तान अथवा भाषिक स्वरों का भेद करना कल्पकारों की यज्ञ-प्रक्रिया के महत्त्व को स्वीकार करके ही हुआ है। अष्टाध्यायी का **यज्ञकर्मण्यजपन्यूयूङखसामसु,** यजुः प्रातिशारव्य का **तान ऐकस्वयंम्** कात्यायन के श्रौतसूत्र से इस विषय में समता खाते हैं। कात्यायन ने भी अष्टाध्यायी के एक श्रुति को अपने श्रौतसूत्र के परिभाषा-प्रकरण में दिखलाया है। दोनों वेदाङ्ग यहाँ पर एक दूसरे के समर्थक हैं। मीमांसा में भी एक-श्रुति स्वर को यज्ञ में बिना ननु-नव के माना गया है। यास्क ने विनियोगों का वर्णन बहुधा नहीं किया। **कारण यह है कि यह उसके शास्त्र के विषय नहीं। अर्थ से विनियोग की निर्धारणा में सहायता मिलती है, परन्तु विनियोग अर्थ करने में परम सहायक हो, यह ठीक नहीं।** विनियोग को ले कर वेदमंत्रों के अर्थ लगाने वाले आचार्यों को इसीलिए धोखा भी खाना पड़ा है। यहाँ पर यह स्मरण रखने की बात है **कि-ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्** । - इस ऋग्वेदीय १०।७१।११ मंत्र पर यास्क का **इति ऋत्विक्कर्मणां विनियोगमाचष्टे** - वाक्य विनियोग का वर्णन नहीं करता। यहाँ विनियोग का अर्थ ऋत्विजों का कार्य है। जो कार्य ऋत्विजों का है, उसका यहाँ वर्णन है। विनियोग तो तब होता, जब इस मंत्र से ऋत्विजों की नियुक्ति की जाती। **कर्मणां विनियोगम्-**यहाँ इसी अभिप्राय से यास्क ने षष्ठी का प्रयोग किया है, अन्यथा **कर्मणि विनियोगम्-**ऐसा लिखना चाहिए था। यह मंत्र जिस सूक्त का है, वह सूक्त भी विनियोग-रहित है। फिर यहाँ विनियोग का प्रसंग ही क्या है। कल्पसूत्रकारों ने भी कर्मों के भेद से मंत्रों के विनियोग में भेद किये हैं। गृह्यकर्मों में। जो मंत्र गृह्यसूत्रों में, एक कर्म में नियुक्त है, वही श्रौतों में उनसे भिन्न कर्मों में विनियुक्त है। एक ही वेद या शाखा से ये दोनों कर्म उन्हीं मंत्रों के भिन्न-भिन्न विनियोग के आधार पर संपन्न किये गये हैं। शाखाओं के भेद से इन गृह्यसूत्रों और श्रौतों के विनियोगों में भी भेद है। इसी प्रकार ऋग्वेदीय और यजुर्वेदीय आदि भेदोंसे भी इन कल्पग्रंथों के विनियोगों में भेद है। वानप्रस्थ, सन्यास आदि न श्रौत और न गृह्य हैं, ये स्मार्त हैं। अथः इनकी क्रियाओं का विनियोग इन दोनों प्रकार के सूत्रों से अतिरिक्त, धर्मसूत्रों के नियम को स्वीकार कर, कर लिया गया है। यहाँ अन्त में परिणाम यह समझना चाहिए कि ऋषियों ने वैदिक यज्ञों को अर्थानुरोधेन देख कर उनके साधक कर्मों में मंत्रों का विनियोग किया है,

जो काव्यसूत्रों और ब्राह्मणों में मिलते हैं।

देवताओं के भेद में विनियोग का भेद एवं विनियोगों से देवता-भेद

देवता क्या है ? इसका लक्षण करने वाले जो वचन प्राप्त हैं, वे निम्न हैं :

(कात्यायन सर्वानुक्रमणी, २।४)

४. यत्काम ऋषिर्मन्त्रद्रष्टा वा भवति-यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छता स्तुतिःप्रयुज्यते- अथर्ववेदीय सर्वानुक्रमणी।

५. अपि वा शब्दपूर्वकत्वात् याज्ञकर्मप्रधानं स्याद्गुणत्वे देवताश्रुतिः।

(मीमांसा, ९।१।४)

६. यस्यै देवतायै हविर्गृह्यते सा देवता न सा यस्यै न गृहयते।

(श० ९।४।२।१५)

७. यां वै देवतामृगभ्यनूक्ता यां यजुः सैव देवता सर्क सा देवता तद्यजुः।

(शतपथ ६।५।१।२)

८. यस्य हि शब्दो हविषा तादर्थ्येन सम्बध्यते सा देवता।

(शवर-भाष्य १०।४।३)

इन सभी लक्षणों को विचारने पर ४ पर्यंत आये लक्षणों से यह भाव निकलता है कि वेदमंत्र का प्रतिपाद्य विषय देवता है, और विनियोज्य विषय भी। ५,६,८ वें का तात्पर्य है कि विधि-शब्द-मात्र जिसके साथ हविः का अर्थ देवता है, मंत्र भी स्वयं देवता हैं। यास्क के लक्षण में उसके दैवतकाण्ड में कहे गये सभी वाद-अर्थात् मंत्र का विषय-देवता, विनियोज्य विषय-देवता, यज्ञ, यज्ञाङ्गदेवता, प्रजापति, यथाकाम, नाराशस, विश्वेदेव-प्रायोवाद-आ जाते है। अथर्ववेदीय सर्वानुक्रमणी के प्रमाण से केवल विनियोज्य विषय ही देवता ठहरता है। मीमांसा आदि भी शब्दमात्र को देवता मानते हैं। इस प्रकार देवताओं में भेद होना स्वाभाविक है। देवताओं से मंत्र के विनियोग में भेद हो सकता है, और विनियोग से देवता में भी भेद हो सकता है। यह देवताओं का सारा भेद यज्ञ-प्रक्रिया में, ही है, क्योंकि वहां शब्दमात्र देवता हैं ष ऋषि दयानन्द इन सबको मानते हुए भी, यह मानते हैं कि यज्ञ में तो मंत्र और ईश्वर ही देवता हैं। ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका में इसका प्रतिपादन है। इस परस्पर परिवर्तन से यह पूर्णतयाध्वनित होता है कि विनियोग भी परिवर्तन होने वाले हैं, वे निश्चित नहीं। शब्दमात्र ही जहाँ देवता है, वहाँ उसका विनियोग भी वैसा ही अस्थिर होगा।

विनियोग नियत अनादि और अपरिवर्तनीय नहीं

पूर्वोक्त पंक्तियों में देवता-भेद और विनियोग का भेद बतलाया गया, अब विनियोग की परिवर्तनीयता पर विचार करना अपेक्षित है। विनियोग वस्तुतः परिवर्तनीय हैं, निश्चित नहीं। वे अनादि तो कहे नहीं जा सकते, क्योंकि एक ही मन्त्र भिन्न-भिन्न कार्यों में विनियुक्त हैं। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि यदि सभी यज्ञ और उतने ही हैं, जितने इन श्रौत और गृहयसूत्रों में लिखे हैं, तब तो नये विनियोगों का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। परन्तु, यदि इनके अतिरिक्त उत्तम और युक्तियुक्त कर्म हैं, तो फिर उनके लिए भी वेदमन्त्रों का विनियोग युक्तियुक्त ढंग पर किया जा सकता है। ऐसा करने में यह सुतराम् सिद्ध होगा कि विनियोग नित्य नहीं। श्रौतसूत्रों में गृहचकर्मों का विनियोग नहीं, और गृहसूत्रों में श्रौत का विनियोग नहीं। दोनों कर्म पृथक्-पृथक् हैं। परन्तु एक ही मन्त्र का श्रोत में अन्य कर्म में विनियोग है, और गृहय में अन्य कर्म में। यदि विनियोग नित्य होता, तो ऐसा कैसे संभव हो सकता। कर्णवेध-संस्कार का वर्णन श्रौत का तो विषय ही नहीं, परन्तु गृहयसूत्रों में नहीं है, और न इसमें किसी मन्त्र का विनियोग ही है। आयुर्वेदादि ग्रंथों में इनका वींधना लिखा है। कहीं कान और कहीं नाक का वींधना इसमें होता है। आचार्य दयानन्द ने इस संस्कार की आवश्यकता को देखते हुए इसका विधान किया और इसमें **भद्रं कर्णेभिः** (ऋग्वेद १।८९) सूक्त का मन्त्र तथा ६।७५ सूक्त को - **वक्ष्यन्तीवेदा**-मन्त्र का विनियोग किया है, और है भी युक्तियुक्त। इन दोनों मन्त्रों के देवता कमशः यज्ञ और ज्या हैं। इस दृष्टि से कर्णवेध का इन से बनना नहीं देखा जाता, परन्तु विनियोग इनका है। पुत्रेष्टि को ही लीजिए, इसका वर्णन यजुर्वेद के अध्यायानुसार जो यज्ञ आदि विनियुक्त किये जाते हैं, उनमें नहीं आता, परन्तु पुत्रेष्टि यज्ञ का प्रकरण उठा कर न्यायदर्शन में वेदों की प्रामाणिकता सिद्ध की गयी है। **कर्म कर्तृसाधनवैगुण्यात्-** इस सूत्र का वात्स्यायन-भाष्य देखा जा सकता है। विनियोग-नित्यता स्वयं निनियोगकार श्रौतसूत्रकारों और गृह्यसूत्रकारों को भी स्वीकार्य नहीं मालूम पड़ती है। श्रौतसूत्रों में जिन मंत्रों का विनियोग श्रौत-कर्मों में है, इन्हीं मन्त्रों का गृह्यसूत्रों में गृहचकर्मों में विनियोग है। यदि विनियोग नित्य है, तो श्रौतकर्म में विनियुक्त मन्त्रों का गृहयकर्मों में विनियोग होना ही नहीं चाहिए, और नित्यता के इस पक्ष को मान लेने पर पुनः गृहयकर्मों के लिए मन्त्र ही नहीं रह जाएँगे, क्योंकि लगभग अधिकाधिक मन्त्रो का विनियोग श्रौतसूत्रों में पाया ही जाता है। **इषे त्वोर्जे त्वा** यजुः ? का प्रथम मन्त्र काव्यायन श्रौतसूत्र ४।२।१-३ के अनुसार शाखाछेदन में विनियुक्त है। परन्तु ऋषि दयानन्द ने इसका विनियोग स्वस्तिपाठ में किया है। दूसरी तरफ़ सायण काण्वसंहिता पृष्ठ ११५ पर लिखता है। यहाँ पर बौधायन ने दोनों वाक्यों को एक मन्त्र मान कर शाखाछेदन में विनियुक्त किया है। **तामाच्छिनत्ति इषे त्वोर्जेत्वेति-** आपस्तम्ब ने इनको दो भिन्न-भिन्न मन्त्र-मान कर **इषे त्वा** से शाखाछेदन करे और **उर्जेत्वा** से झुकाना चाहिए। खाण्व-शिष्य मन्त्र-भेद और विनियोग-भेद को आश्रय करके इस प्रकार कहते हैं : **तामाच्छिनत्तीषेत्वेति-** अथवा वृष्टि के लिए कहा गया है : **इषे त्वोर्जे त्वा,** क्योंकि वृष्टि से ही ऊर्क रस पैदा होता है। वस्तुतः यह मन्त्र अनादिष्टदेवताक होनो से इंद्र अथवा माहेंद्र देवता वाला होगा, क्योंकि प्रधान-देवता इंद्र अथवा माहेंद्र हैं। ऋषि दयानन्द ने इसका सविता देवता माना है। **विश्वानि देव सवितः** और **तत्सवितुर्वरेण्यम्** - ये दो मन्त्र कात्यायन श्रौतसूत्र ११।७ के अनुसार पुरुषमेघ आहवनीय में विनियुक्त हैं। परन्तु इनका विनियोग स्वामी दयानन्द जी महाराज ने प्रार्थना और सन्ध्या जैसे उपासना-कर्म में किया है। साथ ही इनका, इस प्रकार की आहुति देने में विनियोग न होते हुए भी, उन्होंने अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' और 'संस्कारविधि' ग्रंथों में सायं और प्रातःकाल की आहुतियों के साथ इन मन्त्रों से आहुतियाँ देना लिखा है। 'सत्यार्थ प्रकाश' तृतीय समुल्लास में लिखा है - यदि अधिक आहुतियाँ देनी हों, तो इन दो मन्त्रों से दें। गायत्री-मन्त्र बौधायन में यज्ञोपवीत-संस्कार में ब्रहमचारी को गायत्री के उपदेश देने में विनियुक्त है (पृ० ४४)। पुनः पृ० २३७ पर अग्नि के दूसरे भाग में जायापती को इस **तत्सवितुर्वरेण्यम्** मन्त्र को बोल कर खाना चाहिए। पुनः पृ० २७८ पर इसी का, पात्र को ले कर ब्रह्मपात्र से जोड़ने में विनियोग किया गया है। कौषीतकी १।३ में **तत्सवितुर्वरेण्यम् इत्येतां सप्रणवां अर्धर्चशोऽनवानम्** - ऐसा लिखा है। तथा आगे उसी स्थल पर विवाह-प्रकरण में प्राशन में विनियुक्त है। तथा आश्वलायन श्रौतसूत्र ८।१ में लिखा है कि वैश्वदेवशस्त्र में प्रतिपत्तृच के ये प्रथम और द्वितीय हैं। **देव सवितः** यह मन्त्र यजुर्वेद मे तीन बार आया है। यजुः ९।१ में यह मन्त्र कात्यायन श्रौतसूत्र १४।११ के अनुसार वाजपेय में विनियुक्त है। पुनः यजु०

३११ में पुरुषमेध में विनियुक्त है । फिर यजुः ११।७ में अग्निचयन में विनियुक्त है । यहाँ तक ही मन्त्र का, स्वयं एक ही श्रौतसूत्रकार ने भिन्न-भिन्न कार्यों में विनियोग किया है । इसके अतिरिक्त ऋषि दयानन्द ने वेदी के चारों ओर जल छिड़कने में इसका विनियोग किया है । द्राह्मायण गृहचसूत्र २।२।१९ और बौद्धायन १।३।२५ तथा अन्य गृह्मसूत्रों में भी ऐसा ही लिखा है । इसी भाँति ऋग्वेदीय १।२४।११, मन्त्र **तत्त्वा यामि** आश्वलायन श्रौतसूत्र २।१७ के अनुसार वरुणप्रघासों चातुर्मास्यों में वरुण सम्बन्धी हविर्याज्य है । इसी का आचार्य दयानन्द ने सामान्य प्रकरण में विनियोग किया है । गृह्मसूत्रों में भी ऐसा है, और लगभग सभी बड़े संस्कारों-चूड़ाकार्य, विवाह आदि-में इससे विशेष आहुतियाँ देनी लिखी हैं । ऐसे ही **नवो नवो भवति जायमानः** - यह ऋग्वेद १०।८।१९ का मन्त्र है, इसका विनियोग दूणाश में चन्द्रमा सम्बन्धी चरु में है । परन्तु, मानवश्रौतसूत्र में यह मन्त्र राजयक्ष्मगृहीतेष्टि में विनियुक्त है । शांख्यायन १४।३२।९ में भी दूणाशकतु में चान्द्रमसचरु में ही इसका विनियोग है । परन्तु, पापयक्ष्मगृहीत के लिए अमावस्या में आदित्यचरु के निर्वाप में यह उपयुक्त है । यदि विनियोग निश्चित और नित्य होता, तो यह भिन्न-भिन्न विनियोग क्यों ? **परं मृत्यो** ऋ० (१०।१८।१) यह मन्त्र मानवगृह्यसूत्र २।१८।२ में पुत्रकामेष्टि में विनियुक्त है । यजुर्वेद ३५।७ में यही मन्त्र कात्यायन २१।४।७ के अनुसार पितृमेध में विनियुक्त है । यही पारस्कर गृह्यसूत्र के १।५ के अनुसार विवाह सम्बन्धी अभ्यातन होम में विनियुक्त है । **मृत्युदेवताक** - यह मन्त्र विनियोग में कितने भेद के साथ प्रयुक्त है । यहाँ तक कि जो मन्त्र गृह्मसूत्रों में अन्त्येष्टि, आदि संस्कारों में विनियुक्त है, वही श्रौतों में अन्य कर्मों में विनियुक्त है । यजुर्वेद का ४० वाँ अध्याय ज्ञानकाण्ड है । कुछ लोग कहते हैं कि इसका कर्म में विनियोग नहीं होना चाहिए । परन्तु ऋषि ने **अग्नेनय, सुपथा राये** (यजु० ४०।१६) मंत्र को दैनिक अग्निहोत्र में आहुति देने में लगाया है । **शन्नोदेवी** - इस मंत्र का तै० ब्राह्मण १।२।१।१ में विचार करते हुए भट्टभास्कर लिखते हैं - **अद्भिरवोक्षति शन्नोदेवीरिति गायत्र्या** तै० ब्रा० २।५।८।५ पर इसे प्रवर्ग्य के अभिषव प्रकरण में लगाया गया है । तैत्तिरीयारण्यक ४।४२।४ में यह उपासना-प्रकरण में विनियुक्त है । कौशिक गृह्यसूत्र मे ९।७ टिप्पण में शान्त्युदकारम्भ में प्रयुक्त करने का विचार दिया गया है । आपस्तम्ब श्रौतसूत्र ५।४।१ में लिखा है कि इससे जल से अवोक्षण कर उदीचीनवंश को शरण करना चाहिए । लाटचायन श्रौतसूत्र ५।४।१ पर अपःस्पर्श में यह विनियुक्त है । शांख्यायन ४।२१।१९ में इस मंत्र से छाती पर जल प्रोक्षण का निनियोग है, और हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र में ब्रह्मचारी के उपनयन में मार्जन-कर्म में यह विनियुक्त है । ऐसे ही ऋग्वेद ४।३९।६ के **दधिकाव्णो अकारिबम्** मंत्र के विनियोग की हालत है । यह मंत्र ऋग्वेद सायण भाष्य में लैङ्गिक विनियोगवाला कह कर छोड़ दिया गया है । अथर्ववेद सायण-भाष्य में सोमयाग में इससे आग्नीध्रीय में दधिभक्षण के लिए कहा गया है । यजुर्वेद में महीधर भाष्य में महिषी को उठा कर पुरुष इसे पढ़ें ऐसा लिखा है । आश्वलायन श्रौत्रसूत्र ६।१२।१२ में आग्नीध्रीय में दधिद्रपसों को खाने मे इसका विनियोग है । तैत्तिरीय संहिता १।५।११।४ और ७।४।१।१४ पर भट्टभास्कर ने भिन्न ही विनियोग दिखलाये हैं । इस मंत्र के पुनः ऐतरेय ब्राह्मण ७।३३।१, ६।३६।८, शतपथ १३।२।९।९, तैत्तिरीय ब्राह्मण ३।९।७, गोपथ ब्रा०२।६।१८, पंचविंश ब्राह्मण १।६।१७, लाटचायन श्रौतसूत्र २।७।१०-२।११।२३, शांख्यायन श्रौतभाष्य १२।२५।१, कात्यायन श्रौतसूत्र १०।८।९, गोभिलीय गृह्यसूत्र २।६।१६, शांख्यायन गृह्यसूत्र १।१७।१, तथा पारस्कर गृह्यसूत्र १।१०।१६ में भिन्न-भिन्न विनियोग मिलते हैं । यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने की है कि - दधिकावन् शब्द घोड़े का वाचक है । निरुक्तकार ने २।७।२८ पर ऐसा ही लिखा है, और निघण्टु में यह अश्व नाम में पढ़ा भी गया है, परन्तु विनियोग दधि खाने के अर्थ में दिया गया है । इसी प्रकार अधिकाधिक मंत्रों के विनियोग भिन्न-भिन्न देखे जाते हैं । इन सब प्रमाणों से यह सारतः मालूम पढ़ता है कि विनियोग अनादि नहीं है । वे सदा परिवर्तन हुए, और होते रहेंगे । विनियोग बदलते हैं, परन्तु किसी भी मंत्र को विनियुक्त करते समय उसकी औचिती का पूरा ध्यान रखना चाहिए । सनातनियों की तरह शनि, बुध आदि के लिए **शन्नोदेवी, उदुबुध्यस्वाग्ने** आदि मंत्रों का अनर्गल विनियोग नहीं कर लेना चाहिए । विनियोग युक्तियुक्त और अच्छे कर्म में ही होना चाहिए । यास्क मुनि के प्रमाण से, जो कि मेरे 'देवतावाद' लेख में वर्णित हैं, और जो पुस्तकरूप में प्रकाशित भी हो चुका है, इस विषय को और भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ । ओमासश्चर्षणधृतः, इस ऋग्वेदीय १।३।७ मंत्र की व्याख्या यास्क ने निरुक्त १२।४० पर की है । वहाँ वह इस मंत्र का देवता 'विश्वेदेव' मानता है । मंत्र में विश्वेदेवासः पद भी पड़ा है । इसके अनन्तर विनियोग-विषय को चर्चा का प्रारंभ करते हुए यास्क लिखते हैं कि दाशतग्री में सारी शाखाओं में विश्वेदेव संबंधी एक गायत्री छन्दोयुक्त ऋचा मिलती है । परन्तु यज्ञ में गायत्री-छन्दोयुक्त कई ऋचाओं की आवश्यकता है । ऐसी अवस्था में क्या करना चाहिए । समाधान करते हैं कि, जो भी बहुदेवताओं से युक्त गायत्रमंत्र-समूह है, वह विश्वेदेवों के स्थान में प्रयुक्त हो सकता है । शाकमुनि आचार्य कहते हैं कि उचित यह है कि विश्वशब्दोपेत मंत्र-समूह या सूक्त विश्वेदेवों के स्थान में प्रयुक्त किये जा सकते हैं, न कि बहुदेवतामात्र वाले मंत्र । इस पर यास्क कहते हैं कि यह कथन अनैकान्तिक है, क्योंकि क्रियार्थ गायत्री-छंद से युक्त विश्वेदेव देवता वाला ही मंत्र प्रयुक्त हो सकता है, उसी प्रकार के मंत्रों से यज्ञ का प्रयोजन भी है । परन्तु ऐसे मंत्र पाये थोड़े ही जाते हैं । कर्म का परित्याग करना उचित नहीं, अतः बहुदेवताक गायत्रमंत्रों से विश्वेदेव-संबंधी कार्यों को चला लेना चाहिए । भूतांश काश्यप ऋषि ने अश्विनियों के लिंग से युक्त अनेक ऋचाओं वाले सूक्त (ऋ० १०।१०६ सूक्त) का साक्षात् किया । जिनमें यह लिंग नहीं है, उन ऋचाओं का भी अश्विदेवताकत्व ही उसने माना है । अभितष्ठीय सूक्त (ऋ० ३।३८ सूक्त) में भी एक ही ऋच् इन्द्र-देवता के चिह्न वाली है, परन्तु सारा सूक्त तदर्थ में विनियुक्त किया जाता है । इसी प्रकार की योजना पूर्वोक्त ढंग से वैश्वदेव-कर्म में भी करनी चाहिए । निरुक्त ७।२० में लिखा है कि गायत्री छंद से युक्त एक ही 'जातवेदस' तृव दाशतयी में देखी जाती है । इसलिए जो कोई अग्निदेवता वाला सूक्त है, वही जातवेदाः के स्थान में लगा दिया जाता है । इन प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि विनियोग अनादि नहीं . यहाँ पर ऋषि दयानन्द की इस विषय में सम्मति उद्धृत करते हुए लेख को समाप्त करता हूँ :

अत्रवेदभाष्ये कर्मकाण्डस्य दर्णने शब्दार्थतः करिष्यते, परन्त्वेतैर्वेदमन्त्रैः कर्मकाण्डविनियोजितैर्यत्र यत्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्तव्यम् तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते । कुतः कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेय शतपथ ब्राह्मणपूर्वमीमांसा- श्रौतसूत्रादिषु यथार्थ विनियोजितत्वात् ।... तस्माद् युक्तिसिद्धो वेदादिप्रमाणनुकूलो मंत्रार्थानुसृतः तदुक्तोपि विनियोगो ग्रहीतुं योग्योस्ति ।

गोहत्या, मांसाहार और तर्क

– डा. वेद प्रताप वैदिक

गोहत्या के लिए अपने कई प्रांतों में कड़ी सजा का प्रावधान है लेकिन गुजरात विधानसभा ने उम्र-कैद का कानून बनाकर अन्य राज्यों के लिए भी रास्ता खोल दिया है। गुजरात के साथ-साथ उत्तरप्रदेश में बूचड़खानों को लेकर जो बवाल मचा है, उसे देखकर यह माना जा रहा है कि भाजपा के मुख्यमंत्री लोग अपनेवाली पर उतर आए हैं। वे हिंदुस्तान पर अपना हिंदुत्व का एजेंडा थोपने लगे हैं। यदि आप इन खबरों के शीर्षक पढ़ें और टीवी चौनलों को चलते-चलते सुनें तो आपका भी यह विचार बन जाएगा कि भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देश के मुसलमानों को तबाह करने पर उतारु हो गए हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि ऐसा नहीं है। उप्र में बूचड़खानों पर सिर्फ यह सख्ती की गई थी कि जिन पर लायसेंस नहीं हैं, उन्हें चेतावनी दी गई थी। बिना लायसेंस के चलनेवाले बूचड़खाने और दुकानें अक्सर भयंकर गंदगी, बदबू और कीटाणुओं के अड्डे बन जाते हैं, चाहे उनके मालिक हिंदू हों या मुसलमान! हिंदुस्तान में जितने मुसलमान मांसाहारी हैं, उससे दुगुने-तिगुने हिंदू, सिख और ईसाई मांसाहारी हैं। देश की सभी प्रांतीय सरकारें यदि इसी सख्ती से पेश आएं तो सबसे स्वच्छ आहार मिल सकेगा।

गुजरात में गोरक्षा का कड़ा कानून सराहनीय है, क्योंकि गाय को देश के हिंदुओं में माता के समान मानते हैं। शास्त्र भी कहते हैं– गावो विश्वस्य मातरः। आखिर, मुगल बादशाहों ने भी गोवध पर प्रतिबंध क्यों लगा रखा था? सिर्फ गुजरात ही नहीं, हिंदुओं ही नहीं, सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सारे संसार के लिए गाय ऐसा पशु है, जो मरने तक और मरने के बाद भी मानव-जाति का फायदा ही करता है। कोलकाता में गोबर गैस से बसें चल रही हैं। एक रुपए की मेथिन गैस से बसें १७ किमी तक चलती हैं। हरयाणा के ग्रामीण घरों में गोबर गैस के चूल्हे दनदना रहे हैं।

जो गाएं दूध नहीं देतीं, उनके गोबर, मूत्र और गैस से ही लाखों रुपए की आमदनी होती है। जबकि गाय के मांस, खून, चमड़े, सींग वगैरह से सिर्फ पांच-सात हजार रुपए ही कमाए जा सकते हैं। मैं तो कहता हूं कि किसी भी दुधारु पशु गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि की हत्या नहीं की जानी चाहिए। यदि उनका सदुपयोग किया जाए तो भारत में आर्थिक क्रांति की जा सकती है। मैं तो चाहता हूं कि सारा विश्व ही निरामिष हो जाए, शाकाहारी बन जाए लेकिन यह बिल्कुल अनुचित होगा कि आप मांसाहार पर कानूनी प्रतिबंध लगा दें या मांसाहारियों का अपमान करें। यह भी ठीक नहीं कि आप पशु की रक्षा के लिए मनुष्य को मारने के लिए तैयार हो जाएं। यदि हम सारी दुनिया को शाकाहारी बना हुआ देखना चाहते हैं तो इस मुद्दे को हमें कानून की तलवार से नहीं, तर्क की तुला पर तोलकर प्रेम से परोसना होगा।

गो मां की गुहार

-शिवलाल शास्त्री

मुझको बचा लो तुम मैं तुमको बचा लूँगी।
भूसा मत जलाओ रे, इसको ही मैं खा लूँगी।
तुझसे न कुछ चाहूँगी,
निःसार तृण ही खाऊँगी।
खुले ही आकाश में रह-अमृत तुम्हें पिलाऊँगी।
तुझको भी पाला मैंने, बच्चे भी तेरे पालूँगी।
जीवन की बस भीख मांगती, दुःख सारे पडवा लूँगी।
मुझको-खपाकर उसने, गोबर भी मंगाया है।
करता है दलाली क्रूर धर्म पर गुर्राया है।
मुझको मरवा के इसने, शुद्ध वायु विचार खोया।
कृतघ्न पर मरता कोटि आज तक न कौन रोया ?
दर्द मेरे दिल में बहुत, इसको तो छिपा लूँगी।
आज से भी चेतो तो मैं प्रभु को मना लूँगी।
अपनों की तो खैरचाहते अनबोलों को खा रहे।
नोंच लेंगे चील कव्वे-किस इस्ट को मना रहे ?
सृष्टि में अन्यायी कभी सुख ही न पाए है।
काल उसके बच्चे खो बच्चे जिसने खाए हैं।
सृष्टि के इतिहास को, कोई झुठला ही न पाया है मिटता वह
मूल से है, जिसने निर्दोष को मिटाया है।
बेटे तुम बचा लो माँको, दूध की सौगन्ध है।
भिटती जाती अस्मिता अब कह गया कोई छन्द है।
मुझको संभालो रे, मैं तुमको संभालूँगी।
यज्ञ हेतु घृत दूँगी। रोगों से बचा लूँगी।
धोखे की दीवार लाँघो चाँदनी दिखा दूँगी।
उपनिवेशों की मार काली तेरी पीढी को बचा लूँगी।
खाओगे जो मांस तो, नाश तो जरूरी है।
बचा माये न यदि तो मेरी भी मजबूरी है।
नाश होते देख लूँगी, क्या जोर ही चलेगा ?
नाश तो जरूरी उसका, जो पर खून पर पलेगा।
देर होती जो रही तो हाय हाथ तो मलेगा।
पाताल में पौरुष गिरेगा फिर यहाँ क्रास ही चलेगा झेली गुलामी
क्या, झूमकर थी ?
जो अब गलबहियाँ हो रहे उन्हें कैसे पा सकोगे चिन्ह
जिनके खो रहे ?

महर्षि दयानन्द तीनों ऐषणाओं से परे थे

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य

ऐषणाएं यानि इच्छाएं जिनसे मनुष्य बन्धा हुआ रहता है । ये तीन प्रकार की होती हैं-१. वैत्तैषणा २. पुत्रैषणा ३. लोकैषणा । इन तीनों ऐषणाओं ने महर्षि दयानन्द को छुआ तक नहीं था । जब कि इन तीनों ऐषणाओं से सभी मनुष्य लिप्त रहते हैं । इन्हीं की प्राप्ति में मनुष्य अपना पूरा जीवन समाप्त कर लेता है, फिर भी ऐषणाएं पूर्ण नहीं होती । मनुष्य अपनी ऐषणाओं को प्राप्त करने के लिए जितना अधिक प्रयल करता है और इनको कुछ सीमा तक प्राप्त भी करता है । परन्तु इनकी प्राप्ति से मनुष्य की भूख कभी नहीं मिटती बल्कि भूख और अधिक बढ़ती जाती है । इसलिए ऐषणाओं की प्राप्ति करना मनुष्य के लिए सुख का साधन नहीं बल्कि दुःख का कारण है । इसलिए यजुर्वेद ने अपने चालीसवें अध्याय के प्रथम मन्त्र में कहा है -

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् हम संसार का त्याग भाव से भोग करें यानि इसमें लिप्त न हो । लालच न करो । यह धन किसी का नहीं है यानि ईश्वर का है । महर्षि दयानन्द का जीवन इस वेद मन्त्र के अनुसार था । उनको किसी प्रकार का आकर्षण बन्ध नहीं सकता था । महर्षि का अपने मन के ऊपर पूरा अधिकार था । मन उनके अधीन था इसलिए स्वामी जी मन को जिधर ले जाना चाहते थे मन उसी तरफ चलता था । मन उनके अधीन था इसलिए स्वामी जी मन को जिधर ले जाना चाहते थे मन उसी तरफ चलता था । मन पर पूरा नियन्त्रण रखने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन में सफल हो सकता है । महर्षि के अपने जीवन में सफल होने का सबसे बड़ा कारण यही था कि उनका अपने मन के ऊपर पूरा नियन्त्रण था इसलिए उनका इन तीनों ऐषणाओं पर पूरा अधिकार था । वे इनमें लिप्त नहीं थे। इसका संक्षिप्त विवरण इसी भांति है ।

१. वितैषणा-महिर्षि जी के पिता कर्षण जी तिबाड़ी एक अच्छे जमींदार थे, रुपयों का लेन-देन भी करते थे और मोरवी राज्य की तरफ से इनको काफी अधिकार मिले हुए थे । वे एक अच्छे सत्ताधारी थे और प्रबन्ध को बनाए रखने के लिए वे कुछ सैनिकों को भी अपने पास रखते थे । इस प्रकार स्वामी जी एक अच्छे धनाढय परिवार में पैदा हुए थे और अपने माता-पिता जी पहली सन्तान होने से काफी लाड-प्यार में उनका जीवन बीता था । पैसे की उनके पास कोई कमी नहीं थी फिर भी वे सच्चे शिव की खोज तथा मृत्यु के रहस्य को जानने के लिए नौजवानी काल में ही केवल २२ वर्ष की आयु में ही अपने घर को छोड़ दिया और देश को अज्ञान, अन्ध विश्वास व पाखण्डों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेकों दुःखों व कष्टों को सहते हुए देश के चारों कोनों में भ्रमण किया और अपने जीवन में भी कितने ही अवसरों पर उन्हें लोभ व लालच दिया गया । पर उस लंगोट धारी सन्यासी ने अपने सिद्धान्तों पर अटल रहने के लिए उन लालच व प्रलोभनों को ठुकरा दिया और असत्य से कभी समझौता नहीं दिया । वैसे तो उनके जीवन में ऐसी अनेकों घटनाएं आती हैं । पर यहां पर केवल दो गठनाओं को लिख देना पर्याप्त समझता हूं।

२. महर्षि जी अपने जीवन में अन्तिम दिनों में यह सोचकर कि साधारण व्यक्तियों को समझाने की बजाय मुझे राजा-महाराजाओं से मिलकर उन्हें वैदिक धर्म की बातें समझानी चाहिएं ताकि वेद प्रचार का कार्य तथा परोपकारी कार्य अधिक मात्रा में किए जा सकें । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्वामी जी उदयपुर के महाराजा सज्जन सिंह के पास पहुंचे । महाराजा स्वामी जी से बहुत अधिक प्रभावित हुए और उनको अपना गुरू मानकर वेंद पढ़ने लगे । एक दिन महाराजा ने कहा कि स्वामी जी आप केवल मूर्ति पूजा का विरोध न करें बाकी सब काम आप अपनी इच्छा अनुसार करते रहें तो मैं आपको एक लिंग महादेव के मंदिर का महन्त बना दूं । जिसमें वार्षिक लाखों रुपयों की आमदनी है, आप अपनी ज़िन्दगी आराम से काट सकोगे । स्वामी जी ने महन्त बनने से इन्कार कर दिया तब महाराजा सज्जन सिंह ने कहा कि स्वामी जी आपको मालूम है कि आप किससे बातें कर रहे हो, तब स्वामी जी ने कहा कि मुझे मालूम है कि मैं किससे बातें कर रहा हूं, राजन ! आपकी आज्ञा का मैं उल्लंधन करूं तो मैं अभी दोड़ लगाकर आपके राज्य की सीमा से निकलना चाहूं तो रात भर में निकल सकता हूं परन्तु उस भर में निकल सकता हूं परन्तु उस परम् पिता परमात्मा की आज्ञा का उल्लंधन करूं तो उसके राज्य से बाहर कभी नहीं निकल सकता, इसलिए आप ही बताएं कि मैं आपकी आज्ञा मानूं या ईश्वर की आज्ञा तब महाराजा ने कहा कि स्वामी जी आपको इतना बड़ा पद कोई नहीं दे सकता, आप विचार करें कि आपको क्या करना चाहिए, तब स्वामी जी ने कहा कि राजन् ! यह सही है कि मुझे इतना बड़ा पद देने वाला कोई नहीं मिलेगा, तो आपको भी इतने बड़े पद को ठुकराने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। इन उत्तरों से महाराजा बहुत खुश हुए और स्वामी जी से क्षमा प्रार्थना करने लगे । यह था स्वामी जा का वित्तैषणा के प्रति विरोधी भा' । दूसरी घटना यह है कि स्वामी जी जब उत्तराखण्ड का भ्रमण कर रहे थे तब वे जोशी मठ पहुंचे । जोशी मठ का महन्त स्वामी जी के आकर्षक शरीर, बल, बुद्धि, विद्या से बहुत प्रभावित हुए और स्वामी जी से कहा कि आप इस मठ के महन्त बन जाओं, मैं सन्यासी बनना चाहता हूं, तब स्वामी जी ने कहा कि महन्त जी मैंने पिता जी की करोड़ों की सम्पत्ति को ही ठोकर मार दी, तो आपकी सम्पत्ति का महत्त्व ही क्या है ? मैं तो किसी बड़े उद्देश्य के लिए ही घूम रहा हूं, मुझे आपके मठ का महन्त नहीं बनना, यह कहकर आगे निकल गए । यह भी स्वामी जी की वित्तैषणा से प्रति उदासीनता ।

३. पुत्रैषणा - पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं है । यदि पुत्रैषणा होती तो विवाह हो करवा लेते । जब स्वामी जी के माता-पिता को यह ज्ञान हो गया कि मूल शंकर (जों स्वामी जी का

भोजन शाकाहारी हो या मांसाहारी

भोजन शाकाहारी हो या मांसाहारी इस विषय पर चर्चा युगों से चली आ रही है। शाकाहारी लोग इसके पक्ष में अपनी दलीलें देते हैं और मांसाहारी लोग अपनी।

वैसे तो कुछ लोग अपने फायदे के लिए कहते हैं कि यज्ञों में भी पशुओं की बलि दी जाती थी। इसके लिए मन्त्रों के प्रमाण भी देते हैं। मन्त्रों में गो, अज आदि शब्दों का प्रयोग अवश्य किया गया है पर ये शब्द पशुओं के लिए नहीं थे। ये इन्द्रियों के लिए प्रयुक्त किए गए शब्द हैं जिन्हें वश में करके मोक्ष की राह पर आगे बढ़ना है। उस समय तथाकथित विद्वानों ने अपने स्वार्थ के लिए पशुबलि की प्रथा को जन्म दिया।

जब भगवान बुद्ध और महावीर ने यज्ञ में पशुबलि का विरोध किया तो उन्हें वेद निन्दक कहकर अपमानित और बहिष्कृत किया गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती सहित अनेकशरू समाज सुधारकों ने इस मांसाहार का विरोध किया।

शाकाहार हमें अधिक स्वस्थ रखता है। मांसाहार खाने वाले अपेक्षाकृत अधिक रोगी बनते हैं। इस मांसाहार से तामसिक वृत्तियाँ बढ़ती हैं।

क्रोध, हिंसा, असहिष्णुता आदि की वृद्धि होती है।

पहली बात तो यह है कि हर पशु-पक्षी में आत्मा का वास होता है। ईश्वर यह कदापि आज्ञा नहीं देता कि हम उसकी बनाई सृष्टि को नष्ट करें। हमारे बच्चों को काँटा भी चुभता है तो हम परेशान हो जाते हैं परन्तु उस परमपिता की जिन्दा संतानों को हम मारकर खा जाते हैं। एक बात आजतक मेरी समझ में नहीं आई कि एक मनुष्य यानि जीव को मारने पर आजीवन कारावास की सजा मिलती है तो उन निरीह जीवों को मारने की सजा का क्या प्रावधान है? शायद उनका न्याय उस बड़ी अदालत में होता है।

ईश्वर ने अपनी सृष्टि को बैलेंस करने के लिए खुद ही विध ाान बनाया है कुछ जीव उसने शाकाहारी बनाए हैं और कुछ मांसाहारी जीव बनाए हैं। समय-समय पर प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से जीवों का सामंजस्य बिठा देता है।

१. दिल के दौरे का खतरा २३ गुणा अधिक

२. कैलोस्ट्रोल की मात्रा खतरनाक स्तर तक ले जाता है

३. कैंसर के ७०ः रोगी मांसाहारी हैं।

४. दुनिया के ६५ः वैज्ञानिक शाकाहारी हैं

५. दुनिया के ६८ः समाजसेवी शाकाहारी हैं।

६. मनुष्य के दाँत शाकाहारी जीवों जैसे हैं।

७. मनुष्य के पेट आंत और लीवर की कार्य प्रणाली शाकाहारी जीवों जैसी है।

८. हर बिमारी के आसार मांसाहार में अधिक पाए जाते हैं।

९. हत्या के समय पशु की चीख पुकार ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण है।

बचपन का नाम था) में कुछ वैराग्या के भाव आए हुए हैं, इसलिए इसका विवाह कर देना चाहिए और विवाह की तैयारी भी करने लगे। जब मूलशंकर को यह जानकारी दी गई कि तुम्हारे विवाह की तैयारी हो रही है, तब उसने माता-पिता का साफ कर दिया कि मैं विवाह नहीं कराऊंगा। छोटी बहन और चाचा जी की मृत्यु के बाद मूलशंकर का वैराग्य और भी बढ़ गया था। बाईस वर्ष की भरी जवानी में उसने गृह त्याग कर दिया। जीवन भर पूर्ण ब्रह्मचारी रह कर अपना उद्देश्य शिव की खोज में पूरे जीवन की आहुति दे दी। इससे साफ सिद्ध होता है कि स्वामी जी का विवाह करवाने की बिल्कुल ही इच्छा नहीं थी। तब पुत्रैषणा होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। स्वामी जी के जीवन में एक घटना आती है कि एक बहुत सुन्दर औरत ने स्वामी जी से कहा कि स्वामी जी मैं आप जैसा सुन्दर पुत्र चाहती हूं, तब स्वामी जी ने कहा, माता जी! मैं तो आपका ही पुत्र हूं, आप मुझे ही अपना पुत्र समझे। इससे बड़ा उदाहरण पुत्रैषणा न होने का और क्या हो सकता है?

४. लोकैषणा-महर्षि का जीवन पढ़ने से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने कितने ही बहादुरी के काम किए। जैसे चार घोड़ों की बग्गी को पीछे से पकड़ कर रोक लेना, लड़ते हुए दो खूंखार साण्डों के सींग पकड़ कर अलग-अलग कर देना। कर्ण सिंह जैसे बलशाली की तलवार पकड़ कर दो टुकड़े कर देना। अपने प्राण बचाने के लिए कितनों को पछाड़ कर फिर ऊंची दीवार को लांघ कर अपने प्राणों की रक्षा करना आदि अनेक घटनाएं हैं, परन्तु स्वामी जी ने कभी भी अभिमान भरी बात नहीं कही और अपराधी को सदैव सजा न देकर क्षमा दान ही दिया। इससे उनकी निराभिमानता, विनम्रता, दयालुता आदि गुण स्पष्ट प्रकट होते हैं। जो व्यक्ति निराभिमानी विनम्र, दयालु व परोपकारी होता है, वह कभी भी यश का भूखा नहीं होता। इसलिए महर्षि दयानन्द में लोकैषणा नाम-मात्र भी नहीं थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि जी ने इन तीनों एषणाओं पर विजय प्राप्त कर रखी थी।

---

१०. मांसाहार शाकाहार से १००० गुणा अधिक पानी बरबाद करता है।

११.मांसाहार हिंसक और स्वार्थी विचार बढ़ाता है।

१२. अमेरिका में हर साल २०ः लोग शाकाहारी बन रहे हैं।

१३. दुनिया में भूख से मरने वाले ३५००० लोगों को शाकाहार बचा सकता है।

१४. धर्म न सही विज्ञान की मानें और शाकाहार अपनाकर स्वस्थ रहें।

१५. मांसाहार खाने वालो के काम भी जानवरोंवाले जेसे होते है ज्यादातर अपराधी मांसाहारी लोग होते है

१६. मांसाहारी लोग ज्यादातर लाइलाज बीमारिया फैलातेहै

अब आप सुधीजन अपनी तर्क की कसौटी पर परखें। रोगों के आ जाने पर तो डाक्टरों के परामर्श से शाकाहार अपनाना ही पड़ता है।

'महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना क्यों की थी?'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द एक सिद्ध योगी थे। उनका जीवन कुछ प्रमुख धार्मिक विषयों जैसे ईश्वर के सत्य स्वरूप व मृत्यु पर विजय के उपायों की खोज करने में व्यतीत हुआ। वह इन विषयों के यथार्थ उत्तर जानने व प्राप्त करने में सफल भी हुए। अपने गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की प्रेरणा व अपने निर्णय के अनुसार उन्होंने अज्ञान, अन्धविश्वासों व सामाजिक कुप्रथाओं से युक्त हिन्दुओं के सुधार के लिए सत्य वैदिक मत का प्रचार किया था। इसके अन्तर्गत उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना सहित काशी में वहां के प्रमुख पौराणिक विद्वानों के साथ मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ भी किया था जिसका उद्देश्य मिथ्या पूजा का त्याग कर ईश्वर द्वारा वेदों में विहित पूजा को प्रचलित करना था। कालान्तर में उन्होंने "सत्यार्थ प्रकाश" जैसा कालजयी ग्रन्थ लिखा जिसकी उपमा 'न भूतो न भविष्यति' कह सकते हैं। इसके बाद उन्होंने वेदों को लोकप्रिय बनाने व वेद विषयक शंकाओं को दूर करने के लिए अनेक ग्रन्थ लिखे जिनमें ऋग्वेद (अपूर्ण, मण्डल ७ सूक्त ६२ के दूसरे मन्त्र तक) और यजुर्वेद सम्पूर्ण भाष्य संस्कृत व हिन्दी दो भाषाओं के अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कार विधि, गोकरूणानिधि, व्यवहारभानु, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन व प्रचार किया। पूर्वाग्रहों से मुक्त अनेक देशी व विदेशी विद्वान उनके प्रशंसक बने जिनमें प्रो. मैक्समूलर आदि विदशी विद्वान भी सम्मिलित हैं। वेदों के सत्यार्थ के प्रचार के लिए उन्होंने प्रायः सभी मत-मतान्तरों के आचार्यों से शास्त्रार्थ सहित उनका शंका समाधान किया व चर्चायें की। इन सबका उद्देश्य समाज से अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों, सामाजिक असमानता, बाल व बेमेल विवाह सहित अवतारवाद की धारणा, फलित ज्योतिष व मृतक श्राद्ध आदि को समाप्त कर वैदिक मान्यताओं पर आधारित आधुनिक समाज का निर्माण करना था। वह अपने उद्देश्य में आंशिक रूप से सफल भी हुए परन्तु उनकी अल्पकालिक मृत्यु के कारण जिस तेजी से कार्य बढ़ रहा था, उस पर विराम लग गया अथवा शिथिल पड़ गया। उनके बाद उनके अनुयायियों की पहली व दूसरी पीढ़ी ने देश व जाति के सुधार के अनेक प्रशंसनीय कार्य किये जिससे समाज में परिवर्तन व सुधार हुआ परन्तु अभी बहुत बड़ा लक्ष्य प्राप्त करना शेष है।

आज आर्यसमाज की जो दशा है उसके रहते सुधार की गति मन्द व शिथिल हो गई है। व्यापक रूप से विचार करें तो देश की धर्म व संस्कृति की रक्षा, जो महर्षि दयानन्द के जीवन का मुख्य लक्ष्य कह सकते हैं, वह सफल होती दिखाई नहीं दे रही है। समाज में अन्धविश्वास व अज्ञान का बढ़ना निरन्तर जारी है। अज्ञान व अविद्या पर आधारित नये नये मत नित्य प्रति अस्तित्व में आ रहे हैं जिनके आचार्य समाज में अज्ञान परोस रहे हैं। अन्य समुदायों के लोगों ने भी आर्यसमाज को अपनाना प्रायः छोड़ दिया है। आर्यसमाज की समस्त गतिविधियां आर्यसमाज के मन्दिर में साप्ताहिक सत्संग व यदाकदा वार्षिकोत्सव और बहुत हुआ तो वेद पारायण या बहुकुण्डीय यज्ञ तक ही सीमित रह गई है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आर्यसमाज ने भी अन्य मतों की तरह एक मत का रूप ले लिया है। आर्यसमाज का आर्यसमाज से बाहर प्रचार व प्रसार सीमित व प्रायः बन्द ही दृष्टिगोचर होता है। आर्यसमाजियों व हिन्दुओं की जनसंख्या के आंकड़े बतातें हैं कि इनकी जनसंख्या निरन्तर कम हो रही है और उसके विरोधियों की संख्या बढ़ रही है। कहीं कहीं ऐसी हिंसक घटनायें होती है जिसमें हिन्दुओं के जानमाल की भारी हानि होती है। हिन्दुओं पर आघात हो तो राजनैतिक दल भी मौन व्रत रख लेते हैं। जहां से वोट बैंक बढ़ता हो, उसके लिए कुछ भी करने को वह तैयार रहते हैं। ऐसी स्थिति में हमें सोचना चाहिये कि महर्षि दयानन्द ने जिस उद्देश्य को सामने रखकर अपने जीवन को आहूत किया था, क्या कहीं हम उस लक्ष्य से दूर तो नहीं हो रहे है? हमें लगता है कि इसका उत्तर हम लक्ष्य से दूर होते जा रहे हैं, ऐसा ही प्रतीत होता है। महर्षि दयानन्द सत्य के सबसे बड़े आग्रही थे। उनके बारे में यह प्रसिद्ध भी है कि यदि उन्हें तोप के मुंह पर रखकर असत्य को स्वीकार करने के लिए कहा जाता तो भी वह मरना पसन्द करते परन्तु असत्य स्वीकार न करते। ऐसा उन्होंने कहीं कहा भी है। जोधपुर जाने के प्रकरण में यह तो उन्होंने कहा ही है कि यदि कोई उनकी उंगलियों को दीये की बत्ती के समान जला भी दे, तो भी सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन करने से उन्हें नहीं रोग सकता। समाज में अज्ञान व अन्ध विश्वास बढ़ने का एक कारण हमारे कुछ आचार्यों का अपने पृथक मत-मतान्तरों से होने वाले आर्थिक लाभों से भी है। यह सभी आचार्य वेदों व राम तथा कृष्ण आदि को अपना पूर्वज मानने वाले लोगों को संगठित करने और उनकी रक्षा व उनके हितों की सुरक्षा पर न तो विचार करते हैं, उसमें सहयोग व किसी स्वीकार्य योजना पर काम करने की बात तो बहुत दूर है। अतः आर्यसमाज हमें आगे बढ़ता व सफल होता दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है। आर्यसमाज के दिग्गज व विरोधी विद्वानों व नेताओं को भी इस विषय पर संगठित रूप से विचार करना चाहिये। हमें नहीं लगता कि हमारे नेता व विद्वान संगठित होकर इस विषय पर विचार करेंगे? हमें तो यही लगता है कि मनुस्मृति का श्लोक 'धर्मो एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः' के अनुसार वृहत हिन्दु समाज जिसमें आर्यसमाज भी है, धर्म की रक्षा न करने के कारण धर्म भी उनकी रक्षा नहीं करेगा। हम यह अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज के नेताओं व विद्वानों को इस पर सम्यक विचार कर योजना बनानी चाहिये। भावी खतरों से पौराणिक धर्म गुरुओं, विद्वानों व बन्धुओं को भी आगाह करना चाहिये। समय समय पर उन्हें आर्यसमाज मन्दिर

में आमंत्रित कर परस्पर हितों के विषयों पर मित्रतापूर्ण वातावरण में चर्चायें करनी चाहियें। नई व युवा पीढ़ी में वैदिक धर्म के संस्कार कैसे स्थापित किये जायें जिससे वह शिक्षा प्राप्त कर आजकल की तरह खुले विचारों जिसमें अधर्म को ही धर्म व उचित माना जाता है, उसके आग्रही व समर्थक न होकर वैदिक मान्यताओं पर स्थिर रहे, इसके लिए भी ठोस कार्य करना होगा। हमें यह भी विचार करना चाहिये कि महाभारत काल तक संसार में वैदिक मत के अनुयायी १०० प्रतिशत थे और आज घटकर १२ से १५ प्रतिशत ही रह गये हैं। इससे भविष्य का अनुमान लग सकता है।

महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य वैदिक ज्ञान से सारे संसार को आलोकित करना था जिससे लोग सत्यासत्य को जानकर अपनी इच्छा व विवेक के अनुसार धर्म, मत, पन्थ, सम्प्रदाय आदि का चुनाव कर सकें। यह कार्य प्रायः भुला ही दिया गया है। आज आर्यसमाज की जो प्रचार शक्ति है उसके सम्मुख लक्ष्य बहुत बड़ा है। यदि हम वर्तमान स्थिति को भी बना कर रख पायें और धीरे धीरे ही सही, वेद प्रचार कार्य में आगे बढ़े तो भी सुधार हो सकता है। इतिहास के विषय में हमें लगता है कि किसी जाति का भविष्य उसके वर्तमान की स्थिति, कार्यों व निर्णयों पर निर्भर करता है। यदि आज हम कुछ ठोस नहीं करेंगे तो हमारा भविष्य अच्छा नहीं हो सकता। अच्छा भविष्य उन्हीं का होगा जो आज सत्य न सही, असत्य के लिए ही गम्भीर रूप से सचेत होकर पुरुषार्थ कर रहे हैं। एक बार स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने प्रवचन में कहा था कि विजय न सत्य की होती है न असत्य की, विजय उसकी होती है जो पुरुषार्थ अधिक करता है। इससे हमें शिक्षा लेनी चाहिये। यह पंक्तियां कोई लेख नहीं, अपितु जीटीवी पर बंगाल में एक वर्ग विशेष के विरुद्ध सुनियोजित हिंसा की घटनायें देख व सुनकर उत्पन्न पीड़ा की अभिव्यक्ति मात्र है। सभी वैदिक धर्मी लोग सत्य धर्म का पालन करें और उसके प्रचार प्रसार के लिए प्राणपण से कार्य करे, यही दवा रोग के इलाज की प्रतीत होती है। इसके साथ हमें अपने निजी स्वार्थों से भी ऊपर उठना होगा।

ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो' का ऋषि दयानन्द का अभिप्राय

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने ३० अक्तूबर, १८८३ को सायं लगभग ६:०० बजे अजमेर नगर की भिनाय की कोठी में अपने प्राणों त्याग किया था। मृत्यु से पूर्व उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना करते हुए कहा था कि ईश्वर 'तूने अच्छी लीला की, अहा तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो।' हम ऋषि के शब्द 'तेरी इच्छा पूर्ण हो' पर विचार कर रहे हैं। यह सुनिश्चित है कि मृत्यु के बाद जीव की दो ही गतियां होती है। या तो कर्मानुसार पुनर्जन्म अथवा मोक्ष प्राप्ती। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में मोक्ष का स्वरूप प्रस्तुत किया है। एक मुमुक्षु में मोक्ष प्राप्ति के लिए जो गुण, कर्म व स्वभाव होने चाहिये वह ऋषि दयानन्द पूर्ण रूप में थे। वह वेदों के ज्ञान से प्रकाशित थे और उस ज्ञान के अनुरूप ही उनका आचरण था। वह एक सिद्ध योगी भी थे और उनके जीवन चरित के अनुसार वह प्रातः भ्रमण को जाते समय वहां रूककर व रात्रि शयन के समय भी समाधिस्थ होते थे। वेदों का भाष्य कराते समय यदा कदा किसी मन्त्र की व्याख्या व भाष्य कराते हुए कुछ कठिनाई या शंका होने पर वह अपनी कुटी व कक्ष में चले जाते थे और समाधि लगाकर ईश्वर से मन्त्रार्थ पूछ कर व समाधि में मन्त्रार्थ पर चिन्तन व मनन कर सही अर्थ का ज्ञान होने पर बाहर आते और लेखक पण्डितों को मन्त्रार्थ व भाष्य लिखाते थे। उनके जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने जीवन में कोई अशुभ व पाप कर्म नहीं किया। अतः साधारण लोगों के समान तो उनका पुनर्जन्म होगा नहीं, कुछ विशिष्ट की सम्भावना प्रतीत होती है।

स्वामी जी ने मृत्यु से पूर्व जो वाक्य बोला कि 'हे ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो', हमें लगता है कि इसमें उनका यह भाव रहा होगा कि मृत्यु तो अब हो ही रही है, इसके बाद पुनर्जन्म या मोक्ष जो भी होना है, उसको विचार कर ऋषि ने कहा कि हे ईश्वर! मुझे पुनर्जन्म व मोक्ष देने विषयक तेरी जो इच्छा व निर्णय है, वह पूरी हो। हम मित्रों वा पाठकों से अनुरोध करते हैं कि इस विषय में वह अपनी सम्मति भी देने की कृपा करें।

ऋषि दयानन्द ने यह भी कहा है कि 'ईश्वर ! तूने अच्छी लीला की।' इसका अभिप्राय हमें यह लगता है कि ऋषि दयानन्द के जीवन में शिवरात्रि को चूहों की घटना को देखकर जो भाव उत्पन्न हुए तथा उसके बाद बहिन और चाचा की मृत्यु से उनमें जो वैराग्य जगा, वही उनके भावी जीवन का कारण, आधार व साधन बने। इन घटनाओं के कारण ही वह योग के रहस्यों का परिचय प्राप्त करते हुए वेदों की उपलब्धि व उनके यथार्थ ज्ञान से संतृप्त हुए। उनके जीवन में जो कुछ घटा, उसी को ध्यान में रखकर, हमें लगता है, मानों वह ईश्वर को कह रहे हैं कि यह सब तेरी लीला ही थी और इस सबको उन्होंने अपने अन्तिम शब्दों में कहा कि तूने अच्छी लीला की। यदि ईश्वर यह लीला न करता या स्वामी दयानन्द जी के जीवन में यह सब कुछ इस प्रकार से न होता तो जो महान व अपूर्व समाज व देश सुधार सहित वेदोद्धार का कार्य उन्होंने किया, वह न हो पाता। इसका श्रेय 'तैने अच्छी लीला की' कहकर स्वामी जी ने ईश्वर को ही दिया है। यह एक प्रकार से उन्होंने अपने जीवन में किये सभी शुभ कर्मों का ईश्वर को समर्पण किया है। अहंकार से बचने का यही उपाय होता है कि हम जो भी शुभ कर्म करें उसे ईश्वर को समर्पित कर दें। उसमें हमारा कर्तव्य भाव रहे। यदि हमारे द्वारा किया गया कोई परहित का कार्य सफल होता है तो इसे ईश्वर की कृपा मानना चाहिये।

पश्चिमी बंगाल के मालदा नगर से एक बन्धु श्री नीतेश आर्य जी यदा कदा दूरभाष कर अपनी कुछ शंकाओं की चर्चा करते रहते हैं। उनसे वार्ता करते हुए हमारे मन में यह विचार आया कि ऋषि ने ईश्वर को पुनर्जन्म व मोक्ष को लक्ष्य कर कहा था कि तेरी जो इच्छा है, पुनर्जन्म देने व मोक्ष प्रदान करने की, वह तेरी इच्छा पूर्ण हो। पाठक बन्धु इस पर अपनी राय अवश्य सूचित करें। इति

పల్లెల కడుపులో రగులుతున్న చిచ్చు

కులరాక్షసికి తోడు, తెలంగాణపై వాలడానికి మతతత్వ రాకాసి దేగకన్నువేసి కాచుకుని ఉన్నది. సామాజికార్థిక కారణాలతో విభజితమవుతున్న సమాజాలు మతతత్వానికి లోనుకావడం సులువు. ఒకరి ప్రయోజనాలను ఒకరికి ప్రతికూలమైనవని చెప్పి ద్వేషాలను రెచ్చగొట్టడం సులభమవుతుంది. ప్రజలను విశ్వాసంలోకి తీసుకుని, ఒకరి మేలు మరొకరికి కీడు కాని రీతిలో సమాజాన్ని నడిపించడం వివేకవంతులు చేసే పని. లేకపోతే, ప్రాంతీయ చాణక్యులను దెబ్బతీయడం జాతీయ చాణక్యులకు ఎంత పని ?

ఈ సహస్రాబ్ది ఆరంభంలో దక్షిణాఫ్రికా దర్బన్‌లో జాతివివక్షపై జరిగిన అతర్జాతీయ సదస్సులో తెలంగాణలో జరిగిన ఒకసంఘటన ప్రస్తావనకు వచ్చింది. భారతదేశంలో కులవివక్షకు గుర్తుగా ప్రతినిధులు ప్రస్తావించిన ఆ సంఘటన మహబూబ్‌నగర్ జిల్లా కల్వకోల్ గ్రామంలో జరిగింది. నామాల బాలస్వామి అనే దళితుడిని గడ్డివాములో వేసి సజీవదహనం చేశారు. ఫిడెల్ కాస్ట్రో కూడా ఆ ఘటనను తీవ్రంగా ఖండించారు అప్పటికి తెలంగాణ ఉద్యమం ఇంకాఆరంభదశలోనే ఉన్నది. ఉద్యమం కోసం రాజకీయపార్టీ ఇంకా ఏర్పడిందే లేదో కూడా. కల్వకోల్ సంఘటనలో దోషులు ఒక బిసి కులానికి చెందినవారు.

తెలంగాణలో కులసంబంధమైన అత్యాచారాలు జరగవని, కారంచేడు, చుండూరు వంటి సంఘటనలు తెలంగాణలో లేవని ప్రత్యేక రాష్ట్ర ఉద్యమసందర్భంగా ఘనంగా చెప్పుకునేవారు. ప్రతి ప్రాంతానికి కొన్ని ప్రత్యేకతలుంటాయి. ప్రజల గుణగుణాలకు కూడా ప్రాంతీయ స్వభావాలుంటాయి. సమూహాలుగా, శ్రేణులుగా, కులాలుగా, మతాలుగా స్పందించే తీరులో కూడా తేడాలు ఉండవచ్చును. అట్లాగే, తెలంగాణ చిత్రపటం కూడా భిన్నమైనది కావచ్చు. అందుకు కారణాలు, సహనం, ఔదార్యం, సమభావం వంటి విలువలు సహజాతాలుగా అలవడడం కాదు. అనేక చారిత్రక కారణాల వల్ల తెలంగాణ ప్రాంతంలో ప్రత్యేకమైన జనజీవనం నెలకొని ఉందంది. తెలంగాణ సాయుధ రైతాంగ పోరాటానికి కానీ, 70లలో, 80లలో ఉత్తర తెలంగాణలో ఉధృతంగా సాగిన మిలిటెంట్ విప్లవ ఉద్యమానికి కానీ ప్రేరణ, నేపథ్యం క్రూరమైన, తీవ్రమైన భూస్వామ్య పీడన. ఆ రోజుల్లో ప్రత్యేకమైన పరిగణనను చరిత్రకారులు పరిశీలకులు ఇవ్వకపోయి ఉండవచ్చును కానీ, ఆ భూస్వామ్య పీడనలో అగ్రకులతత్వం కూడా ఒక ప్రధానభాగం. ఆయా ఉద్యమాల కాలంనాటి సంఘటనలను విడివిడిగా పరిశీలిస్తే, భూస్వాముల పెత్తనంలోను, ప్రజల ప్రతిఘటనలోనూ సామాజిక సమీకరణలను గుర్తించవచ్చు. 70 ఏళ్లకు పైగా అనేక పోరాటాలలో మునిగితేలినందువల్ల తెలంగాణ ప్రజల చైతన్యంలో లౌకికవాద అంశ గణనీయంగా అధికంగా కనిపించవచ్చు. ఉమ్మడి ఆంధ్రప్రదేశ్‌లో తెలగాణ ఒక 'వెనుకబడిన' ప్రాంతంగా కొనసాగినదువల్ల, కొనసాగించినందువల్ల ఇక్కడి ప్రజాశ్రేణుల మధ్య ఒక్కోసారి పాలకశ్రేణులను కూడా కలుపుకుని ఒక సంఘీభావం ఐక్యత తరచు వ్యక్తమై ఉండవచ్చు. తెంగాణేతర ఆంధ్రప్రదేశ్‌లో కుల అత్యాచారాలకు తక్షణ కారణాలుగా కనిపించే కొన్ని అశాలు క్షేత్ర వాస్తవికత దృష్ట్యా తెలంగాణలో లేకపోవచ్చు. బహుశా, కుల ఉద్రిక్తతలు తీవ్రరూపం తీసుకోవడంలో కూడా తెలంగాణ 'వెనుకబడి' ఉండవచ్చు. తెలంగాణ ప్రాంతం కులతత్వానికి, దళితులు, బహుజనులపైనా అఘాయిత్యాలకు అతీతమైనది అనుకోవడం మాత్రం పొరపాటు.

అయితే, కులతత్వానికి సంబంధించిన అనేక దుర్మార్గ దశలను అధిగమించడానికి తెలంగాణకు మంచి అవకాశాలు వచ్చిన మాట నిజం. ఇటీవలి తెలంగాణ ఉద్యమం సకలజనుల ఉద్యమంగా వ్యక్తం కావడానికి చేసిన ప్రయత్నం కూడా అటువంటి అవకాశమే. అనేక ఉద్యమాలు, సంస్థలు, వ్యక్తులు తెలంగాణ సమాజాన్ని ప్రజాస్వామ్యీకరించడానికి ప్రయత్నిస్తూనే ఉన్నారు. మిలిటెంట్ పోరాటాలు కరుడుగట్టిన ప్రత్యక్ష భూస్వామ్యాన్ని బలహీనపరచగలిగాయి. బడా సాంప్రదాయ భూస్వాములు ఊర్లను విడిచిపెట్టి వెళ్లిపోయారు. తరాలు గడుస్తున్న కొద్దీ పెద్దకమతాలు చిన్నవిగా విభజితమయ్యాయి. పట్టణకేంద్రిత ఆర్థికరంగాలలోకి, చదువులలోకి బాటలు వేసుకున్న అగ్రకులాలన్నీ గ్రామాలను ఖాళీ చేస్తే, ఊళ్లల్లో భూసంబంధాలలో మార్పు రాకుండా ఉంటుందా ? భూయజమానుల సామాజిక శ్రేణి మారుతూ వచ్చింది. దొరలు కాకపోయినా, ఐదుపదెకరాలు లేకపోయినా కూడా గ్రామంలో కొత్త సామాజికాధికార శ్రేణిలో భాగమయ్యే అవకాశం కొత్త భూయజమానులకు వచ్చింది. అట్టడుగున ఉననవారితో వారికి ఘర్షణ మొదలైంది. నామాల బాలస్వామి హత్య అటువంటి ఘర్షణలో భాగంగానే జరిగింది. ఆ ఘటన జరిగిన దాదాపు ఈ రెండు దశాబ్దాల కాలంలో తెలంగాణ క్షేత్రవాస్తవికత ఇంకెంతగా మారి ఉంటుంది ? బయటి శత్రువును చూసి, ఉమ్మడి ప్రయోజనాలను కోరుకుని అనుమానంతోనే అయినా ఏర్పరచుకున్న ఐక్యత తెలంగాణ

అవతరణ తరువాత క్రమంగా సామర్థ్యాలను బట్టి సాధించుకునే పరుగు మొదలైతే, తెలంగాణ పల్లెలు ఏమి కానున్నాయి ? సమరశీల పోరాటాల వల్లనో, సంక్షేమ చర్యల వల్లనో, అస్తిత్వ వాద ఆత్మగౌరవ ఉద్యమాల వల్లనో తల ఎత్తుకుని నిలబడాలనుకుంటున్న దళితులు తమపై కొత్త కట్టుబాట్లను, వివక్షను, పీడనలను ప్రతిఘటించకుండా ఉంటారా ?

తెలంగాణ సమాజంలో సామాజిక సంబంధాలలో, గ్రామీణ వనరుల యాజమాన్యంలో వస్తున్న మార్పులను ప్రత్యేక రాష్ట్ర ఉద్యమసమయంలోనే పరిగణనలోకి తీసుకుని ఉంటే బాగుండేది. భౌగోళిక తెలంగాణ అనే ప్రాతిపదికను మాత్రమే గుర్తించి, తక్కిన అన్ని అశాలను పక్కనబెట్టడంతో, క్షేత్రస్థాయి సామాజిక అధ్యయనం తగినంత లేకుండానే ఉద్యమం కొనసాగింది. రాష్ట్రావతరణ అనంతరం ఉద్యమస్ఫూర్తికి కాలం చెల్లిందనే దృష్టితో, సంక్షేమం అభివృద్ధి అనే స్థూలనినాదాలతో పరిపాలన సాగిస్తున్నారు. ఓట్లు ఎక్కువ ఉండే సామాజిక వర్గాలను దృష్టిలో పెట్టుకుని సంక్షేమ రచన చేయడం ఒక వైపు, గ్రామాలలో కొత్తగా అదిపత్యంలోకి వచ్చిన సామాజిక శక్తులనే పునాదిగా చేసుకుని అధికారసోపానాల నిర్మాణం మరోవైపు జరుగుతోంది. ఉమ్మడి ఆంధ్రప్రదేశ్‌లో తెలంగాణేతర ప్రాంతాలలోని సామాజిక ప్రత్యర్థుల అధికారపోరాటమే ప్రధానంగా ఉండేది. తెలంగాణ కానీ, ఇతర 'వెనుకబడ్డ' ప్రాంతాలు కానీ కేవలం అనబంధ క్షేత్రాలుగా ఉండేవి. తెలంగాణ బిసిలు ఒక పార్టీకి మద్దతు ఇస్తూ వచ్చారు. రెడ్లు తమ సామాజిక వర్గానికే ప్రాధాన్యం ఇచ్చే పార్టీలో ద్వితీయ శ్రేణి స్థానానికి పరిమితమయ్యారు. దళితులు కూడా ఉపకులాల వారీగా రెండు ప్రధాన పార్టీలకు అనుబంధంగా ఉండేవారు. తెలంగాణేతర ప్రాంతాల ప్రాబల్య శక్తులకు అదనపు బలంగా పనికివచ్చిన తెలంగాణ ప్రజాశ్రేణులు ప్రత్యేక రాష్ట్రం వచ్చాక తాము సొంతంగా ఒక సమీకరణలోకి వెళ్లవలసిన పరిస్థితి వచ్చింది. ఒక రాజకీయార్థిక యూనిట్‌గా, ఒక సామాజిక సమగ్ర యూనిట్‌గా తెలంగాణను తీర్చిదిద్దడమే ప్రథమకర్తవ్యంగా రాష్ట్ర ప్రభుత్వం పనిచేస్తున్నది. ఈ క్రమం ఒక కొత్త రకం అధిపత్యకులాలు - బాధిత కులాల ద్వంద్వం అవతరణకు దారితీస్తున్నది. వనరులతో ప్రత్యక్షంగా నిమిత్తం లేని బిసి కులాలు కానీ, దళితకులాలు కానీ రిజర్వేషన్ల వల్లనో, సంకేతాత్మకమైన సంక్షేమ చర్యల వల్లనో సంతృప్తి చెంది వైమనస్యాలకు దూరంగా ఉండవచ్చును కానీ, గ్రామీణ ప్రాంతాలలో వనరులను వంచుకోవలసివ్చిన సందర్భంలో ఘర్షణలు అనివార్యం అవుతాయి. బడుగువర్గాలకు, దళితులకు మధ్యన, బడుగువర్గాలలో తమలో తమకు వైరుధ్యాలు పెరగడం రాష్ట్రస్థాయి ప్రాబల్య వర్గాలకు సానుకూలమైన పరిణామం కాబట్టి, ఆ సమస్యను పరిష్కరించడం, లేదా ఉపశమింపజేయడం పాలకుల ఎజెండాలో ఉండదు.

సాంప్రదాయ వృత్తికులాలు కానీ, చేతివృత్తుల వారు కానీ ఆయా వృత్తులలో కొనసాగడానికి దోహదం చేయడం, అవసరమైతే ఆధునికీకరించడం, ఆ వృత్తులు మిగలవు అనుకున్న సందర్భంలో వారిని ఇతర మనుగడల్లోకి మళ్లించడం విధాన నిర్ణేతలు ఎంతో ముందుచూపుతో చేయవలసిన పనులు. ఆ మార్గమే రాష్ట్రంలో అంతర్గతంగా సంపదను వృద్ధి చేస్తుంది. అట్లా వృద్ధి అయ్యే సంపద తనతో పాటు లౌకిక సంస్కారాన్న, ఆధునిక భావాలను వ్యాపింపజేస్తుంది. చదువు, వైద్యం, ఉపాధి అవకాశాల కల్పన అట్టడుగు ప్రజానీకం జీవితంలో మార్పులు తెచ్చే సాధనాలు. తెలంగాణ పల్లెల్లో ఏర్పడుతున్న కొత్త అదివత్యాలను పరిగణనలోకి తీసుకుని, సకలజనుల ప్రాతినిధ్యం అట్టడుగు స్థాయినుంచి పెంచడం ప్రభుత్వం చేయవలసిన పని. తెలంగాణ ఉద్యమం తీసుకువచ్చిన ఐక్యతాభావం, సమష్టి తత్వం కొనసాగించేందుకు అనుమతించి ఉంటే ప్రభుత్వం తాను చేస్తున్నాని చెబుతున్న అభివృద్ధి, సమాజంలో సామరస్య అభివృద్ధిగా అనువాదం అవుతుంది.

మంథని మధుకర్ హత్య కానీ, తెలంగాణలో ఈ మధ్యలో పెరిగిపోయిన పరువు హత్యలు కానీ విస్ఫోటనకు సిద్ధంగా ఉన్న తెలంగాణ గ్రామీణ వైరధ్యాలకు సూచికలు. స్థావరాలు మార్చుకుని, అహంకరిస్తున్న భూస్వామ్యానికి గుర్తులు. సమాజిక ఉద్యమాల ద్వారానే, అభివృద్ధిని కోరే వర్గాల పోరాటాలకు సామాజిక కోణాన్ని జోడించడం ద్వారానే, అభివృద్ధిని కోరే వర్గాల పోరాటాలకు సామాజిక కోణాన్ని జోడించడం ద్వారానే పరిష్కారం అయ్యే జాడ్యాలు ఇవి. ఇటువంటి అమానవీయమైన హత్యలను చెదురుమదురు ఘటనలుగా పరిగణిస్తే, పల్లెల కడుపులో ఉడుకుతున్న నిప్పువీ చూడడానికి నిరాకరించినట్టే.

కులరాక్షసికి తోడు, తెలంగాణపై వాలడానికి మతతత్వ రాకాసి డేగకన్నువేసి కాచుకుని ఉన్నది. సామాజికార్థక కారణాలతో విభజితమవుతున& సమాజాలు మతతత్వానికి లోనుకావడం సులువు. ఒకరి ప్రయోజనాలను ఒకరికి ప్రతికూలమైనవని చెప్ప ద్వేషాలను రెచ్చగొట్టడం, అందరి కంటె ముందు తామే స్వాములను తలకెక్కించుకోవడం వంటి చిట్కాలు ప్రమాదాలను నివారించలేవు. ప్రజలను విశ్వాసంలోకి తీసుకుని, ఒకరి మేలు మరొకరికి కీడు కాని రీతిలో సమాజాన్ని నడిపించడం వివేకవంతులు చేసే పని. లేకపోతే, ప్రాంతీయ చాణక్యులను దెబ్బతీయడం జాతీయ చాణక్యులకు ఎంత పని ?

-ఆంధ్రజ్యోతి పత్రిక నుండి

Foreign Policy of India

Prabhat Kumar Roy

Foreign Policy involves complex variables and considerations, both internal and external, reflecting a future roadmap for the country. With neighbors like China and Pakistan, the security dimension is the overarching theme in defining foreign policy. Therefore, the country that manages security conversations better in a bilateral equation often manages to keep the other stumped, second-guessing and forever on its toes.

The looming shadow and inviolable diktats of the Pakistani military from the Rawalpindi GHQ play a role in shaping the seemingly contradictory and inconsistent policy positions that emanate from civilian mouths in Islamabad. The dynamics were at play when the absence of the 'K' word in the Ufa joint declaration by the civilian government of Pakistan was red-flagged by Pakistani Generals as a gross over-reach.

Soon the Pakistani politicians were forced into issuing an embarrassing retraction. Similarly, the unmistakable handiwork of the Chinese PLA (People's Liberation Army) in maintaining wanton belligerence in the South China Sea, patrol-scuffles with India, cyber-attacks on US institutions, offensive missile deployment patterns, are all indicative of the role that the Chinese armed forces play in defining the country's foreign policy.

The ostensibly consensus-driven approach of the Chinese leadership has codified verticals that ensure the permanent presence and impact of PLA-driven security/military imperatives and considerations. The PLA sensitivities are represented by none less than the 'first among equals' in the Chinese Politburo Standing Committee, President Xi Jinping (Commander-in-Chief of PLA), besides the prominent presence of the PLA uniformed fraternity in the more functional Council of State Security (CoSS).

The transformation of China's traditional shyness in the international arena into a more assertive role in global affairs is reflecting the increasing visibility, brazenness and investments in PLA infrastructure, inputs and actions. On the contrary in India, the so-called 'solmization' of Defense sensitivities from the public domain dates back to independence, when India inherited a strong political culture and instinct ~ as opposed to the more militarized influence in neighboring countries. (General Ayub Khan took over Pakistan within 11 years of independence, General Ne Win in Myanmar within 14 years of independence, and even in the newly-formed Bangladesh, coups occurred within four years of its independence).

In Delhi, Jawaharlal Nehru was the quintessential internationalist, statesman and pacifist-politician never at ease with the relevance of the Indian Armed Forces, which he unfortunately ignored as a legacy institution of the British Empire.

The People's Republic of China's debut in 1949 was more hard-nosed and bloody with the multitude of civilian wars by the PLA, pre-and-post independence (e.g. Cultural Revolution). This ensured the requisite 'revolutionary' spirit and a security paranoia of the outside world, mandating hyper-sensitivity towards the PLA and its inputs, in all subsequent foreign policies.

The Indo-China war of 1962 was the first visible casualty of the inadequacy of the security appreciation and preparedness in the Indian narrative. Prime Minister Nehru had propounded the terribly flawed 'forward posture' policy based on inputs from the Intelligence Bureau and was soon forced into sending long telegrams imploring John F Kennedy's help by describing the situation as, 'really desperate'! Post-1962, some short-term lessons were learnt. Lal Bahadur Shastri's more martial invocation (Jai Jawan, Jai Kisan) and the sense of redemption in the 1965 Indo-Pak war were cut short by his own life. Indira Gandhi was shrewd enough to give the irrepressible General Sam Maneckshaw the time, means and the wherewithal to ensure a 'Bangladesh', in 1971.

However, the structural construct of the Indian governance system ~ a participative form of democracy ~ has ensured societal issues like race, region, religion and language dominate the ruling minds as opposed to foreign affairs. This was left exclusively to be dealt with by civilian career bureaucrats who had no military perspective. Even though India is emerging economically and is poised to play a more pro-active role in the global highway, the vacillating and knee-jerk approach toward the appreciation, investment and 'inclusion' of the voice of its armed forces has ensured a sub-optimal role for the forces in official policy-making for dealing with its irascible neighbors.

The sword-arm of the Indian executive is solely used for its kinetic efficacy and professionalism, when most other administrative arms and functionaries throw in the towel. However, the dual shame of the crying need for a desperate material overhaul of weaponry and wares, along with the parallel ignominy of repeatedly earning the tag of "the world's largest arms importer" is reflective of the crests and troughs of security culture... despite the frequent Kargils, 26/11s, Pathankots, Pampors, etc. In Pakistan, meanwhile, the supposedly civilian-suited NSA (retired Lt Gen), ensures that the phenomenon of 'Chinese whispers' does not befall critical inputs sent from the Rawalpindi GHQ to the politicians in Islamabad.

రైతు కోసం మరో గాంధీ రావాలి !

-ప్రొ. కూరపాటి వెంకటనారాయణ

చంపారన్‌లో పోరాటం చేసి రైతుల సమస్యలకి పరిష్కారం చూపిన బాపు వారసులకై నేడు రైతు సోదరులు ఎదురు చూస్తున్నారు. గాంధీ సభ్యత్వంతో ఏర్పడిన కమిటీ ఇచ్చిన సలహాలను ఆమోదించి రైతుల కోసం చట్టం చేసిన ఆనాటి పరాయి పాలకులు అభినందనీయులే. ఇప్పటికైనా మన పాలకులు గాంధీ స్ఫూర్తితో రైతు సమస్యలను పరిష్కరిస్తారని భావిద్దాం.

జాతిపిత మహాత్మగాంధీ 1917లో బీహార్ లోని చంపారన్ ప్రాంతంలో, బ్రిటిష్ సెటిలర్ భూస్వాముల దోపిజీని భరించలేక ఆనాటి పేద రైతులు ఆందోళన చేస్తున్న నేపథ్యంలో, హింసాయుత సంఘటనలు జరుగుతున్న సందర్భంలో, ఏప్రిల్ 10 నాడు ఆ ప్రాంతాన్ని సందర్శించి రైతుల తరపున పోరాటం చేశారు. ఇది జరిగి వందేళ్ళు పూర్తయింది. బ్రిటిష్ కంపెనీలకు నీలి రంగు ఉత్పత్తి చేసే ఇండిగో పంటను పండించాలని చంపారన్ రైతులపై బ్రిటిష్ వ్యాపారస్థులు, భూస్వాములు ఒత్తిడి చేసి కఠినమైన శిక్షలు విధిస్తూ భౌతిక దాడులకు పాల్పడుతున్న సందర్భంలో సాధనిక రైతు రాజ్‌కుమార్ శుక్లా ఆహ్వానం మేరకు గాంధీజీ తనతో పాటు డా॥ రాజేంద్రప్రసాద్, బ్రిడ్జ్ కిషోర్, జె.బి. కృపలానిలను వెంట బెట్టుకుని, 10 ఏప్రిల్ 1917నాడు చంపారన్ చేరుకున్నారు.

రైతులు ఎదుర్కొంటున్న సమస్యలపై దర్యాప్తు చేసి బ్రిటిష్ వైస్రాయ్‌కి నివేదిక ఇవ్వడానికి చంపారన్ రావడం జరిగిందని గాంధీజీ గారు అక్కడి మెజిస్ట్రేటును అనుమతి కోరడం జరిగింది. మెజిస్ట్రేటు అనుమతి ఇవ్వడానికి బదులుగా గాంధీజీకి వెంటనే చంపారన్ నుండి ఆ రోజు మొట్టమొదటి రైలు ద్వారా తిరిగి వెళ్ళాలనీ, లేనిపక్షంలో తగిన చర్యలు ఎదుర్కోవలసి ఉంటుందని చెప్పారు. అప్పుడు గాంధీజీ మొట్టమొదటిసారి అహింస పద్ధతి ద్వారా మెజిస్ట్రేటు ఉత్తర్వులను నిరాకరించినారు. ఆయన అరెస్టు వారెంటును ఎదుర్కోవలసి వచ్చింది. పెద్ద ఎత్తున ఆందోళన చేపట్టడంతో మెజిస్ట్రేట్ తన ఉత్తర్వులను వాపసు తీసుకోవడమే గాక రైతులు ఎదుర్కొంటున్న సమస్యలపై విచారణ చేయడానికి అనుమతినిచ్చారు.

తరువాత గాంధీ గారు ప్రభుత్వమే ఏరాపటు చేసిన కమిటీలో సభ్యునిగా ఉండి రైతులకు జరుగుతున్న అన్యాయాలనూ, వారిపై అమలు పరుస్తున్న దోపిడీనీ సవివరంగా రిపోర్టులో పొందుపరిచి వైస్రాయ్‌కి అందజేశారు. రైతుల సమస్యలను పరిష్కరించడానికి అవసరమైన చర్యలన్నిటినీ అంగీకరించి, చటాన్ని ఆమోదించి, రైతులను ఆదుకోవడానికి అనేక చర్యలు తీసుకున్నది ఆనాటి ప్రభుత్వం.

1929-30 సంవత్సరంలో కూడా ఆనాటి రాయల్ కమీషన్ రైతుల సమస్యలపై సమగ్ర నివేదిక ఇచ్చింది. స్వాతంత్ర్యం లభినిచి 70 సంవత్సరాలు పూర్తయినా రైతుల సమస్యలు ఈ ఆధునిక ఆర్థిక వ్యవస్థలో మరింత జఠిలం అయిపోయినాయి. ఈ నాటి ప్రభుత్వాలకు స్పష్టమైన వ్యవసాయిక విధానం లేకపోవడం రైతుల పాలిట శాపంగా మారిపోయింది. ఫ్రీ మార్కెట్ అనేది ఒక అభూత కల్పన మాత్రమే అయ్యింది. దేశ ఆర్థిక వ్యవస్థ 8% నుంచి 9% వరకూ వృద్ధి జరుగుతుననప్పటికీ, వ్యవసాయ ఉత్పత్తులు 350 ఎం.టి.లకి చేరినప్పటికీ, బ్రిటిష్ కాలంలో ఆనాటి ఐసిఎస్ అధికారి ఎం.ఎల్. డార్లింగ్ మన రైతుల గురించి రాసిన పుస్తకంలో "Indian peasant is born in debt, lives in debt and dies in debt" అను వ్యాఖ్య ఈనాటికి కూడా వర్తిస్తున్నది. గత రెండున్నర దశాబ్దాల నుండి 3 లక్షలకు పైగా రైతులు ఆర్థిక సంక్షోభాన్ని తట్టుకోలేక ఆత్మహత్యలు చేసుకున్న విషయం అందరికీ తెలిసిందే. దేశంలో ముఖ్యంగా తెలంగాణ విదర్భ ప్రాంతాలు రైతుల ఆత్మహత్యలకు కేంద్రంగా మిగిలినాయి.

ఈ ప్రాంతాలలో కరువులు వచ్చినా, వర్షాలు కురిసినా రైతుల దుర్భర పరిస్థితులలో ఎలాంటి మార్పూ కనిపించడం లేదు. పంటల విధానంలో శాస్త్రీయ దృక్పథం లోపిస్తున్నది. గిట్టుబాటు ధరలు ఏ పంటకీ లభించడం లేదు. మార్కెట్‌లో రైతును దోచుకునే శక్తులు నిరాటంకంగా తమ పాత్రను పోషిస్తున్నాయి. రైతులకి మేలు చేస్తానన్న ప్రభుత్వాల ప్రకటనలు ఆచరణకి నోచుకోవడం లేదు.

రైతులు పండించిన ఏ పంటకూ గిట్టుబాటు ధర లభించడం లేదు. ఉత్పత్తి వ్యయాలు అనేక రెట్లు పెరిగిపోయినాయి చాలామంది రైతులు, కౌలుదారులు బ్యాంకు రుణాలు పొందలేకపోతున్నారు, వడ్డీ వ్యాపారస్థుల దగ్గర అప్పు తీసుకుంటే తడిసి మోపెడవుతుంది. ఈ సంవత్సరం వరి ధాన్యానికి సరియైన ధర లేదు, మక్కలది అంతే, కందులు 10 వేల రూపాయల నుండి 4 వేల రూపాయలకు, పెసర్లు 6 వేల రూపాయల నుండి 4 వేల రూపాయలకు, మిర్చి 12 వేల రూపాయల నుండి 3 వేల రూపాయలకు తగ్గిపోయాయి. ఒక క్వింటాళ్ళు మిర్చి ఏరడానికి 3 వేల రూపాయల కూలీ ఖర్చు అవుతుంది. ఆ క్వింటాని అమ్మితే రైతుకి 3 వేల రూపాయల ధర వస్తుంది. వచ్చిన ఆదాయం కూలీల ఖర్చుకు సరిపోతుంది. ప్రతి ఎకరాకు కౌలు 10 వేల నుంచి 25 వేల రూపాయల వరకు భూమి యజమానులకు చెల్లించవలసి వస్తుంది. లక్షలాది మంది రైతులు వర్షాలు కురిసి కాల మంచిగా అయినప్పటికీ ధరలు రాక నష్టపోతున్నారు. వర్షాలు లేని

సంవత్సరంలో పంటలు ఎండిపోయి నష్ట పోతున్నారు. కాలం అయినా గాని, కరువు అయినా గాని రైతుకు మిగిలేది అప్పులే. ఆ సమస్యను పరిష్కరించడానికి ప్రభుత్వాలు గతంలో స్పందించలేదు, ఇప్పుడు స్పందించడం లేదు. ప్రతి సంవత్సరం వేలాది మంది రైతులు పట్టణాలకు వలస వెళ్ళి దినసరి కూలీలుగా మారుతున్నారు. వ్యవసాయ భూమి లేని కూలీలు కౌలుకు తీసుకొని నష్టాలపాలయి బ్రతుకునీడ్చలేక, అవమానం భరించలేక, ఆత్మగౌరవం రక్షించుకోలేక చివరికి ఆత్మహత్యలకు పాల్పడుతున్నారు.

ఈ రైతుల సమస్యలు రాజకీయ పక్షాలకు ప్రచార కార్యక్రమంగానే మిగిలిపోయాయి. పాలకపక్షం అయినా, ప్రతిపక్షం అయినా రైతుల సమస్యలకి పరిష్కారం చూపడానికి చిత్తశుద్ధితో ఆలోచించడం లేదు. ఆర్థిక రంగానికి విధానం చూపడానకి చిత్తశుద్ధితో ఆలోచించడం లేదు. ఆర్థిక రంగానికి విధానం ఉంటున్నది, ఉద్యోగులకు ప్రభుత్వాలు బాసటగా నిలుస్తున్నాయి, వ్యవస్థీకృత రంగానికీ, భారీ పారిశ్రామిక రంగానికీ, బహుళజాతి కంపెనీలకూ ప్రభుత్వాలు ఎర్ర తివాచీలు పరుస్తున్నాయి. కాని రైతులు మాత్రం దిక్కు లేని వర్గంగానే తీగిలిపోతున్నారు.

విత్తనాలు, పురుగు మందుల వ్యాపారస్థులు నకిలీలతో రైతులను నిలువునా ముంచుతున్నారు. అధికారులు చోద్యం చూస్తున్నారు. రెవెన్యూ అధికారులు రైతులను నల్లుల్లా పీల్చుకు తింటున్నారు. బ్యాంకు అధికారులు, ఏజెంట్లు కలిసి రైతులకిచ్చే ఋణాలలో కోత పెడుతున్నారు. అడ్తిదారులు, కమీషన్ ఏజెంట్లు, మార్కెట్ అధికారులు, అంతిమంగా ట్రేడర్స్... "తిలా పాపం తల పిడికెడు" అన్నట్లుగా రైతులను ముంచని వారు లేరని చెప్పడంలో అతిశయోక్తి లేదు. రైతులని కాపాడడానికి చిత్తశుద్ధితో పనిచేసే వ్యవస్థ కరువు అయిపోయింది. ప్రభుత్వాలు ఓటు బ్యాంకు చూసుకుంటూ సంక్షేమ పథకాలతో కాలం వెళ్ళబుచ్చుతున్నాయి. ప్రతిపక్షాలు వంతుకు దాసరి కలాడిచ్చినట్లుగా వ్యవహరిస్తున్నాయి. రైతు సంఘాలు విడిపోయి ఉనికి పోరాటాలు చేస్తున్నాయి. రైతుల సమస్యలను పట్టించుకునే మహానుభావులు కరువు అయినారు. మహేంద్ర తికయత్, శరత్ జోషి, సుందర్‌లాల్ బహుగుణ, చౌదరీ చరణ్ సింగ్, పుచ్చల్లపల్లి సుందరయ్య, భీంరెడ్డి నర్సింహా రెడ్డి, రావినారాయణరెడ్డి, ఎన్.జి.రంగా లాంటి రైతుబాంధవులు కనుమరుగు అయినారు. మేధావులు వేతకై వెతుకుతున్నారు. రైతులు, రైతు కూలీలు తమ సమస్యలను తీసుకొని పోరాటాలు చేసే మహోన్నత వ్యక్తి కోసమై ఎదురుచూస్తున్నారు.

చంపారన్‌లో పోరాటం చేసి రైతుల సమస్యలకి పరిష్కారం చూపిన బాపు లాంటివారి కొరకై, చంపారన్ గ్రామాల్లో అణచివేత విధానాలను అమలు చేస్తున్న బ్రిటిష్ అధికారులపై పోరాడిన కస్తూర్బా వారసులకై రైతు సోదరులు ఎదురు చూస్తున్నారు. గాంధీ సభ్యత్వంలో ఏర్పడిన కమిటీ ఇచ్చిన తీర్మానాలను, సలహాలను, ఆమోదించి రైతుల కోసం చట్టం చేసిన ఆనాటి పరాయి పాలకులు అభినందనీయులే అని భావించాలి. ఇప్పటికైనా మన పాలకులు గాంధీ గారి స్ఫూర్తితో రైతు సమస్యలను పరిష్కరిస్తారని భావిద్దాం.

-ఆంధ్రజ్యోతి పత్రిక నుండి

गुमनाम पिथौरागढ़ी

जीने का हिसाब लाया है
हाथ में वो नकाब लाया है

अब तो साइन करो भी नेताजी
ठेके वाला कबाब लाया है

मौलवी पण्डे सब फसादी हैं
इक नमाजी गुलाब लाया है

बेच के बेटी की अस्मत को भी
देख घर में शराब लाया है

देखो झोली फकीर की यारों
जमुना गंगा चिनाब लाया है

चौन अमन लूटने की खातिर ही
दुष्ट पापी कसाब लाया है

छोडो गुमनाम तीरगी को तुम
ये उजाला जवाब लाया है

Our foreign policy is chiseled by the PMO, NSA and the External Affairs Ministry. However, despite the overtly security-related dimensions inherent in subjects like cross-border firing on LOC, Baluchistan, Kashmir, ISI-funded terror, CPEC, border violations by PLA, etc., the substantial and structural integration of the armed forces perspective is both indirect and woefully inadequate. The common refrain of babus and the politicos running the security imperatives comes forth in the sometimes questionable handling of terror attacks, as in Pathankot.

Even within the country, where the visible footprint of the armed forces playing a decisive role in tackling insurgencies, civilian riots, natural disasters, etc., is all-pervasive, the opinion and perspective of the forces are rarely sought or entertained. On the more strategic and all-encompassing foreign policy affairs (even though deeply security-centric), the say is even more negligible.

India is said to lack an overall strategic culture, but the armed forces have persevered with the development of their own working doctrines, roadmaps and philosophies. Yet, the abundance of this crucial perspective is underutilized and stifled. Increasingly, foreign policies across the world are interweaving, promoting and couching their respective military/security angularities in their foreign policies.

China's geopolitical forays like CPEC or 'One-Belt-One-Road' are as much about prudent economics as they are about military/security dimensions. India needs to formally and structurally incorporate the 'view from the post', not exclusively, but in conjunction with other considerations like trade, commerce, culture, etc. We need not swerve to extreme positions of exclusive militarized perspectives as the case is to 'include' the military perspective and not to 'preclude' any other existing perspective to make our policies more holistic, robust and dynamic.

సర్వధర్మ భేదభావము

ధర్మ విశ్వస్య జగతఃప్రతిష్ఠ:

హిందీ మూలం :
శ్రీముని వశిష్ఠ ఆర్య వానప్రస్థి

తెలుగు స్వేచ్ఛానువాదం :
దేవరకొండ దత్తాత్రేయ

ధర్మము ఈశ్వరీయ మగును. అది ఒకటిగానే ఉండును. ధర్మము శాశ్వత సత్యము. అది మార్పు చెందదు. కావున ధర్మము విజ్ఞానము కన్న శ్రేష్ఠమైనది.

నీటిలో పడిన కర్ర తేలియాడుట కర్రధర్మము. నీటిలోమునిగి పోవుట రాయి ధర్మము. అయస్కాంతముచే ఆకర్షింపబడుట ఇనుము ధర్మము. పంచమ స్వరముతో గానము చేయుట కోయల పక్షి ధర్మము. కర్ణ కఠోరముగ అరచుట కాకిధర్మము. గడ్డి తిని పాలు ఇచ్చుట ఆవు ధర్మము. మాంసము తినుట పులి ధర్మము స్త్రీలవట్ల ఆకర్షణ కలిగియుండుట పురుషుల ధర్మము. సంతానము వట్ల ఆకర్షణ కలిగియుండుట స్త్రీల ధర్మము. వీనికి ఈ ధర్మములను ఏ మహాత్ముడో, యోగియో, గురువో లేక ఏ అవతార పురుషుడో నేర్పించినాడా? అని ప్రశ్నించినపుడు, వీరెవరూ నేర్పినవి కావని సమాధానము లభించును. వివిధ పదార్థములు సహజమైన వివిధ ధర్మములను కలిగియుండును. ఇవి ఈశ్వరీయములు. మనుష్యులు తమ తమ మత సాంప్రదాయములను స్థాపించుకొని పోషించుకొందురు. ధర్మము వేరు, మతము వేరని గ్రహించవలెను.

ఈ విధముగ ఆలోచించినపుడు సర్వధర్మము అనే పదమునకు విశేషత ఏమి కనబడుట లేదు. కొందరు రాజకీయనాయకులు తమ తమ స్వార్థ ప్రయోజనముల కొరకు కొన్ని మత సంస్థలను సంతోషింప జేయుటకు ఈ పద ప్రయోగము విశేషముగా చేయు చున్నారు.

ఇచ్చట 'సర్వధర్మము యొక్క అర్థము : మాతృధర్మము, సంతాన ధర్మము, భాతృధర్మము, సోదరీ ధర్మము, స్త్రీ ధర్మము, పొరుగువారి ధర్మము, అతిథి, ధర్మము, భూత దయాధర్మము, గృహస్థ ధర్మము మొదలగు ధర్మములను సరియైన రూపములో పాలించినపుడు అవి ఉత్తమమైన సర్వధర్మములగును. కాని నేటికాలమున ఇవి బలహీనపడి పోయినవి. ఈ విధముగ సర్వధర్మ సమభావముపోయి సర్వధర్మభేద భావము సిద్ధమగుచున్నది.

ఆర్యసమాజము కేవలము ఒక ఈశ్వరీయ ధర్మము అనగా వేద ధర్మమును మాత్రమే అంగీకరించి "కృణ్వంతో విశ్వమార్యం" అను నినాదంతో తమ సిద్ధాంతములను ప్రచార ప్రసారములను చేయు చున్నది. అగ్ని యొక్క ధర్మము కాల్చుట, మరియు వేడిని ప్రకాశమును కలిగించుట, జలము యొక్క ధర్మము పై నుండి క్రిందికి ప్రవహించుట. ఈవిధమైన ఈశ్వరీయ ధర్మములను పాలించుట ప్రతి మనుష్యుని కర్తవ్యము. వేదములో మనుష్య ధర్మమును మానవతా ధర్మమని చెప్పబడినది. "మనుర్భవ జనయా దైవ్యం జనమ్". హె మానవా! నీవు మనుష్యుడవగుము. అనగా నీవు పుట్టుటతో మనుష్యుడవు కావు. నీవు మనుష్యుడవుగా తయారు చేయ బడుచున్నావు. పెద్దలు నిన్ను సంస్కరించి మనుష్యునిగా తయారు చేయుచున్నారు. ఈకార్యము తల్లి - తండ్రి - గురువు పరివారము మరియు సమాజము ద్వారా జరుగుచున్నది. వివిధ మత సాంప్రదాయ మనుష్యులను కలిపి ఉంచుట చాలా కష్టము. ఇచ్చట ఒక కథ ఉదహరింపబడుచున్నది. చదివి ఆనందించండి.

సర్వధర్మ సమభావన ఛత్రఛాయ లో ఒక పండితుడు, ఒక మౌళ్వసాహెబ్, మరియు ఒక క్రైస్తవ పాదిరి గారు మిత్రులైరి. ముగ్గురు కలిసి సంతోషము గా పాయసము తయారు చేసుకొనిరి. పాయసములో వేయువలసిన ఉత్త మోత్తమ పదార్థములన్ని వేసి రుచి కరముగా సిద్ధము చేసికొనిరి. దీనిని మొదట ఎవరు ఆరగించవలెనో ఆలోచించి ఒక నిర్ణయము చేసికొనిరి. నాటి రాత్రి ఎవరికైతే అత్యుత్తమ స్వప్నము కలుగునో, వారు మొదట పాయసమును ఆరగించవలెనని నిర్ణయించుకొనిరి. ఆరోజు రాత్రి అందరు హాయిగా నిద్రలోనికి జారు కొనిరి. మూడు గంటల తర్వాత వారు లేచి తమ తమ స్వప్నముల గురించి వివరించుకొనిరి. మొదట పాదరీగారు తన స్వప్నము గురించి వివరించెను. "నేను సరాసరి నాల్గవ ఆకాశమున గల స్వర్గలోకమునకు చేరితిని. అచ్చట దేవుడు తన కుమారుని దర్శనము చేయించెను. తర్వాత నేను తిరిగి వచ్చితిని" అనెను. తర్వాత మౌళ్వీ సాహెబ్‌గారు "నేను సరాసరి ఏడవ ఆకాముస గల స్వర్గలోకమునకు చేరితిని అచ్చట అల్లామియా దర్శనము చేసికొని మహమ్మద్ సాహెబ్‌తో మాట్లాడితిని. ఆ అల్లామియా స్వర్గమును ఏమని వరించగలను. అచ్చట తేనె, శరాబీనదులు ప్రవహించు చున్నవి అనెను. తర్వాత పండితుల వారీవిధముగా సెలవిచ్చిరి. "నేనిట్లాపడు కున్నానో లేదో నా యెదుటకు వీరహను మాన్ గధతీసికొని వచ్చి, ఈ పాత్రలో ఏమి ఉన్నదని గద్దించి అడిగెను నేను ఇందులో పాయసమున్నదని దాచ కుండా చెప్పితిని. పాయసము ఉంటే వెంటనే తినుమనెను. నేను మాకొక నిర్ణయమున్నదని చెప్పితిని. అప్పుడు హనుమంతుడు గదా దండమును లేపి తినెదవా! లేదా! గధా ప్రహారము చేయనా అనెను. అప్పుడు పాదరి మరియు మౌళ్వీగారు అరెరె డర్ పూక్ పండిత్ మమ్ములను పిలువవద్దా" అనిరి. అప్పుడు పండితులవారు ఇట్లనిరి "నేను ఏమి చేసేది? ఎట్లా పిలిచేది ఒకరైతె నాల్గవ ఆకాశమందుంటిరి, మరొకరు ఏడవ ఆకాశమందుంటిరి". అనెను.

ఇప్పుడు చెప్పండి! ఏవిధముగా సర్వధర్మసమభావన సాధ్యమౌ! ఆలోచనలో, ఆచరణలో, సంస్కృతిలో భిన్నత్వము ఉన్నది గదా! గుర్తుంచు కొనండి! సర్వ ధర్మ సమభావన అనే మాటలు మోసపూరిత మైనవి.

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-04-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

ప్రగతికోసం ప్రజలిచ్చిన తీర్పు

- యుపి ఎన్నికలపై కేంద్ర మంత్రి దత్తాత్రేయ
- వామపక్షాలే దేశానికి ప్రమాదకరమని వ్యాఖ్య
- చైతన్యవంతమైన హిందూ సమాజం
- ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి

ఆంధ్రభూమి బ్యూరో

హైదరాబాద్, ఏప్రిల్ 9: 'దేశ ప్రగతి, మార్పు కోసం ఇది ప్రజలు ఇచ్చిన తీర్పు.' అని బిజెపి జాతీయ నాయకుడు, కేంద్ర కార్మిక, ఉపాధి కల్పనా శాఖ మంత్రి బండారు దత్తాత్రేయ ఉత్తర్‌ప్రదేశ్ ఎన్నికల ఫలితాలపై వ్యాఖ్యానించారు. ముస్లింలతో సమస్య లేదు కానీ వామపక్షాలే దేశానికి అత్యంత ప్రమాదకరమని దత్తాత్రేయ దుయ్యబట్టారు. 'పశువధ శాలలు-యుపి సిఎం ఆదిత్యనాథ్ యోగి చర్యలు..' అనే అంశంపై ఆదివారం 'ఆర్య యువ వాహిని' ఏర్పాటు చేసిన సమావేశంలో కేంద్ర మంత్రి దత్తాత్రేయ ప్రసంగిస్తూ వామపక్షాలపై, ఇతర ప్రతిపక్షాలపై చురకలు వేశారు. తాము ఏది చేసినా ముస్లింలకు వ్యతిరేకం అనే ప్రచారాన్ని కొందరు పనికట్టుకుని చేస్తున్నారని విమర్శించారు. హిందూ-ముస్లింల మధ్య నాటిన విష బీజాన్ని తొలగించేందుకు ప్రధాని నరేంద్ర మోదీ కృషి చేస్తున్నారని ఆయన చెప్పారు. పశువధ శాలలకు వ్యతిరేకంగా 1880 సంవత్సరం నుంచే ఆందోళనలు జరుగుతున్నాయని ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి చెప్పడాన్ని ఆయన ప్రస్తావిస్తూ యుపి సిఎం పశువధ శాలలను మూసి వేయిస్తుంటే ఘోరపరాజయం చవి చూసిన విపక్షాలు విమర్శించడం విడ్డూరంగా ఉందని అన్నారు. ఎన్నికల్లో ఇచ్చిన హామీనే సిఎం యోగి అమలు చేస్తున్నారని ఆయన చెప్పారు. పశువధ శాలలపై పాఠశాల స్థాయి నుంచే చైతన్యం తేవాల్సి ఉందని, గోశాలలు ఇంకా పెంచాల్సి ఉందని అన్నారు. సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి చేసే రచనలతో మిగతా వారు పడుకుంటారని, ఇక లేవరని కేంద్ర మంత్రి దత్తాత్రేయ అనడంతో సభికులు పెద్దగా నవ్వారు.

హిందూ సమాజంలో చైతన్యం ఆగదు: ఎంవిఆర్ శాస్త్రి

ఆంధ్రభూమి సంపాదకులు ఎంవిఆర్ శాస్త్రి ప్రసంగిస్తూ హిందూ సమాజంలో చైతన్యం వచ్చిందని, ఎవరు ఆపినా ఆగదని అనడంతో సభికులు కరతాళధ్వనులు చేశారు. చరిత్ర కొత్తగా ఆరంభమైందని, ఎవరు అడ్డుపడినా భవిష్యత్తు యోగిదే అనడంతో సభికులు

'పశువధ శాలలు-యుపి సిఎం ఆదిత్యనాథ్ యోగి చర్యలు..' అనే అంశంపై ఆదివారం 'ఆర్య యువ వాహిని' ఏర్పాటు చేసిన సమావేశంలో మాట్లాడుతున్న ఆంధ్రభూమి ఎడిటర్ ఎంవిఆర్ శాస్త్రి. చిత్రంలో దత్తాత్రేయ, రాధేశ్యాంజీ, విఠల్‌రావు తదితరులు ఉన్నారు.

హర్షధ్వానాలు చేశారు. ప్రపంచంలో ఎక్కడా లేని విధంగా మన దగ్గరే జరుగుతుంటాయని అన్నారు. ఉత్తర్‌ప్రదేశ్ ఎన్నికల్లో ప్రజలు నాలుగింట మూడవ వంతు సీట్లలో బిజెపిని గెలిపించారని ఆయన తెలిపారు. మొత్తం మీడియా, మేధావులు, టీవీ రాతకళ్ళు, దేశాన్ని ఉద్ధరించడానికి పుట్టిన వారు బిజెపి గెలిస్తే దేశానికి ప్రమాదకరమని, హిందూత్వం దేశాన్ని సర్వనాశనం చేస్తుందని విష ప్రచారం చేసినా, ప్రజలు బిజెపిని 325 సీట్లలో గెలిపించారని అన్నారు. యుపి సిఎం కాషాయం కట్టాడని పనికి మాలిన అంశాన్ని వివాదాస్పదం చేయడం ప్రపంచంలో ఎక్కడా లేదని ఆయన విమర్శించారు. అధికారంలోకి వస్తే అక్రమ గోవధ శాలలను మూసి వేయిస్తామన్న హామీ మేరకు చర్యలు చేపడితే తప్పుపట్టడం సిగ్గుచేటని అన్నారు.

సుప్రీం కోర్టు కూడా..

అక్రమ గోవధ శాలలను ఉన్నట్టుండి రద్దు చేస్తే ఎలా? వారికి ప్రత్యామ్నాయం ఏమిటి? అని సుప్రీం కోర్టు కూడా ప్రభుత్వాన్ని వివరణ కోరడం విస్మయం కలిగించిందని ఎంవిఆర్ శాస్త్రి అన్నారు. లక్నోలో గోమాంసం వండించే రెస్టారెంట్ మూతపడిందని, జూ పార్కులో పులికి మాంసం వేసేందుకు దొరకడం లేదని కొందరు వ్యాఖ్యానించారని ఆయన తెలిపారు. గోవధను నిషేధించడం వల్ల ముస్లింల మనోభావాలు దెబ్బతింటాయని అంటున్నారని ఆయన చెప్పారు. ముస్లింల కంటే హిందువుల్లో చెడ పుట్టిన వారు, విపరీతమైన భ్రష్ట సంస్కృతి వారు ఎక్కువ తింటున్నారని ఆయన విమర్శించారు. ఉత్తర్‌ప్రదేశ్‌లో 18 శాతం మంది ముస్లింలు నిర్ణయాత్మక శక్తిగా ఉన్నారని, వారు బిజెపికి వ్యతిరేకంగా ఓటు వేసి ఉంటే 100 నియోజకవర్గాల్లో ఆ పార్టీ ఓడిపోయేదని అన్నారు. కానీ అక్కడి ముస్లింలు బిజెపిని నెత్తిన పెట్టుకున్నారని ఆయన తెలిపారు.

మార్పు కోరుతున్నారు..

ముస్లిం మహిళలు మార్పు కోరుతున్నారని, అయినా తలాఖ్‌లపై ఇంకా ఆలోచిస్తున్నామని అన్నా రు. దీనిపై మేధావుల చర్చ జరగాలని ఆయన సూచించారు. 'యుపి సిఎం యోగి అది కాదు, భవిష్యత్తు యోగిదే..' అనడంతో సభికులు హర్షధ్వానాలు చేశారు. ఎవరు అడ్డుపడినా, చరిత్ర కొత్తగా ఆరంభమైందని అన్నారు. గోవధ శాలల అంశం హిందూ, ముస్లింలకు సంబంధించింది కాదని, దీనిని ఆంగ్లేయు లు ఈ రెండు వర్గాల మధ్య పెట్టిన చిచ్చు అని ఎంవిఆర్ శాస్త్రి తెలిపారు. 1880వ సంవత్సరంలోనే దయానంద సరస్వతి గోవధ శాలలకు వ్యతిరేకంగా ఉద్యమించారని, ఇందులో హిందువులు-ముస్లింలూ పాల్గొన్నారని ఆయన చెప్పారు. ఇప్పుడు కూడా ఆర్యసమాజ్ ఒక్కటే అడ్డుకోగలదని ఎంవిఆర్ శాస్త్రి తెలిపారు.

ఆవు సంస్కృతికి ప్రతీక: రాధేశ్యాం శుక్లా

వార్త (హిందీ) దినపత్రిక సంపాదకులు రాధేశ్యాం శుక్లాజీ ప్రసంగిస్తూ ఆవు హిందూ సంస్కృతికి ప్రతీక అని చెప్పారు. ఆర్యసమాజ్, ఆర్ఎస్ఎస్ ఒక తాటిపైకి వచ్చి సంఘటితంగా పని చేయాలని ఆయన ఆకాంక్షించారు. ఆర్య ప్రతినిధి సభ (ఏపి-తెలంగాణ) ప్రధాన కార్యదర్శి విఠల్ రావు ఆర్య సభకు అధ్యక్షత వహించారు. ఇంకా ఈ సమావేశంలో ఆర్యప్రతినిధి సభ అధ్యక్షుడు లక్ష్మణ్ సింగ్ ఆర్య, ఆల్‌కబీర్ ప్రతినిధి జస్వంత్‌జీ, వివేక్ మోడీ, మహేశ్ అగర్వాల్, జస్వంత్ పటేల్ ప్రభృతులు ప్రసంగించారు. ఆర్య యువ వాహిని నాయకుడు సుధాకర్ వందన సమర్పణ చేశారు.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor Vithal Rao Arya ● acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.